गिरनार गुण गुंजन

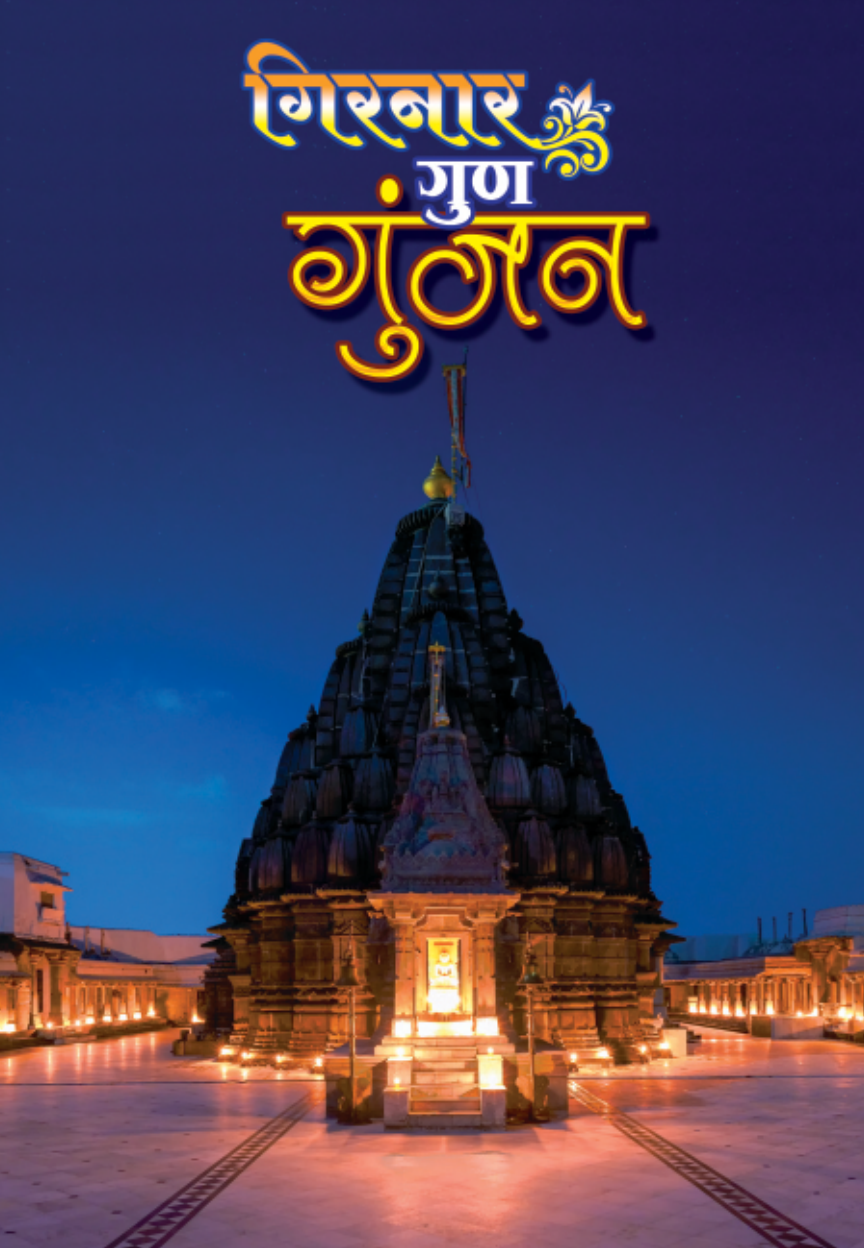

गिरनार के पाँच मुख्य चैत्यवंदन

१. तलेटी में आदिनाथ जिनालय का प्रथम चैत्यवंदन

२. जयतलेटी का दुसरा चैत्यवंदन

४. मुख्य जिनालय के पीछे आदिनाथ भगवान का चौथा चैत्यवंदन

३. मूलनायक नेमिनाथ दादा का तीसरा चैत्यवंदन

५. अमीझरा पार्श्वनाथ भगवान का पाँचवा चैत्यवंदन

सहसावन के रास्ते से उपर चढ़ते समय तलेटी में आदिनाथ जिनालय, जयतलेटी का चैत्यवंदन करके, दीक्षा कल्याणक की देहरी, केवलज्ञान कल्याणक की देहरी तथा समवसरण मंदिर ऐसे तीन चैत्यवंदन करके पहली टूंक का तीन चैत्यवंदन करना....

॥ गिरिराजमंडन श्री आदिनाथाय नमः ॥ ॥ गिरनारमंडन श्री नेमिनाथाय नमः ॥
॥ नमो नमः आ. श्री प्रेम-हिमांशु-भुवनभानु-जयघोष- राजेन्द्र- चन्द्रशेखर-धर्मरक्षितसूरिभ्योः ॥

गिरनार गुण गुंजन

● संकलन ●

शासनप्रभावक युगप्रधान आचार्यसम
प.पू.पं. **श्री चन्द्रशेखरविजयजी महाराज साहेब** के शिष्य
प.पू.आ. **श्री धर्मरक्षितसूरीश्वरजी महाराज साहेब** के शिष्य
प.पू.आ. **श्री हेमवल्लभसूरीश्वरजी महाराज साहेब**

● प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान ●

गिरनार महातीर्थविकास समिति
C/o. गौरवशाली गिरनारदर्शन धर्मशाला,
शिवनिकेतन के पास, मीनराज स्कुल के सामने, रुपायतन रोड,
भवनाथ तलेटी, जूनागढ़ - 362001.
फोन : 0285-2657099/199, मो. : 9409685999
E-mail : girnarbhakti@gmail.com
Web : www.girnarbhakti.com, www.girnardarshan.com

स्व. कांतिलाल भीखाभाई शाह

स्व. सीताबेन कांतिलाल शाह

• सौजन्य •

गिरनार महातीर्थनी छत्रछायामां ५० दिवसना चोमासानो

सुवर्ण अवसर

अनंता तीर्थंकरोना दीक्षा-केवल अने निर्वाणकल्याणकथी पावन बनेल
गिरनार महातीर्थनी धन्यधरा उपर बिराजमान युगप्रधान आचार्यसम
पंन्यासप्रवर **श्री चन्द्रशेखरविजयजी महाराजा**ना शिष्यरत्न तपस्वीरत्न
पू.आ. **धर्मरक्षितसूरिजी महाराज**ना शिष्यरत्न आजीवन आयंबिलना आराधक
पू.आ. **हेमवल्लभसूरिजी म.साहेब**, प्रवचनप्रभावक पू. पंन्यासप्रवर **पद्मदर्शनविजयजी म.**
साहेब, नवकारमंत्र आराधक पू. मुनिराज **दिव्यपद्मविजयजी म. साहेब** आदिठाणा
तेमज
अध्यात्मयोगी पू.आ. **श्री कलापूर्णसूरिजी महाराजा**ना समुदायवर्तीनी
१००+१००+१००+६५ वर्धमानतपनी ओळीना तपप्रभाविका
साध्वीवर्या पू. **हंसकीर्तिश्रीजी म.साहेब** आदिठाणाना
वि.सं. २०७८ना ५० दिवसीय चातुर्मासनो अनेरो लाभ मळतां

सीताबेन कांतिलाल भीखालाल शाह (अनावलवाळा) परिवार
हैये अत्यंत रोमांच अनुभवे छे.

स्व. रमेशचंद्र कांतिलाल शाह

स्व. रसिकलाल कांतिलाल शाह

अमे बडभागी छीओ के देव-गुरुनी पावनकृपा अने प्रेरणाथी अमारा परिवारने सुकृतनी सरवाणी वहाववानो अपूर्व अवसर अवार-नवार सांपडतो होय छे जे अमारुं सद्भाग्य गणाय...

• सुकृतना संस्मरणो •

- अंजनशलाका - प्रतिष्ठा समेत भव्यातिभव्य बे शिखरबंधी जिनालय निर्माणनो लाभ मळ्यो.
- त्रण उपाश्रयोना निर्माणनो लाभ मळ्यो.
- बे वार उपधान करावावानो लाभ मळ्यो.
- वल्लभीपुरथी शत्रुंजय तीर्थाधिराजनो जाजरमान छ'री पालित संघ कढाववानो लाभ मळ्यो.
- अंतरीक्षजी तीर्थमां ५५० आराधकोने चातुर्मास करावावानो लाभ मळ्यो.
- सुरतमां वात्सल्यपुरम्ना निर्माणनो लाभ मळ्यो.

• अने हवे मळशे... •

- नवसारीमां अंजनशलाका-प्रतिष्ठा समेत शिखरबंधी जिनालयना निर्माणनो लाभ.
- नवसारीथी आलीपोरना छ'री पालित संघनो लाभ

आज सुधी अमारा परिवारने आवा अनेकविध लाभो अवार-नवार मळ्या छे, मळे छे अने मळता रहे एवी शासनदेवोने करजोडीने हार्दिक प्रार्थना करीए छीए.

सीताबेन कांतिलाल भीखालाल शाह (अनावलवाळा) परिवार

क्र.	विवरण	पेज क्र.
१.	गिरनार महिमा	०१
२.	गिरनार स्तुति सरिता	२५
३.	गिरनार वंदनावली	२७
४.	गिरनार मंडण नेमिजिनने	४२
५.	श्री नेमिनाथ ! जिनेन्द्र !	४४
६.	उपकारकारी नेमिवरने...	४६
७.	श्री शान्तसुधारस संवेदना	५३
८.	गिरनार अभिषेक स्तुति	६२
९.	गिरनार - नेमिनाथजी की आरती	६३
१०.	गिरनार - नेमिनाथजी का मंगलदीवा	६४
११.	श्री गिरनार महातीर्थ के खमासमणा के दोहे	६५
१२.	चैत्यवंदन विधि विभाग	६८
१३.	श्री नेमिनाथ जिन चैत्यवंदन	७६
१४.	श्री नेमिनाथ थोय	८५
१५.	श्री नेमिनाथ प्राचीन स्तवन विभाग	१०५
१६.	श्री गिरनार नेमिनाथ अर्वाचीन स्तवन विभाग	१३०
१७.	श्री नव्वाणुं प्रकारी पूजा विधि	१५१
१८.	श्री गिरनार - नेमि भक्ति गीत	१८५
१९.	भक्ति गीत विभाग	२३४
२०.	गिरनार महातीर्थ के १०८ नाम के साथ दोहे	२५३
२१.	गिरनार महातीर्थ की ९९ यात्रा की विधि	२६९

गिरनार महिमा

- यह गिरनार भी शत्रुंजय महातीर्थ की तरह प्रायः शाश्वत है ! पाँचवें आरे के अंत में जब शत्रुंजय गिरि की ऊँचाई घटकर सात हाथ की होगी, तब इस गिरनारगिरि की ऊँचाई तो ४०० हाथ की रहेगी।
- यह गिरनार अर्थात् रैवतगिरि ! यह शत्रुंजय का पाँचवां शिखर होने से पाँचवां ज्ञान अर्थात् केवलज्ञान दिलानेवाला है !
- गिरनार अनंत अरिहंतों की भूमि है !
- गिरनार पर अनंत तीर्थंकर आए हैं और मोक्षपद को प्राप्त किया है ! अन्य अनंत तीर्थंकर परमात्मा के दीक्षा-केवलज्ञान और मोक्षकल्याणक पूर्व की चोवीसी में हुए हैं, हो रहे हैं तथा भविष्य में होनेवाले हैं !
- यह गिरनार अवसर्पिणी के पहले आरे में २६ योजन, दूसरे आरे में २० योजन, तीसरे आरे में १६ योजन, चौथे आरे में १० योजन, पाँचवे आरे में २ योजन और छट्ठे आरे में १०० धनुष अर्थात् ४०० हाथ की ऊँचाई का रहेगा।
- स्वर्गलोक, पाताललोक और मृत्युलोक के चैत्यों में सुर असुर और राजा गिरनार के आकार की रोज पूजा करते हैं।
- यह गिरनार महातीर्थ पृथ्वी के तिलक समान है !
- यह गिरनार महातीर्थ महापुण्य की राशि है !

- गिरनार पर आनेवाले पापी ऐसे प्राणी भी पुण्यवान् बन जाते हैं।
- जिस प्रकार पारसमणि के स्पर्श से लोहा सोना बनता है उस प्रकार गिरनार के स्पर्श से प्राणी चिन्मय स्वरुपी बन जाते हैं।
- गिरनार की भक्ति करनेवालों को इस भव में और परभव में दरिद्रता नहीं आती।
- गिरनार महातीर्थ में निवास करनेवाले तिर्यंचों (जानवर) को भी आठ भव के अंदर सिद्धिपद प्राप्त होता है।
- गिरनार महातीर्थ में हर एक शिखर के ऊपर जल, स्थल और आकाश में घूमनेवाले जो जीव होते हैं, वे सब तीन भव में मोक्ष प्राप्त करते हैं।
- गिरनार महातीर्थ पर वृक्ष, पाषाण, पृथ्वीकाय, अप्काय, वायुकाय और अग्निकाय के जीव हैं वे व्यक्त चेतनावाले नहीं होते हुए भी इस तीर्थ के प्रभाव से कुछ काल में मोक्ष प्राप्त करनेवाले होते हैं।
- यह तो आत्मा का कल्याण करनेवाली प्रायः शाश्वत ऐसी कल्याणक भूमि है !

भूतकाल में प्रायः कोई चौबीसी ऐसी नहीं गयी होगी कि जब यहाँ कोई परमात्मा का कल्याणक न हो !

वर्तमान चोवीसी में भी यहाँ नेमिप्रभु के दीक्षा, केवलज्ञान

और मोक्ष ये तीन कल्याणक हुए हैं, अनागत चोवीसी में भी चौबीसों तीर्थंकर परमात्मा के मोक्ष तथा अंतिम दो प्रभु के दीक्षा और केवलज्ञान कल्याणक भी होनेवाले हैं ! और गत चौबीसी में आठ तीर्थंकर के दीक्षा-केवलज्ञान-मोक्षकल्याणक हुए थे एवं दो का सिर्फ मोक्षकल्याणक हुआ था ।

परमात्मा के एक कल्याणक के अवसर पर चौदह राज में प्रकाश और नरक के जीवों को सुखशाता का अनुभव होता है... देवलोक में इन्द्रमहाराजा का सिंहासन भी कंपायमान होता है... **तो महाप्रभावक ऐसे कल्याणक की घटना जिस पावनभूमि पर हुई हो, उस भूमि के महत्त्व की तो क्या बात करनी ? इस आत्मा पर अनादिकाल से छाया हुआ मिथ्यात्व का अंधकार, इन महाप्रभावक भूमिओ के स्पर्शन-दर्शन-वंदन-पूजनादि करने से दूर होते ही सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होती है... जीव को बोधिबीज की प्राप्ति होते ही वह शीघ्रातीशीघ्र आत्मविकास करके शिवपद प्राप्त करता है ! हम भी इस पावनभूमि पर आज भी रहे हुए प्रभु के कल्याणक अवसर के अणु-परमाणुओं की अनुभूति का आस्वादन करे !**

वस्तुपाल चरित्र में तो शत्रुंजय महातीर्थ और गिरनार महातीर्थ को वंदन करने में समान फल कहा गया है !

यह गिरिराज भी अत्यंत पवित्र होने से संभवित हो तो यह यात्रा नंगे पाँव करनी...

इस तीर्थभूमि की आशातना न हो इसलिए मन को पवित्र रखने के साथ टेपरेकोर्डर, मोबाइल आदि न रखकर इस पावनभूमि

में बहते कुदरत के संगीत की सुरावली का श्रवण करना है...

मार्ग में हँसी-मजाक न करके अनंत तीर्थंकर परमात्मा की कल्याणकभूमि की स्पर्शना के स्पंदनों का आनंद लेते हुए प्रभु के नाम का **''ॐ ह्रीँ अर्हं श्री नेमिनाथाय नमः''** अथवा **''नमो अरिहंताणं''** पद का जाप करते हुए ऊपर चढ़ना है...

यात्रा के दौरान जीवदया का पालन करते-करते जयणापूर्वक नीची दृष्टि रखकर चढ़ना है...

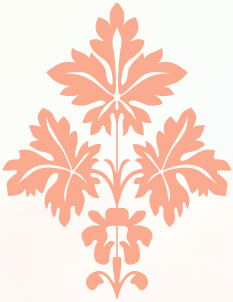

सहसावन कल्याणकभूमि

सहसावन का मुख्य नाम **''सहस्राम्रवन''** है! उसका अर्थ सुनो ! सहस्र अर्थात् हजार, आम्र अर्थात् आम (केरी) और वन अर्थात् जंगल अर्थात् हजारों आम के वृक्षों का वन ! परन्तु कालक्रम से शब्द का अपभ्रंश होते-होते आज वह **''सहसावन''** के नाम से प्रसिद्ध है । उसमें भी अन्यधर्मी पुण्यात्मा तो उसे **''शेषावन''** कहते हैं ।

हजारों आम के घटादार वृक्षों से घिरे हुए इस स्थल की रमणीयता तन-मन को अनोखी शीतलता की अनुभूति करवाती है।

आज भी यह भूमि मोर तथा कोयल की मधुर ध्वनि से गूंज रही है ।

इस पावनभूमि ने नेमिप्रभु तथा उनसे पूर्व हुए अनंत तीर्थंकर परमात्मा के दीक्षा अवसर के उछलते वैराग्यरस से भरे हुए अणु परमाणुओं को आज भी वातावरण में संभालकर रखा है।

इस पावनभूमि में नेमिप्रभु सहित अनंत तीर्थंकर परमात्मा के केवलज्ञान कल्याणकों का पुनित प्रकाश आज भी भव्यात्माओं के अंतर में पड़े मिथ्यातामस को दूर करके सम्यक्त्व की साधना का स्पर्श करवा रहा है।

कैवल्यलक्ष्मी की प्राप्ति होते ही करोड़ों देवताओं के द्वारा रचित समवसरण में देशना देते चोत्रीस अतिशय युक्त प्रभुजी की वाणी के शब्दों के तरंगों से होते गुंजन की आज भी अनुभूति होती है। यह सहसावन तो **''हार्ट ऑफ ध गिरनार''** है।

आत्मन् !

इतनी भव्य और दिव्यभूमि होने के बावजूद भी कई वर्षों से इस सहसावन की पावनभूमि के प्रति उपेक्षा हो रही थी। पहली टूंक से यहाँ तक आने का पगदंडी का मार्ग भी विकट था। कोई भी जैन यात्रिक इस पवित्रतम कल्याणक भूमि की स्पर्शना करने का साहस नहीं करते थे।

वर्तमान चोवीसी के २४ तीर्थंकर परमात्मा के १२० कल्याणकों में से ११७ कल्याणक पूर्व भारत में हुए हैं और मात्र तीन कल्याणक पश्चिम भारत में तथा वे भी गुजरात सौराष्ट्र में रहे इस गिरनार पर हुए हैं। कई सदियों से साधु-साध्वी के विचरण विशेषरुप से गुजरात में होने के बावजूद भी इन तीन कल्याणक भूमि की स्पर्शना से सकल श्री संघ वंचित रहा...

आत्मन् ! कल्याणक का मतलब तुम जानते हो ?

सुनो ! कल्याणक अर्थात् कल्याण करे वह कल्याणक! हाँ! आत्मा का कल्याण करे अर्थात् आत्मा को हितकारी, लाभकारी, सुखकारी बने उस घटना को कल्याणक कहा जाता है।

जिनेश्वर परमात्मा संबंधी ऐसी पाँच घटनायें हैं, जो सभी जीवों के लिए कल्याणकारी हैं, वे हैं -

जिनेश्वर परमात्मा की आत्मा का च्यवन! अर्थात् देवलोक अथवा नरकलोक का आयुष्य पूर्ण करके चारों गति के च्यवन से हमेशा के लिए छुटकारा पाना, वह है च्यवन कल्याणक!

अनादिकाल के भवभ्रमण के दौरान गर्भावास में रहकर अनंत जन्म किए, उन जन्मों की परंपरा से छुटकारा पाना, वह है जन्म कल्याणक!

अनंत जन्म लेकर संसार के भोग सुखों की जंजाल में फँसे, उस गृहवास का हमेशा के लिए त्याग, वह है दीक्षा कल्याणक!

अनंत भवभ्रमण के दौरान ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अंतरायकर्म रुपी घाती कर्मों के पाश में बंधकर भवों की परंपरा बढ़ाई। उस घातीकर्मावास से सदा के लिए छुटकारा, वह है केवलज्ञान कल्याणक !

अनादिकाल के भवभ्रमण में नचानेवाले ऐसे नाम, गोत्र, वेदनीय और आयुष्यकर्मरुपी अघाती कर्मावास के बंधन से मुक्त होना, वह है मोक्ष अथवा निर्वाणकल्याणक !

आत्मन् !

प्रभु के प्रत्येक कल्याणकों की घटना का काल तो मात्र कुछ समय का ही होता है। परन्तु उन घटनाओं के घटने मात्र से अर्थात् किसी भी व्यक्ति के द्वारा कोई भी प्रयास-पुरुषार्थ या प्रयत्न के बिना मात्र तीर्थंकर परमात्मा के प्रचंड पुण्य के प्रभाव से ही इस घटना के समय जो चमत्कार होते हैं, वे खास जानने जैसे हैं।

- एक तेजस्वी द्रव्य कहाँ तक प्रकाश फैला सकता है ? मोमबत्ती २-४ फुट ! फानस १०-१२ फुट ! जीरो बल्ब २०-२५ फुट ! २०० पॉवर का बल्ब २००-३०० फुट ! हेलोझन लाईट १५००-२००० फुट ! सोडीयम लाईट १५-२० हजार फुट ! आधुनिक एस्ट्रोनोमि (खगोलशास्त्र) की परिभाषा में एक चन्द्र लाखों प्रकाश वर्ष !

  एक सूर्य करोड़ प्रकाश वर्ष !

  एक तारा अरब प्रकाश वर्ष जितने अति दूर प्रदेशों से इस पृथ्वी पर प्रकाश फैलाते हैं !

  आत्मन् ! इससे विशेष दूर कोई प्रकाश फैला सकता है ?

  हाँ ! **जिनेश्वर परमात्मा के कोई भी एक कल्याणक के एक मात्र अंश के प्रभाव से उर्ध्वलोक, अधोलोक और तिर्च्छालोक, इस तरह तीनों लोक में अर्थात् समग्र सृष्टि पर क्षणभर के लिए प्रकाश फैल जाता है।**
- आत्मन् ! सैंकड़ों लोगों के साथ लड़ने की शक्ति १ योद्धा में

होती है ! ऐसे १२ योद्धाओं से विशेष शक्ति १ बैल में होती है।
१० बैल से विशेष शक्ति १ घोड़े में होती है ।
१० घोड़े से विशेष शक्ति १ पाडे में होती है ।
१० पाडे से विशेष शक्ति १ हाथी में होती है ।
५०० हाथी से विशेष शक्ति १ सिंह में होती है।
२००० सिंह से विशेष शक्ति १ अष्टापद नामक प्राणी में होती है ।
१० लाख अष्टापद से विशेष शक्ति १ बलदेव में होती है।
२ बलदेव से विशेष शक्ति १ वासुदेव में होती है।
२ वासुदेव से विशेष शक्ति १ चक्रवर्ती में होती है ।
१० लाख चक्रवर्ती से विशेष शक्ति १ वैमानिक इन्द्र में होती है।

आत्मन् !

ऐसे ६४-६४ इन्द्रों के सिंहासन भी जिनेश्वर परमात्मा के एक कल्याणक के मात्र एक अंश के प्रभाव से एक साथ कंपित होने लगते हैं ।

आत्मन् ! अनंत इन्द्र से भी विशेष शक्ति तीर्थंकर परमात्मा की कनिष्ठ अंगुली मात्र में ही होती है । तुम्हें याद है ? कभी सुना होगा कि...

मेरुपर्वत पर जन्माभिषेक के अवसर पर प्रभु वीर को कोई तकलीफ तो नहीं होगी न ! ऐसा संशय सौधर्म इन्द्र को हुआ तब प्रभु ने अवधिज्ञान के उपयोग से इन्द्र की इस द्विधा का निवारण

करने के लिए पाँव के अंगूठे से मेरुपर्वत को कंपित किया था।

जबकि प्रभु के कल्याणक के अवसर पर तो इन इन्द्रों के सिंहासन प्रभु के पुण्य प्रभाव मात्र से कंपित होते हैं।

एक तीर्थंकर परमात्मा के एक कल्याणक के एक मात्र अंश के प्रभाव से एक साथ असंख्य जीवात्माओं की पापराशि को उखाड़कर पुण्यराशि से आत्मा का उत्थान, पुनः उत्थान और परम उत्थान करने की प्रचंड शक्ति होती है ! कल्याणक की कितनी प्रचंड शक्ति !

आत्मन् ! यदि अरिहंत प्रभु के एक मात्र कल्याणक के एक मात्र अंश की ऐसी अपरिमित शक्ति है तो संपूर्ण एक कल्याणक की शक्ति कितनी ? अनंती न !

एक प्रभु के एक कल्याणक में अनंतशक्ति है तो उनके पाँचों कल्याणकों की सामर्थ्यता कितनी ? अनंती न !

एक प्रभु के पाँचों कल्याणकों में अनंत शक्ति है तो अनंत तीर्थंकर प्रभु के अनंत कल्याणकों में कितनी सामर्थ्यता ? अनंतानंत न !

आत्मन् ! ये सभी शक्तियाँ बुद्धि से समझी नहीं जा सकती। परन्तु अनुभव में समझी जाती हैं। उसके लिए समय-साधना और सत्त्व की जरुरत है। कल्याणक दिन की आराधना, कल्याणक भूमि की स्पर्शना, कल्याणक प्रसंग का ध्यानादि आराधना एकाग्रचित्त से, भक्तिभाव से, एकाकार होकर की जाये तो परमात्मा के साथ संबंध के नाते आत्मप्रदेशों के द्वारा परमात्मा

के कल्याणकों के अणु परमाणुओं की स्पर्शना की जा सकती है। हमारी पात्रता के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभूति होती है। अकथ्य और अकल्पनीय आत्मानंद से जीव आनंदविभोर हो जाते हैं। आज का सायन्स भी असंख्य वर्षों तक अणु परमाणु की उपस्थिति रहती होने का साबित करता है। आज भी इन कल्याणक भूमिओं में प्रभु के कल्याणक अवसर के अणु परमाणु वातावरण में वैसे ही पड़े हैं। जरुरत है मात्र हमारी आंतरिक दृष्टि के खुलने की। हाँ! आंतरिकदृष्टि खुलते ही आत्मार्थी आत्मायें अनुभूति का आस्वादन करने में समर्थ बनती हैं।

कर्मवश यदि ऐसी विशेष अनुभूति न भी हो तो भी उन अणु परमाणुओं की स्पर्शना के प्रभाव से अगम्य आनंद की अनुभूति का आस्वादन अवश्य होगा। अनादिकालीन मिथ्यात्व की ग्रंथी के भेद से निर्मल सम्यक्त्व की प्राप्ति होगी। बहुमानभाव से प्रभु के गुणों की अंशात्मक प्राप्ति होगी।

आत्मन् ! भद्रबाहुस्वामी ने बृहत्कल्पभाष्य में स्पष्ट लिखा है कि ऐसी कल्याणकभूमियों की स्पर्शनादि से सम्यक्त्व न हो उसे प्राप्त होता है और जिसे हो उसका सम्यक्त्व दृढ बनता है। सम्यक्त्व आए तो अवश्य मोक्ष होता ही है !

आत्मन् ! ऐसे अनंत तीर्थंकर भगवंतों के दीक्षा-केवल-मोक्षकल्याणक से पवित्र भूमि है यह गिरनार! इसकी स्पर्शना से हम धन्य बने !

सहसावन में दीक्षाकल्याणक की भावधारा

सहसावन में हजारों वर्ष पूर्व हुए प्रभु के दीक्षा कल्याणक अवसर के दृश्य को मानसपट पर लाकर प्रभु के दीक्षाकल्याणक निमित्त से जाप करके प्रभु के दीक्षा के अवसर के भाव का स्पर्श करें....

''ॐ ह्रीँ श्री नेमिनाथ नाथाय नमः''

प्रभु ! जन्म से ही विषयों में अनासक्त होने के बावजूद भी परिवारजनों के आग्रहवश उग्रसेन महाराजा की राजकन्या राजुल के साथ विवाह करने के लिए आपका रथ लग्न के मंडप के समीप पहुँच रहा था... उतने में ही निकट में रहे पशुओं के वाडे से पशुओं का करुण आक्रंद आपने सुना... सारथि से यह हकीकत जानी कि उनका वध करके लग्न में आए हुए मेहमानों के भोजन में इनका उपयोग किया जाएगा.....

प्रभु ! आप अतिव्यथित हुए । मेरे विवाह के निमित्त से इतने जीवों का बलिदान लिया जाएगा ?

प्रभु ! आप निर्दोष, अशरण और असहाय ऐसे इन दुःखमय और पापमय जीवों की महादारुण स्थिति सहन नहीं कर पायें ।

प्रभु ! इन निर्दोष पशुओं के साथ-साथ आपने इस जगत के सर्व जीवों को अशरण ! असहाय ! दुःखमय और पापमय ! देखा और जाना ! करुणा से आर्द्र बना आपका अंतर द्रवित हो उठा !

प्रभु ! अशरण, असहाय, दुःखमय और पापमय ऐसे इन जीवों को दुःखयुक्त, पापयुक्त और जन्म-मरण के चक्करवाले इस

भवसंसार से मुक्त करवाने के लिए आपको संयमग्रहण का एक ही उपाय सूझा।

प्रभु ! आपने संसार के शणगार का त्याग करके अणगार के शणगार को सजकर जीव मात्र के प्रति करुणा की भावना का सेवन करके प्रकृष्ट पुण्योपार्जन के द्वारा इन जीवों को तारने का दृढ़ संकल्प किया...

प्रभु ! दीक्षा दिन पर्यंत के शेष एक वर्षीय कर्मकाल के आपके भोगावली कर्म निर्मूल हुए... अंतःमुहूर्तकाल आत्मप्रदेशों में अनोखे आनंद का अविरत प्रवाह बहता है... नौ लोकांतिक देवों के आसन एक साथ चलायमान होते हैं... अवधिज्ञान के द्वारा प्रभु ! वे आपके शेष एक वर्षीय कर्मकाल के भोगावली कर्मों के सर्वथा क्षय से विज्ञात होते हैं... वे स्व-आचार के अनुसार शीघ्र आपके पास पहुँच जाते हैं और आपको तीर्थप्रवर्तन के लिए हाथ जोड़कर विनंती करते हैं।

प्रभु ! आपने अवधिज्ञान के माध्यम से भोगावली कर्म-चारित्रावरणीय कर्म की अवधि को जानकर मंगल स्वरुप वार्षिकदान देना प्रारंभ किया... अनेक भव्यात्माओं का द्रव्य और भाव दारिद्रय दूर किया।

वर्ष के अंत में श्रावण सुद पांचम के महामंगलकारी दिन में आप शिबिका में आरुढ़ हुए और आपका भव्यातिभव्य दीक्षा का वरघोड़ा निकला...

प्रभु ! आपके तीव्रतम वैराग्य को देखकर आपके २८ पित्राई भाई, श्री कृष्ण के ८ पुत्र, बलदेव के ७२ पुत्र, श्रीकृष्ण के ५६३

भाई, उग्रसेन राजा के ८ पुत्र, देवसेनादि १००, २१० यादव पुत्र, ८ बड़े राजा, अक्षोभकुमार, १ अक्षोभपुत्र तथा वरदत्तकुमार इस तरह एक हजार राजकुमार भी आपके साथ प्रव्रज्या के पंथ पर चलने के लिए निकल पड़े...

प्रभु ! अनंत भव्यात्माओं को संयम जीवन का दान देकर तीर्थंकरपद पर्यंत पहुँचानेवाले ऐसे गढ़ गिरनार की इस पावनतम भूमि पर आप पधारे...

शिबिका से उतरकर प्रभु ! आप यहीं इसी वृक्ष के नीचे ही रुके होंगे ?

प्रभु ! एक हजार राजकुमारों के साथ आपकी प्रव्रज्या की पावनतम प्रक्रिया का प्रारंभ इसी भूमि पर हुआ होगा ?

प्रभु ! सर्व वस्त्राभूषणों का त्याग करके वृक्ष के नीचे ही अपने ही हाथों से आपने पंचमुष्टि के द्वारा केशलूंचन किया होगा। प्रभु ! तब आपको जिन्होंने देखा होगा, वें धन्य हैं।

''नमो सिद्धाणं'' पद से सिद्ध भगवंतों को नमस्कार करके ''करेमि सामाइयं सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि'' ऐसे संयमसूत्र के साथ महासामायिक का उच्चारण किया होगा।

प्रभु ! आपके उस सकल सावद्ययोग के जीवनपर्यंत के पच्चक्खाण के साथ ही अंतिम गृहवास से छुटकारा होते ही आपके सकल चारित्रावरणीय कर्म का उन्मूलन हुआ होगा।

प्रभु ! चारित्रावरणीय कर्म का क्षय होते ही विशुद्ध, आज्ञा और मनसूचक के संपूर्ण शुद्धिकरण के प्रभाव से अनुक्रम से विशुद्ध संयमयोग, एकांतिक अनेकांतिक आज्ञायोग तथा मनःपर्यवज्ञान का

मनोज्ञयोग आपको प्राप्त हुआ होगा।

प्रभु! उस समय मात्र केवली भगवंत तथा महायोगी पुरुषों को ही प्रत्यक्ष होता ऐसा, आपके ललाट के मध्य में मनःपर्यवज्ञान का साक्षीभूत ऐसा सूक्ष्मतर तेजस्वी बिंदु जगमगाता होगा।

उस समय च्यवन कल्याणक और जन्मकल्याणक की तरह तीनों लोक में प्रकाश हुआ होगा। नारक, तिर्यंच, मनुष्य और देवों को भी सुख का आस्वादन हुआ होगा।

- विवाह के समय पशुओं की पुकार सुनकर करुणाग्रस्त बनकर लग्नमंडप से वापिस लौटनेवाले! हे नेमि! हमारे अंतर में भी जीवमात्र के प्रति मैत्री और करुणागुण का प्रादुर्भाव हो।
- विवाह के लिए ललचानेवाली ललनाओं की चेष्टा से अलिप्त रहनेवाले हे नेमीश्वर! हमारे हृदय में निर्विकारता और अनासक्ति का आगमन हो।
- नौ-नौ भव की प्रीत रखकर बैठी हुई राजुल का क्षणभर में त्याग करनेवाले हे महावैरागी प्रभु! हममें भी वैसे महासत्त्व का सिंचन हो। प्रकृष्ट वैराग्य के बीजांकुर का वपन हो।
- प्रभु! हमारी विषय-वासना का वमन हो।

आत्मन्! इस पावनभूमि के अजोड़ आलंबन से कई मुमुक्षु आत्माओं के संयम के अंतराय टूटे हैं।

इस भूमि के आलंबन से कई आत्माओं ने प्रभु के बताये हुए प्रव्रज्या के पंथ पर चलकर आत्मकल्याण किया है।

इस पावनभूमि पर शक्तिशाली आत्मायें, चारित्र जीवन के अंतराय तोड़ने के संकल्पपूर्वक चारित्रपद के दोहें बोलकर १०८

प्रदक्षिणा, १०८ खमासमण और चारित्र पद आराधनार्थं १०८ लोगस्स के काउस्सग्ग की आराधना करके प्रव्रज्या के पंथ पर निकल पड़े है।

केवलज्ञान कल्याणक की भावधारा

आज भी इस कल्याणकारी भूमि पर नेमिप्रभु तथा अनंत तीर्थंकर परमात्माओं के केवलज्ञान कल्याणकों का पुनित प्रकाश, अनेक भव्यात्माओं के अंतर में पड़े मिथ्यातामस को दूर करके, शुद्ध सम्यक्त्व की साधना का स्पर्श करवा रहा है।

आत्मन् ! हम प्रभु के केवलज्ञान कल्याणक के अवसर के दृश्य की कल्पना करके केवलज्ञानकल्याणक के निमित्त से जाप करें।

ॐ ह्रीँ श्री नेमिनाथ सर्वज्ञाय नमः

हम प्रभु के केवलज्ञान अवसर के ध्यानपूर्वक उन भावों में ओतप्रोत बनकर प्रभु से प्रार्थना करें...

प्रभु ! आपने शेष घातीकर्मों का नाश करने के लिए इस सहसावन के जंगल में कई परिषहों को समताभाव से सहन करके क्षमा, प्रेम और करुणा के सैन्य के सहारे इस घातीकर्मयुद्ध में विजय हासिल करने के लिए कदम उठाया।

प्रभु ! आप चौपनवें दिन भादरवा वद अमावस को इस वृक्ष के नीचे आए और काउस्सग्ग ध्यान में रहकर आप क्षपकश्रेणी पर आरुढ़ हुए।

प्रभु ! आप छट्ठे प्रमत्त गुणस्थान से सातवें अप्रमत्त गुणस्थानक से आठवें अपूर्वकरण गुणस्थान पर आरोहित होकर पहले आपकी पृथक्त्व वितर्क सविचार शुक्लध्यान की धारा चलविचलता से चलती है। बाद में पृथक्त्व वितर्क प्रविचार शुक्लध्यान की धारा अचल अविचलता से चलती है !

प्रभु ! आत्मध्यान की पूर्णतम तद्गतता के प्रभाव से आपके सहस्त्रारचक्र में सूक्ष्मतम शक्तियाँ उत्पन्न होती हैं। ध्यान की धारा विशेष आगे बढ़ने पर ध्यान की प्रचंड अग्नि के प्रभाव से घातीकर्म की सूक्ष्मतम ग्रंथि का भेद होते ही सर्व घातीकर्म भस्म हो जाते हैं। उसी समय मोहनीयकर्म का सर्वथा नाश होते ही राग द्वेष का भी नाश होता है । वीतराग अवस्था के बाद अंतः मुहूर्त काल में ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अंतरायकर्म की ग्रंथियों का भी भेद होता है।

प्रभु ! आपकी आत्मसृष्टि केवलज्ञान, केवलदर्शन, यथाख्यात चारित्र तथा अनंतवीर्य की परमात्म सृष्टि का सर्जन करती है।

प्रभु ! आपको अनंता अनंत काल के अनंतानंत द्रव्यों में से प्रत्येक द्रव्य के प्रत्येक पर्याय के ज्ञानदर्शन की समृद्धतम समृद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

प्रभु ! तुरंत ही आपके तीर्थंकर नामकर्म के विपाकोदय का प्रादुर्भाव होता है। चारमूल अतिशय, अष्ट महाप्रतिहार्य, चौतीस अतिशय और समवसरण सहित पैंतीस गुणवाली वाणी के आंतरबाह्य अलौकिक ऐश्वर्य का आविर्भाव होता है।

प्रभु ! आपके च्यवन-जन्म और दीक्षा की तरह इस केवलज्ञान कल्याणक के अवसर पर भी तीनों लोक में प्रकाश और सकल पंचेन्द्रिय जीवराशि तथा कुछ एकेन्द्रिय से चउरिन्द्रिय जीवों को सुख का एहसास हुआ। नौ नौ सुवर्ण कमल पर पादन्यासपूर्वक आप समवसरण की तरफ चलें... करोड़ों देवता आपके अनुयायी बनकर आपका अनुसरण कर रहे हैं। पूरा वर्ग, आपके प्रभाव से तीन गढ़ में से एक-एक गढ़ के दश हजार, पाँच हजार, पाँच हजार सोपान बिना कोई कष्ट से चढ़ रहे हैं।

प्रभु ! आपने समवसरण को प्रदक्षिणा, तीर्थ को नमस्कार, रत्नजडित सुवर्ण सिंहासन पर आरोहण होने के अरिहंत भगवंत के आचार का अनुकरण किया...

प्रभु ! आपकी दिव्यता के प्रभाव से ही देवों के द्वारा आपके जैसे ही आबेहूब तीन-तीन देह तीनों-तीन दिशा में दृश्यमान होते हैं।

प्रभु ! आपने प्रथम देशना के द्वारा इस भवसागर में डूबते हम जैसे जीवों को तिरने के उपाय बताकर चतुर्विध संघ की स्थापना करके आपके शासन के अधिष्टायक देव के रुप में गोमेध यक्ष तथा आपके शासन की अधिष्ठायिका तथा इस गिरनार महातीर्थ की अधिष्ठायिका के रुप में अंबिकादेवी की स्थापना की...

प्रभु ! वह भादरवा वद अमावस का दिव्य दिन धन्य है। आपके केवलज्ञान कल्याणक की वह पुण्य पल ! जिसने देखी वह धन्य है !

आत्मन् ! हम सब भी कितने धन्यातिधन्य बन गए हैं कि प्रभु के केवलज्ञान कल्याणक की कल्याणकारी भूमि की स्पर्शना के अवसर पर, प्रभु के केवलज्ञान कल्याणक के अवसर के भावों की

संवेदना, प्रभु के केवलज्ञान कल्याणक के अवसर के आध्यात्मिक आंदोलन तथा तेजस्वी तारक तरंगों के स्पंदनों को हमने प्राप्त किया।

आत्मन्! सहसावन में ही श्री कृष्ण वासुदेव के द्वारा चाँदी के, सुवर्ण के तथा रत्न के प्रतिमाजीयुक्त तीन जिनालयों का निर्माण हुआ था।

इस सहसावन में पूर्वकाल में सोने के चैत्य में मनोहर चौबीसी का निर्माण किया गया था।

इस सहसावन के पास लक्षाराम (वन) में एक गुफा में अतीत, वर्तमान और अनागत, इस तरह तीन चौबीसी के ७२ तीर्थंकर परमात्मा की प्रतिमाजी बिराजमान की गयी थी।

इस सहसावन में केवलज्ञान पाकर लक्षाराम (वन) में प्रभु ने धर्म का उपदेश दिया था।

इस सहसावन की सिद्धभूमि में ही करोड़ों देवताओं के द्वारा अनंतजिनों के प्रथम और अंतिम समवसरण की रचना हुई थी।

ऐसे महिमावंत गिरनार की जय हो! जय हो! जय जयकार हो!

आत्मन्! चारों तरफ पहाड़ों की हारमाला के बीच में यह महाराजा के जैसा गिरनार नगाधिराज देखो!

आत्मन्! इस दिखते जगत में मानव अर्थ-काम की लालसा के दुःखों से पीड़ित हैं और तिर्यंच क्षुधातृषा के दुःखों से पीड़ित हैं। नहीं दिखते ऐसे जगत में नरक के जीव नरक की तीव्र वेदनाओं से पीड़ित हैं और देव दिव्य वैभव, ऐश्वर्य की नश्वरता की कल्पना मात्र

से पीड़ित हैं ।

आज का विज्ञान, विकास के नाम पर सभी को विनाश की तरफ ले जा रहा है । आज का मानव विज्ञान और विज्ञान के साधनों के पीछे पागल बना है। मोबाईल, कॉम्प्युटर, इन्टरनेट आदि कई साधनों ने घर-घर में स्वजनों के साथ बंधे हुए निर्दोष और निर्मल आत्मीय संबंधों को तहस-नहस कर दिया है ।

घर की स्त्री घर में भी सुरक्षित नहीं है । चारों तरफ से दोष और दूषणों की आग फैल रही है । आज का युवावर्ग पतन के मार्ग पर दौड़ रहा है । कहाँ, कौन, कैसे बचाएगा ? यह एक बहुत बड़ा प्रश्न है । फिर भी, जब तक जिनेश्वर परमात्मा का शासन तथा ऐसे कल्याणकारी तीर्थों का संयोग मिला है, तब तक हमारे बचने की पूरी संभावना है।

तारक तीर्थंकर प्रभु की करुणा हम पर अविरत रुप से बह रही है ।

आज भी प्रभु के कल्याणकों के भूमि प्रदेशों पर परमात्मा की आत्माओं के उस अवसर के परम पावन और पवित्र परमाणु बहुत अधिक प्रमाण में फैले हुए हैं।

आज भी प्रभु के कल्याणकों की तिथि का विशिष्ट प्रकार का प्रचंड प्रभाव प्रसारित है ।

प्रभु के कल्याणकों की तरह इन कल्याणकभूमि के स्थान तथा कल्याणक दिन की तिथियों की असीम शक्तियाँ हैं । ये कल्याणक तिथि भी पर्व तिथि के समान है ।

आत्मन् ! **इन कल्याणक भूमियों की स्पर्शना, संवेदना**

तथा स्पंदना के साथ-साथ कल्याणक तिथियों की आराधना, नित्यक्रम में प्रभु के पाँच कल्याणक का ध्यान तथा पंचकल्याणक की भावयात्रा की आराधना, आराधक ऐसे आत्माओं को प्राथमिक काल में तीर्थंकर परमात्मा का परोक्ष परिचय तथा समागम करवाती है और परंपरा से प्रभु का प्रत्यक्ष परिचय तथा समागम करवाती है। सुवर्ण कमल पर पादन्यास जैसे चौतीस अतिशयों के साथ समवसरण का दिव्यातिदिव्य दर्शन भी करवाती है।

ऐसे कल्याणकों के आलंबन से आराधक आत्माओं के, परमात्मा की आत्मा के साथ रहे हुए अंतर के अंतराय दूर हो जाते हैं और मुक्तिपर्यंत के अटूट संबंध जुड़ते हैं।

प्रभु के पंच कल्याणकों के आलंबन से शांति-समाधि-सद्गति और सिद्धिगति की साधना होती है। देवाधिदेव के प्रत्येक कल्याणक उनके दिव्यतम जीवन की दिव्यातिदिव्य प्रसंगावलि है।

कल्याणक के आलंबन से आराधना करनेवाले आराधक स्वयं परमात्मपद को प्राप्त करते हैं ! गर्भ, जन्म, अचारित्र, अज्ञान तथा सदेहावस्था के स्थान पर अगर्भ, अजन्म, अनंत चारित्र, अनंतज्ञान और अदेहावस्था स्वरुप शाश्वत स्थान को प्राप्त करते हैं।

पाँच इन्द्रियों के विषय में चकचूर बने जीवों को उगारने के लिए प्रभु के पंचकल्याणकों की आराधना, साधना, उपासना समर्थ है।

आत्मन् ! काल के प्रवाह में तो अनंत अरिहंत परमात्मा, इस सृष्टि को पावन करके चले गए। अरे ! मात्र गिरनार की इस भूमि पर भी अनंत तीर्थंकर परमात्मा की दीक्षा, केवलज्ञान और

मोक्षकल्याणक हुए हैं।

इन अनंत अरिहंत परमात्मा की आराधना, प्रत्येक का नाम लेकर करना असंभव है। परन्तु वे अलग-अलग नामवाले अनंत अरिहंत परमात्मा भी कल्याणक गुण से तो एक समान ही है। इसलिए एक अरिहंत परमात्मा के कल्याणक की आराधना के अवसर पर अनंत अरिहंत परमात्मा को स्मृति पट पर स्मरण में लाकर आराधना की जाय तो अनंत अरिहंतों के कल्याणकों की आराधना का लाभ मिलता है, ऐसा कहना अनुचित नहीं है।

ये कल्याणक भूमियां और कल्याणक तिथियाँ आत्महितकारक तथा मोक्षफलदायक होने से अवश्य जीवंत और चेतनवंत ही होती हैं।

कल्याणक की आराधना के अवसर पर हम प्रभु से विनंती करते हैं कि....

प्रभु ! कहा जाता है कि हृदय के सच्चे भाव से की गयी प्रार्थना कभी निष्फल नहीं जाती।

हे अनंत अरिहंत प्रभु ! आप तो पाँच-पाँच कल्याणकों के द्वारा शाश्वत सुख के स्वामी बनें।

हे अनंत अरिहंत प्रभु ! आपके शासन में अनंतजीव भवसागर से पार उतरे फिर भी मैं तो संसार सागर में डूब रहा हूँ।

हे अनंत अरिहंत प्रभु ! इस संसार सागर में अर्थकाम की कामनाओं में, विषय-कषाय की वासनाओं में और राग-द्वेष की जाल में मैं अनादिकाल से फँसा हुआ हूँ।

प्रभु ! आपके प्रत्येक कल्याणक की शक्ति से मेरे खतरनाक

दोष खतम हो जाओ ! निर्मूल हो जाओ ! विनाश हो जाओ !

प्रभु ! आपके पंचकल्याणकों के प्रत्येक कल्याणक की प्रत्येक शक्ति के द्वारा मेरे सर्वदोष संपूर्णतया नाश हो जाओ ! मेरी आत्मा के सर्व गुण पूर्णतया प्रकाशित हों !

हे अनंत अरिहंत परमात्मा ! इस जगत का जीवंत उद्धार करने के लिए आप अपने कल्याणकों के परमाणु, कल्याणकों का भव्य प्रभाव और कल्याणकों की आराधना इस विश्व के विराट पथ पर फैलाते गए हो, उन परमाणुओं का स्पर्श मैं प्राप्त करुँ, ऐसी कृपा करो !

हे प्रभु ! जो कोई जीव कल्याणक की दिव्यतम दिव्यताओं को समझते हैं, कल्याणकों की कल्याणकारिता को आत्मसात् करते हैं और कल्याणकों की मोक्षदायिता की आराधना करते हैं, वे जीव आपके जैसी सिद्धपद की शाश्वत रिद्धि सिद्धि को प्राप्त करते हैं !

प्रभु ! आपकी च्यवनावस्था की भावभरी आराधना से मेरी गर्भावस्था के अपचय और अगर्भावस्था के उपचय से मुझे परमपद की प्राप्ति हो ।

प्रभु ! आपके जन्म कल्याणक की भावभरी आराधनाओं के प्रभाव से मेरी जन्मावस्था के अपकर्ष और अजन्मावस्था के उत्कर्ष से मुझे परमपद की प्राप्ति हो !

प्रभु ! आपके दीक्षाकल्याणक की भावभरी आराधना के प्रभाव से मेरी भोगावस्था के विघटन तथा योगावस्था के संघटन से मुझे परमपद की प्राप्ति हो !

प्रभु ! आपके केवलज्ञान कल्याणक की भावभरी आराधना

के प्रभाव से मेरी अज्ञानावस्था के विसर्जन और सर्वज्ञावस्था के संसर्जन से मुझे परमपद की प्राप्ति हो।

प्रभु ! आपके निर्वाणकल्याणक की भावभरी आराधना के प्रभाव से मेरी सदेहावस्था के विनाश और अदेहावस्था के विकास से मुझे परमपद की प्राप्ति हो।

हे अनंत अरिहंत परमात्मा ! परमपदप्रदाता ऐसे आपके पाँचकल्याणकों की विविध आराधना से मेरे संसार की सर्वपर्यायमय अवस्थाओं का नाश हो ! संसारातीत मुक्ति की एक ही अवस्था प्रकट हो !

आत्मन् ! यदि हम अल्पकाल में मोक्षपद चाहते हैं तो हमें इस गिरनार के साथ प्रीति करनी पड़ेगी, जिससे आनेवाली चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर पद्मनाभ दादा का हमें संयोग हो और मात्र साधिक ८४ हजार वर्ष में हमारी आत्मा का निस्तार हो ! गिरनार के साथ प्रीति के कारण जो भक्ति होगी वह मुक्ति के द्वार तक पहुंचाएगी। यदि प्रथम तीर्थंकर के समय की गाड़ी छूट जाये तो एक के बाद एक चौबीसों प्रभु की परमपद की गाड़ी यहीं से जानेवाली है। इसलिए हमारी भी उसमें कहीं न कहीं तो जगह हो जाएगी।

इस गिरि के आलंबन से हमारे जीवन में पापों को पूर्णविराम देकर आत्मा को ऊर्ध्वगामी बनाने की आराधना में ही लक्ष्य रहे, यही प्रभु से प्रार्थना !

गिरनार स्तुति सरिता

(राग : एवा प्रभु अरिहंतने...)

१. बे तीर्थ जगमां छे वडा ते, शत्रुंजयने गिरनार,
एक गढ समोसर्या आदिजिनने, बीजे श्री नेमि जुहार,
ए तीर्थ भक्तिना प्रभावे, थाये सौनो बेड़ोपार,
ए तीर्थराजने वंदता, मुज जन्म आज सफल थयो...

२. देवांगनाने देवताओ, जेनी सेवना झंखता,
मळी तीर्थ कल्पो वळी, जेना गुणलां गावतां,
जिनो अनंता जे भूमिए, परमपदने पामतां,
ए गिरनारने वंदता, मुज जन्म आज सफल थयो...

३. पशुओना पोकार सुणी, करुणा दिलमां आणतां,
रडती मेली राजीमतिने, विवाहमंडप त्यागतां,
संयमवधू केवलश्री, शिवरमणीने परणतां,
ए नेमिनाथने वंदता, मुज जन्म आज सफल थयो...

४. शिवानंदने परणवाना, मनोरथोने सेवतां,
प्रितमतणा पगलेपगले, गिरनारे संयम साधतां,
नेमथी वरसो पहेलां, मुक्तिपदने पामतां,
ए राजीमतिने वंदता, मुज जन्म आज सफल थयो...

५. कनक कामिनीने त्यागी, नेमजी पधारतां,
संयमग्रही संग्राम मांडी, घातीकर्म ज्यां चूरतां,

राजीमति दीक्षा ग्रही, शिवशर्मने ज्यां पामतां,
ए सहसावनने वंदता, मुज जन्म आज सफल थयो...

६. अवसर्पिणीमां सौ प्रथम, अरिहंतपदे जे शोभतां,
तीर्थतणी रचना करी, युगलाधर्म निवारतां,
अज्ञानीना तिमिर टाळी, ज्ञानज्योत जलावतां,
ए आदिनाथने वंदता, मुज जन्म आज सफल थयो...

७. कमठतणा उपसर्गोने, समभावथी जे झीलतां,
जे बिंबथी अमिरसतणा, झरणाओ सहेजे झरतां,
जेना प्रगटप्रभावथी, भविना दुःखड़ा भांगतां,
ए अमिझरापार्श्व वंदता, मुज जन्म आज सफल थयो...

८. नेमसमीपे व्रतग्रही, गुफामां ध्यानने ध्यावतां,
अशुभकर्मना उदयथी जे, व्रतमां डगमग थावतां,
प्रतिबोध पामी राजुल वयणे, मोक्षमारग साधतां,
ए रहनेमिने वंदता, मुज जन्म आज सफल थयो...

९. बालब्रह्मचारी नेमनाथ, परमपद ज्यां पामतां,
भविजनो मळीने भक्तिकाजे, पगलां ने त्यां ठावतां,
परतीर्थीओ जेने वळी, दत्तात्रय नामे पूजतां,
ए पांचमीटूंकने वंदता, मुज जन्म आज सफल थयो...

गिरनार वंदनावली

(राग : अरिहंत वंदनावली - मंदिर छो मुक्ति...)

१. बे तीर्थ जगमां छे वडा ते, शत्रुंजयने गिरनार,
एक गढ समोसर्या आदिजिनने, बीजे श्री नेमि जुहार,
ए तीर्थ भक्तिना प्रभावे, थाये सौनो बेड़ोपार,
ए तीर्थराजने वंदता, पापो बधां दूरे जतां... (२)

२. गत चोविसीमां जे भूमिए, सिद्धिवधू जिन दस वर्या,
ने आवती चोवीसी मांहे, सौ जिनो शास्त्रे कह्यां,
ए गिरनारना गुणघणा पण, अंशथी शब्दे वण्या,
ए गिरनारने वंदता, पापो बधां दूरे जतां... (२)

३. नंदभद्र, गिरनार, स्वर्णगिरि, ने शाश्वतो रैवत वळी,
उज्जयंत, कैलास एम छ आरे नामो धरी,
उत्सर्पिणीए शतधनुथी, छत्रीस योजन बनी,
ए गिरनारने वंदता, पापो बधां दूरे जतां... (२)

४. अप्सराओ ऋषिओ वळी, सिध्धपुरुषने गांधर्वो,
आ तीर्थकेरी सेवा काजे, आवतां सौ भविजनो;
घेरबेठां पण तस ध्यान घरतां, चोथे भवे शिवसुख लहो,
ए गिरनारने वंदता, पापो बधां दूरे जतां... (२)

५. त्रण त्रण कल्याणक भाविकाळे, नेमिजिनना ज्यां जाणी,
भरतेश्वरे रचना करावी, सुरसुंदर मंदिर तणी;
शोभती जेमां प्रभुनी, मणिमय मूरत घणी,
ए गिरनारने वंदता, पापो बधां दूरे जतां... (२)

६. अज्ञान टाळी भव्यजनना, ज्ञानज्योत जलावतां,
''स्वस्तिकावर्तक'' प्रासादने, भरतचक्री करावतां,
जेमां माणिक्य रत्नने वळी, स्वर्णबिंबो भरावतां,
ए गिरनारने वंदता, पापो बधां दूरे जतां... (२)

७. प्रासादनी प्रतिष्ठा काजे, गणधरो पधारता,
हर्ष भरेलां इन्द्रो पण, ऐरावण पर आवतां;
हस्तिपादे भक्तिकाजे, गजपद कुंड करावतां,
ए गिरनारने वंदता, पापो बधां दूरे जतां... (२)

८. त्रण भुवननी सरितातणा, सुरभि प्रवाह ते झीलतां,
जे जल फरसतां आधि-व्याधि, रोग सौना क्षय थतां;
ते जल थकी जिन अर्चता, अजरामरपद पामतां,
ए गिरनारने वंदता, पापो बधां दूरे जतां... (२)

९. देवताओ उर्वशीओ, यक्षोने विद्याधरो,
वळी गांधर्वो स्वसिद्धि काजे, तीर्थनी स्तवना करे;
ज्यां सूर्य-चंद्र विमान विरामी, हर्षथी स्तवना करे,
ए गिरनारने वंदता, पापो बधां दूरे जतां... (२)

१०. ज्यां देवांगनाना गानमां, आसक्त मयूरो नाचतां,
पवने पूरेल वेणुने, झरणांओ सूरने पूरतां;
ज्यां वायुवेगे विविधवृक्षो, नृत्य करतां भासतां,
ए गिरनारने वंदता, पापो बधां दूरे जतां... (२)

११. गुफाओमां साधको वळी, मंत्रोने आराधतां,
नवरंध्रोथी प्राणोने रोधि, परमनुं ध्यान ध्यावतां;
वळी विविध योगासनो वडे जे, योग साधना साधतां,
ए गिरनारने वंदता, पापो बधां दूरे जतां... (२)

१२. स्वर्णमणि माणिक्यरत्नो, सृष्टिने अजवाळतां,
दिवसे मणीरत्नो वळी औषधो रात्रे दीपतां;
ने कदलीओना ध्वजपताका, अनंत वैभवे शोभतां,
ए गिरनारने वंदता, पापो बधां दूरे जतां.... (२)

१३. आ तीर्थ भूमिए पक्षीओनी, छाया पण आवी पडे,
भवभ्रमण केरां दुर्गतिना, बंधनो तेनां टळे;
महादुष्टने वळी कुष्टरोगी, सर्वसुख भाजन बने,
ए गिरनारने वंदता, पापो बधां दूरे जतां... (२)

१४. आ तीर्थपर जे भावथी, अल्प धर्म पण करे,
आ लोकथी परलोक वळी, ते परमलोकने जई वरे;
ते तीर्थनी सेवा थकी, फेरा भवोभवना टळे,
ए गिरनारने वंदता, पापो बधां दूरे जतां... (२)

१५. नेम आव्या जान जोडी, परणवा राजुल घरे,
पशुओतणा पोकार सुणी, ते नेमजी पाछा फरे;
वैराग्यना रंगे रमेने, शिववधू मनने हरे,
ए गिरनारने वंदता, पापो बधां दूरे जतां... (२)

१६. सहसावने वैभव त्यजी, दीक्षा ग्रहे राजुलप्रभु,
युद्ध आदरी चोपनदिने, कर्म करे ते लघु;
आसो अमासे चित्रा काळे, कैवल्य पामे जगविभु,
ए गिरनारने वंदता, पापो बधां दूरे जतां... (२)

१७. सुरवृंद नाचे हर्ष साथे, भावथी त्रणगढ रची,
वरदत्त - यक्षिणीवळी, दशार्हने तसश्री मळी;
तीर्थथापनाने करी, गोमेध यक्ष अंबा भळी,
ए गिरनारने वंदता, पापो बधां दूरे जतां... (२)

१८. सागर प्रभुना काळमां, अतीत चोविसी मही,
ब्रह्मेन्द्रे निजभावि जाणी, नेमनी प्रतिमा भरी;
गणधर प्रभुना ए थया, वरदत्त शिववधू धणी,
ए गिरनारने वंदता, पापो बधां दूरे जतां... (२)

१९. आर्य-अनार्य पृथ्वी पर, प्रतिबोधतां विचरण करे,
निर्वाणकाळ समीप जाणी, रैवते प्रभु पाछा फरे,
अनशनग्रही अषाढ मासे, शुभाष्टमे सिद्धि वरे,
ए गिरनारने वंदता, पापो बधां दूरे जतां... (२)

२०. अल्पमति मनमां धरीने, भाव अपार हैये भरी,
संवत सहस्त्र युगलने, संवरतणा वरसे वळी;
वर्षान्तमासे शुभ्रपडवे, शब्दो तणी गुंथणी करी,
ए गिरनारने वंदता, पापो बधां दूरे जतां... (२)

२१. गिरनार महिमा आज गायो, शत्रुंज्य महातमथी लई,
प्रेम-चंद्र-धर्म पसाये, हेम सूरोने ग्रही;
हर्षित बन्या नरनारी सौ, अद्‌भुत गरीमाने सुणी,
ए गिरनारने वंदता, पापो बधां दूरे जतां... (२)

करु नमन नेमि जिन चरणमां

१. प्रणमु प्रतिदिन प्रेम थी परमात्मा तारा बिंबने,
बाविसमो तुं जिनपति भवपार करजे तुं मने,
मुज प्राण तुं मुज त्राण तुं मुज जीवननो आधार तुं,
करुं नमन नेमि जिन चरणमां स्मरणमां रहेजो सदा.

२. गिरनार गिरि शणगार तुं, तुज धाम ए वखणाय छे,
शत्रुंजय भमती महीं तुं भावथी पूजाय छे,
अर्बुदगिरिए लुणीग वसिही मंदिरे तुज वास छे,
करुं नमन नेमि जिन चरणमां स्मरणमां रहेजो सदा.

३. गुजरात, राजस्थान ने सौराष्ट्र तुज प्रदेश छे,
मालवप्रदेशे तीर्थ आस्था ताहरु सविशेष छे,
रांतेज, वालम नाडलाई तीर्थपति पण तुं ज छे,
करुं नमन नेमि जिन चरणमां स्मरणमां रहेजो सदा.

४. भोरोल तीर्थे भव्य प्रतिमा जोई मन मारुं ठरे,
बस बेसी जउं धरुं ध्यान तारुं भाव ते ज थया करे,
तुज श्यामवर्णी पापहरणी मूर्ति मुजने खूब गमे,
करुं नमन नेमि जिन चरणमां स्मरणमां रहेजो सदा.

५. महाब्रह्मचारी तुं विभु अद्‌भुत छे तारी कथा,
संसार फंदे ना फसायो राजीमती वरवा छतां,
तुज नाम मंत्र जपे शमी सह वासनाओ नी व्यथा,
करुं नमन नेमि जिन चरणमां स्मरणमां रहेजो सदा.

६. तुज द्रष्टि थी द्रष्टि मळे तो द्रष्टि दोष टळे बधा,
तुज मूर्तिमा मन जो भळे मन निर्विकारी बने तदा,
तुज स्पर्श थी महाब्रह्म नी सिद्धि सधाये सर्वदा,
करुं नमन नेमि जिन चरणमां स्मरणमां रहेजो सदा.

७. भगवान तुजने नीरखनारा निर्विकारी थाय छे,
भगवान तुजने वंदनारा वंदनीय बनी जाय छे,
भगवान तुजने भेटनारा भवथकी मुकाय छे,
करुं नमन नेमि जिन चरणमां स्मरणमां रहेजो सदा.

८. तुज मूर्तिना दर्शन प्रभु भवोभव मने मळता रहो,
तुज भक्ति नो अवसर प्रभु भवोभव मने मळतो रहे,
''मुक्तिकिरण'' नी ज्योत भवोभव हृदय मां जलती रहो,
करुं नमन नेमि जिन चरणमां स्मरणमां रहेजो सदा.

संतप्त आ संसारमां...

१. संतप्त आ संसारमां करुणानी जलधारा तमे,
चंदा तमे सूरज तमे तपतेजधर तारा तमे,
सहु जीवथी न्यारा तमे सहु जीवना प्यारा तमे,
हे नाथ ! हैयु दई दीधु हवे आजथी मारा तमे...

२. मुज पुण्यनी पुष्टि तमे संकल्पनी मुष्टि तमे,
भव ग्रीष्म तापे तप्त जीवो पर अमीवृष्टि तमे,
आ विश्वनी हस्ती तमे मुज मनतणी मस्ती तमे,
मुज नेत्रनी दृष्टि तमे मुज स्वप्ननी सृष्टि तमे...

३. हर्ष भर्या हैया तमे गुणप्रीतना सैया तमे,
शुभ जीवनकेरी साधनाना रथतणा पैया तमे,
दोषोतणा वनमां भमताना छो रखवैया तमे,
भवसागरे नैया तमे, अम बाळनी मैया तमे...

४. निष्कारणे भ्राता तमे संकट थकी माता तमे,
महा पंथना दाता तमे, महारोगमां साता तमे,
जेनुं न थातु कोई जगमां तेहना थाता तमे,
शुं कहुं संर्पूण षट्कायो तणी माता तमे...

५. औचित्य केरुं कद तमे जीवो प्रति गद्गद् तमे,
सर्वोच्च धरियुं पद तमे वळी तेहमां र्निमद तमे,
करुणामहीं बेहद तमे शुभता तणी सरहद तमे,
आतमतणा दुःसाध्य आ भव रोगनुं औषध तमे...

६. ज्यां कार्य कोई अटकी पडे त्यां कार्यसाधक पळ तमे,
छो निर्बळोनुं बळ तमे संकट समय सांकळ तमे,
बनी वृक्ष लीलाछम तमारा आंगणे ऊभा अमे,
बस दर्शने भीनुं बने मन अेहवुं झाकळ तमे...

७. करुणा महादेवी तणा सोहामणा नंदन तमे,
संसारकेरा रण मही आनंदनी छो क्षण तमे,
कषाय केरी उग्रताअे प्रज्वळता चैतन्यने,
बस नाम लेतां ठारतुं प्रभु अेहवुं चंदन तमे...

८. मार्गस्थ जीवो काज भवनिस्तारणुं तरणुं तमे,
अध्यात्मना गुण बागमां मन मोहतुं हरणुं तमे,
मुज पुण्यनुं भरणुं तमे मुज प्रेमनुं झरणुं तमे,
आ विश्वना चोगानमां छो शाश्वतु शरणुं तमे...

गरवा गिरि गिरनारने होजो...

१. जे अमर शत्रुंजयगिरिनुं, शिखर पंचम शोभतुं,
सोवनमयी सोरठ धरा पर, तिलकसम जे दीपतुं;
उत्तुंग जेना शिखर पर छे नेमिजिनना बेसणा,
गरवा गिरि गिरनार ने होजो सदा मुज वंदना

२. जे परम उत्तम श्रृंग पर, श्री नेमिजिन दीक्षित बन्यां,
केवल करी केई जीव तारी ने प्रभु शिव संचर्या,
चोवीशे भावी जिनवरा ज्यां पामशे सुख शाश्वता,
गरवा गिरि गिरनार ने होजो सदा मुज वंदना

३. जेने सदा सेवी रह्यां, सुर असुरने नरपति अहो !
त्रण कालमां त्रण लोकमां, यश जेहनो गाजी रह्यो,
रैवतगिरि, कैलास वळी नंदभद्र नामो गाजतां,
गरवा गिरि गिरनार ने होजो सदा मुज वंदना

४. सुरलोकथी पण अधिक सोहे, पृथ्वी आ गिरनारनी,
ज्यां पुनित पगले संचर्या, शिवादेवी नंदन जगपति,
राजुल पण विरति वरीने पामी मुक्ति संपदा,
गरवा गिरि गिरनार ने होजो सदा मुज वंदना

५. गिरनारना सांनिध्यमां, पामे सहु शाता बहु,
गिरनारना सद्ध्यानथी, पापो टळे संचित सहु,
गिरनारना आलंबने, उज्वळ बने छे आतमा,
गरवा गिरि गिरनार ने होजो सदा मुज वंदना

६. अन्यत्र पण शुभ भावथी जे, ध्यान गिरिवरनुं धरे,
चोथे भवे सवि कर्म टाळी, ते भवि शिवपद वरे,
महिमा अपार गिरितणो, शब्दो महीं कहेवाय ना,
गरवा गिरि गिरनार ने होजो सदा मुज वंदना

७. पावन करे तन मन भविकजन, आ गिरिना स्पर्शथी,
आतम बने पावन अहो, श्री नेमिजिनना दर्शथी,
त्रणयोग सफळ बने, गिरिने गिरिपति वंदता,
गरवा गिरि गिरनार ने होजो सदा मुज वंदना

८. गिरनारना शुभ दर्शने, नयना सफल मारा थयां,
गिरनारनी यात्रा करी, गात्रो सफल मारा थयां,
श्री नेमि जिनवर ! आपो मुजने, परम ब्रह्मनी संपदा,
गरवा गिरि गिरनार ने होजो सदा मुज वंदना

हे नाथ ! निर्मळता तणुं वरदान मुजने आपजो...

१. आ जगतना कैं भूपना पण रुप ज्यां पाछा पडे,
देवो तणा अधिराजना तनुतेज ज्यां झांखा पडे,
रुप युक्त रागे मुक्त प्रभुवर ! अेक विनती सांभळो,
हे नाथ ! निर्मळता तणुं वरदान मुजने आपजो...

२. सौंदर्यने प्रसरावता परमाणुओ छे आ जगे,
जाणे जगतमां तेटला प्रभुदेहमां जे झगमगे,
प्रभु ! आप समको रुप नहीं मुज रुपरतिने टाळजो,
हे नाथ ! निर्मळता तणुं वरदान मुजने आपजो...

३. तीर्थो तणी पर्वो तणी लज्ञा प्रभु मे धरी नथी,
शुभ योग ने स्पर्श्या छतां शुभता मे मनमां धरी नथी,
केवळ क्रियाओ करी रह्यो हवे तेहनुं फळ आपजो,
हे नाथ ! निर्मळता तणुं वरदान मुजने आपजो...

४. तव दर्श केरु स्पर्श केरु निमित लई अती निर्मळु,
नथी छुटती आ पाप-ग्रंथी केम करी पाछो वळु,
आ जीव केरी अवदशा ने कृपाळु देव निवारजो,
हे नाथ ! निर्मळता तणुं वरदान मुजने आपजो...

५. उपसर्ग करनारा जीवोने पण क्षमा प्रभु दई दीधी,
आसक्त ने वैराग्य केरी स्पर्शना प्रभु दई दीधी,
स्तवना करी ने याचता आ बाळनुं मन राखजो,
हे नाथ ! निर्मळता तणुं वरदान मुजने आपजो...

६. भले रुपने महाभाग्य आप तणुं अवरने आपजो,
विश्वातिशायी प्रभाव जे ते पण अवरने आपजो,
करजोडी करगरता गरीबने पण कंईक प्रभु ! आपजो,
हे नाथ ! निर्मळता तणुं वरदान मुजने आपजो...

७. जो मोहपीडा उपशमे प्रभु ! आप त्यारे पधारशो,
उपकार फळ दीसे नही करुणा किमर्थ वहावशो,
कल्याण केरो काळ जाणी नाथ ! हाथ पसारजो,
हे नाथ ! निर्मळता तणुं वरदान मुजने आपजो...

८. मनना मलीन विचारनो कोई अंत देखातो नथी,
काया तणी शुभ करणीनो कांई अर्थ देखातो नथी,
हवे अेक औषध आप तारक प्रार्थना अवधारजो,
हे नाथ ! निर्मळता तणुं वरदान मुजने आपजो...

९. तव नयन मांथी निखरता निर्मळ किरण झील्या करुं,
ने निर्विकारदशा तणो हरपळ प्रभु ! अनुभव करुं,
मुजने करावी शुद्धिनुं महास्नान पछी शणगारजो,
हे नाथ ! निर्मळता तणुं वरदान मुजने आपजो...

निरखुं तने ? तुजने स्तवुं ?...

१. निरखुं तने ? तुजने स्तवुं ? पूजुं तने ? तुजने स्मरुं ?
धरुं ध्यान ? के वचनो सुणुं ? हुं शुं करुं ? हुं शुं करुं ?
उमटी पड्यां छे नाथ ! अगणित हृदयमां स्पंदन मने !
हे नाथ ! हे आनंदघन ! वंदन तने वंदन तने.

२. मनने बनावे वासनामय रुप ते देखाय ना !
मनने बनावे गुणविमुख जे दोष ते देखाय ना !
प्रभु ! आव, नयणे आव, अेवुं आंजी दे अंजन मने !
हे नाथ ! नयनामृत झरण ! वंदन तने वंदन तने !

३. तुज चरणमां तुज शरणमां तुज स्मरणमां जे सांपडे,
तुज ध्यानमां गीतगानमां तुज वचनमां जे सांपडे,

अेवी शीतलता ना कदि आपी शक्युं चंदन मने !
हे नाथ ! उपशम-मेघ तुं ! वंदन तने वंदन तने !

४. सांनिध्य तारुं जोईअे, न मळे मने प्रियजन भले,
तारुं शरण मळजो मने, ना पामुं सुखसाधन भले,
बस जोईअे तारी कृपा, ना जोईअे कंचन मने,
हे नाथ ! मुज सर्वस्व तुं ! वंदन तने वंदन तने.

५. तुं क्यां अने हुं क्यां विचारुं आज अेवुं नाथ ! हुं,
सुखना शिखर पर तुं रहे, हुं दुःखनी खीणमां रहुं !
तुं सद्‌गुणी हुं निर्गुणी तुं मुक्त छे बंधन मने !
हे नाथ ! सौथी महान तुं ! वंदन तने वंदन तने !

६. जे गोपीने घनश्यामनुं, हनुमानने श्रीरामनुं,
जे मोरने छे मेघनुं नदीने महासागरतणुं,
अेथी अधिक हे हृदयस्वामी ! तारुं आकर्षण मने !
हे नाथ ! वीतरागी प्रभु ! वंदन तने वंदन तने !

७. हे नाथ ! तुं छे हृदयमां जिम सूर्य झळके गगनमां !
छीपमां झळाहळ मोती चमके फूल महेंके चमनमां !
महासागरे रत्नो झगमगे कल्पतरु नंदन वने !
हे नाथ ! श्वासो श्वास तुं ! वंदन तने वंदन तने !

८. आखा जगतने जीतनारा दोष तें जीत्या प्रभु !
आ विश्वने संतापनारा कर्म संहार्या प्रभु !

हे विश्वविजयी ! विश्वनायक ! नाथ ! शिवानंदन !
हे नाथ ! शिवानंदन प्रभु ! वंदन तने वंदन तने !

९. रणमां सरोवर तुं प्रभु ! अंधकारमां महादीप तुं !
कलिकालमां तुं कल्पतरु महासागरे महाद्वीप तुं !
आ अखिल विश्वे हे प्रभु ! तुं अेक आलंबन मने !
हे नाथ ! मुज सौभाग्य तुं ! वंदन तने वंदन तने !

संसारनी निःसारता निर्वाणनी...

१. संसारनी निःसारता निर्वाणनी रमणीयता,
क्षणक्षण रहे मारा स्मरणमां धर्मनी करणीयता,
सम्यक्त्वनी ज्योति हृदयमां झळहळे श्रेयस्करी,
प्रभु ! आटलुं जनमोजनम देजे मने करुणा करी.

२. सवि जीव करुं शासनरसी आ भावना हैये वहुं,
करुणाझरणमां रातदिन हुं जीवनभर वहेतो रहुं,
शणगार संयमनो सजुं झंखुं सदा शिवसुंदरी,
प्रभु ! आटलुं जनमोजनम देजे मने करुणा करी.

३. गुणीजन विशे प्रीति धरुं, निर्गुण विशे मध्यस्थता,
आपत्ति हो, संपत्ति हो, राखुं हृदयमां स्वस्थता,
सुखमां रहुं वैराग्यथी, दुःखमां रहुं समता धरी,
प्रभु ! आटलुं जनमोजनम देजे मने करुणा करी.

४. संकट भले घेराय ने वेराय कंटक पंथमां,
श्रद्धा रहो मारी सदा जिनराज ! आगमग्रन्थमां,
प्रत्येक पळ प्रत्येक स्थळ हैये रहे तुज हाजरी,
प्रभु ! आटलुं जनमोजनम देजे मने करुणा करी.

५. तारां स्तवन गावा हंमेशा वचन मुज उल्लसित हो,
तारां वचन सुणवा हमेशां श्रवण मुज उल्लसित हो,
तुजने निरखवा आंख मारी रहे हंमेशां ब्हावरी,
प्रभु ! आटलुं जनमोजनम देजे मने करुणा करी.

६. संसारसुखनां साधनोथी सतत हुं डरतो रहुं,
धरतो रहुं तुज ध्यान ने आंतरव्यथा हरतो रहुं,
करतो रहुं दिनरात बस तारा चरणनी चाकरी,
प्रभु ! आटलुं जनमोजनम देजे मने करुणा करी.

७. धर्मे दीधेलां धन-स्वजन हुं धर्मने चरणे धरुं,
श्री धर्मनो उपकार हुं क्यारेय पण ना वीसरुं,
हो धर्ममय मुज जिंदगी, हो धर्ममय पळ आखरी,
प्रभु ! आटलुं जनमोजनम देजे मने करुणा करी.

८. मनमां स्मृति, मूर्ति नयनमां, वचनमां स्तवना रहे,
मुज रक्तना हर बुंदमां जिनराज ! तुज आज्ञा वहे,
पहोंचाडशे 'मोक्षे' मने जिनधर्म - अेवी खातरी,
प्रभु ! आटलुं जनमोजनम देजे मने करुणा करी.

गिरनार मंडण नेमिजिनने...

१. जे प्रभु तणा संस्मरणथी, संताप सवि मनना टळे,
जे प्रभु तणा दर्शन थकी, दुःख दुरित दर्द दूरे टळे,
जे प्रभु तणा वंदन थकी, विरमे विषयने वासना,
गिरनार मंडण नेमिजिनने, भावथी करुं वंदना.

२. रमणीय राजुल जेवी नारी त्यजी दीधी पळवारमां,
रमणीनुं रुपविरुप लाग्युं, पशु तणा पोकारमां,
राजीमतीनुं शुं थशे, क्षण मात्र नवि करी कल्पना...
गिरनार मंडण नेमिजिनने, भावथी करुं वंदना...

३. तोरण सुधी आवीने पण, पाछा वळ्या जीव प्रेमथी,
निर्दोष पशुओनी कतल, जोवाय केम प्रभु नेमथी,
अंतर बने करुणा भीनुं, बस आटली मुज प्रार्थना
गिरनार मंडण नेमिजिनने, भावथी करुं वंदना...

४. जे भोगना काळे अनुपम, योगने साधी गया,
वनिताना संगम काळमां, विरति शुं प्रीत बांधी गया,
महासत्त्वशाळी शिरोमणी, प्रभु सत्त्वनी करुं याचना...
गिरनार मंडण नेमिजिनने, भावथी करुं वंदना...

५. निष्काम निर्मल निर्विकारी, नेमिनाथ नमुं सदा,
चाहु हुं उज्जवल जीवनमां, लागे कलंक नहीं कदा,
अविकारता रहो दृष्टिमां, बस आटली मुज प्रार्थना.
गिरनार मंडण नेमिजिनने, भावथी करुं वंदना...

६. अंजनसरिखा पण निरंजन, राग द्वेष विनाशथी
छो श्याम पण जीवन तमारुं, शोभे शुभ प्रकाशथी
केवो विरोधाभास, तारा स्वरुपनी शी कल्पना...
गिरनार मंडण नेमिजिनने, भावथी करुं वंदना...

७. रैवतगिरिना शिखर पर, प्रभु मुकुट मणी सम ओपतां
मनोहारिणी मुद्राथी भविमां, बोधिना बीज ओपता,
हैयुं छे हर्षविभोर आजे, हवे न रही कोई झंखना...
गिरनार मंडण नेमिजिनने, भावथी करुं वंदना...

८. उत्तंगगिरि गिरनार नजरे दूरथी देखाय ज्यां,
उभराय आनंद रोमे रोमे नयन बे छलकाय त्यां,
मळशे हवे दर्शन प्रभुना, श्वासे श्वासे भावना...
गिरनार मंडण नेमिजिनने, भावथी करुं वंदना...

श्री नेमिनाथ ! जिनेन्द्र !

१. गिरनारगिरि पावन कर्यो महिमा अने गरिमा वडे !
भोरोलने भासित कर्युं प्रभुता अने प्रतिभा वडे !
मुज हृदयने सद्भाव ने सद्गुण वडे शणगारजो !
हे नेमिनाथ ! जिनेन्द्र ! मारी प्रार्थना स्वीकारजो !

२. महाशंख फूंकी शत्रुओनी शक्तिओ सौ संहरी,
रणभूमि पर श्रीकृष्णना महासैन्यनी रक्षा करी,
बस आ रीते हे नाथ ! आंतरशत्रु मुज संहारजो !
हे नेमिनाथ ! जिनेन्द्र ! मारी प्रार्थना स्वीकारजो !

३. श्रीकृष्णनी पटराणीओ लोभाववा तमने मथी,
त्यारेय अंतरमां तमारा कामज्वर आव्यो नथी !
हे कामविजयी ! नाथ ! मारो कामरोग निवारजो !
हे नेमिनाथ ! जिनेन्द्र ! मारी प्रार्थना स्वीकारजो !

४. राजीमती भूली गई ते स्नेह संभार्यो तमे !
राजीमतीनो वणकहो आत्मा प्रभु ! तार्यो तमे !
हुं रोज संभारुं, मने क्यारेक तो संभारजो !
हे नेमिनाथ ! जिनेन्द्र ! मारी प्रार्थना स्वीकारजो !

५. पोकार पशुओनो सुणी सहुने तमे प्रभु ! उद्धार्या
दीक्षा लई केवल वरी बहुने तमे प्रभु ! उद्धार्या
मारी विनवणी छे हवे मुजने प्रभु ! उद्धारजो !
हे नेमिनाथ ! जिनेन्द्र ! मारी प्रार्थना स्वीकारजो !

६. स्वामी ! तमे सेवकजनो तार्या बहु तेथी कहुं,
आ दुःखमय संसारमां रझळी रह्यो छुं नाथ !
हुं विनति करुं छुं, करगरुं छुं, नाथ ! मुजने तारजो !
हे नेमिनाथ ! जिनेन्द्र ! मारी प्रार्थना स्वीकारजो !

७. श्यामल छबि प्रशमार्द्र नयनो रुप आ रळियामणुं !
मुखडुं मनोहर आकृति रमणीय स्मित सोहामणुं !
आ सर्व अंतिम समयमां मुज नयनमां अवतारजो !
हे नेमिनाथ ! जिनेन्द्र ! मारी प्रार्थना स्वीकारजो !

८. हे नाथ ! तृष्णा अग्निए जनमोजनम बाळ्यो मने,
नेहाळ नयनोमां डूबाडी प्रभु ! तमे ठार्यो मने !
छे झंखना बस एक के मुजने भवोभव ठारजो !
हे नेमिनाथ ! जिनेन्द्र ! मारी प्रार्थना स्वीकारजो !

९. तमने प्रभु ! पामी पळे पळ परमशाता अनुभवुं !
हे नाथ ! तमने छोडीने बीजे नथी मारे जवुं !
मारे जवुं छे 'मोक्ष'मां मुज मार्गने अजवाळजो !
हे नेमिनाथ ! जिनेन्द्र ! मारी प्रार्थना स्वीकारजो !

उपकारकारी नेमिवरने...

१. मळवुं छे तुजने नाथजी, जेम ज्योतने ज्योति मळे,
भळवुं छे मुजने तुज महीं, जेम बिंदु सिंधुमां भळे,
विलंब ना करशो प्रभुजी, तडपी रह्यो छुं तुम विना,
उपकारकारी नेमिवरने, भावथी करुं वंदना...

२. प्रति रोममां, प्रति श्वासमां, प्रति पलकमां, प्रभु तुं ज छे,
आ सृष्टिमां करुं दृष्टि ज्यां, ते दृश्यमां प्रभु तुं ज छे,
प्रति अणु अने परमाणुमां, संभळाय सूर तुज नामना,
उपकारकारी नेमिवरने, भावथी करुं वंदना...

३. संस्मरणो ज्यां ताजा करुं, रोमांचथी मन माहरुं,
दिन-रात-सांज-सवारमां, बस स्मरण करतुं ताहरुं,
हती गाढ तुज-मुज लागणी, निर्मोही बनी विसरायना,
उपकारकारी नेमिवरने, भावथी करुं वंदना...

४. उपसर्गो मारा जीवनमां, अनुकूल के प्रतिकूल हो,
आशिष देजो डगमगुना, फुल के भले शूल हो,
मुज वेलडी सम आतमानो, तुम थकी उद्धार छे,
उपकारकारी नेमिवरने, भावथी करुं वंदना...

५. मुज जीवननी संध्या ढळे, त्यारे स्मरणमां आवजो,
समभाव मारो टकावीने, नवकार याद करावजो,
हवे मृत्युनो पण भय नथी, तुम नामनो जयकार छे,
उपकारकारी नेमिवरने, भावथी करुं वंदना...

६. गिरनार तारा दर्शथी, हुं भव्य छुं समजाय छे,
मने मुक्ति मळशे निकटमां, विश्वास एवो थाय छे,
रैवतगिरि तुज नाम छे, मम जन्म-मरण निवारजे,
गिरनार वंदी विनवुं, मुज आतमाने तारजे...

हे नेमजिन मारा हृदयमां...

१. राजीमती तमने मनावा नाथ वलवलती हती,
तो ये तमे संयमतणा संकल्प थी डग्या नथी,
हे सत्त्वमूर्ति सत्त्व अे आ सत्त्वहीन ने आपजो,
हे नेमिजिन मारा हृदयमां शौर्यरस जन्मावजो...

२. जे सत्त्व आराधी तमे राजीमती छोडी गया,
जे सत्त्व साधी विषयनी सहु वासना तोडी गया,
ते सत्त्वनुं प्रतिबिंब मारा जीवनपट पर पाडजो,
हे नेमिजिन मारा हृदयमां शौर्यरस जन्मावजो...

३. तोरण समय पोकार पशुओनी सुणी स्वामी तमे,
छोडी बधुं पलवारमां पहोंची गया सहसावने,
मुजमाय अेवुं त्यागसत्त्व हवे प्रभु विकसावजो,
नेमिजिन मारा हृदयमां शौर्यरस जन्मावजो...

४. तव जीवनमां विषयो-विकारो नाथजी अेके नथी,
हुं शुं कहुं मारा जीवनमां अे विना कशुंये नथी,
विनवुं हवे मुजमां अनासक्ति ज्वलंत जगावजो,
हे नेमिजिन मारा हृदयमां शौर्यरस जन्मावजो...

५. हुं ईन्द्रियोना संगमां दिनरात स्वामी राचतो,
अेनो नचाव्यो नाच हुं घेलो बनीने नाचतो,
ईन्द्रिय विजयनो चांदलो मुज भाल पर चमकावजो,
हे नेमिजिन मारा हृदयमां शौर्यरस जन्मावजो...

६. जेने बनी परवश अनंता जीव दुर्गति मां पड्या,
जेने करी स्व-वश अनंता जीव सिद्धिशिखर चढ्यां,
वशीकरण करवा मनतणुं कोई मंत्र रुडो आपजो,
हे नेमिजिन मारा हृदयमां शौर्यरस जन्मावजो...

७. हरिसैन्य पर ज्यारे जरासंघे जराओ पाथरी,
तप साधना त्यारे बतावीने तमे रक्षा करी,
मुजनेय मोहजरा सतावे को उपाय बतावजो,
हे नेमिजिन मारा हृदयमां शौर्यरस जन्मावजो...

८. गोमेध ने मा अंबिकाने चरण सेवा दई दीधी,
वळी धार सज्जन आदिने प्रभु तीर्थ सेवा दई दीधी,
अेवा ज रुडा अवसरो मुजनेय स्वामी आपजो,
हे नेमिजिन मारा हृदयमां शौर्यरस जन्मावजो...

धन्य छे...

१. कलिकाळ मां तारणतरण गिरनार गिरिवर धन्य छे,
नेमिनाथ ने भेटाडती सोपान श्रेणी धन्य छे,
दादा सुधी पहोंचाडनारा पृथ्वीकाय ने धन्य छे,
प्रत्येक अणुपरमाणु ने गिरनार रज ने धन्य छे.

२. यात्रामां शाता अर्पनारो समीर शीतल धन्य छे,
मुज मार्ग ने अजवाळनारा रवि किरण ने धन्य छे,
तडके श्रमित ने शांति देती मेघमाळा धन्य छे,
क्षणभर विसामो आपता विश्रांति स्थळ ने धन्य छे.

३. यात्रा मां आलंबन थतां सहयात्रिको ने धन्य छे,
उल्लास उर मां पूरता वातावरण ने धन्य छे,
यात्रा मां आपे साथ एवी कायशक्ति धन्य छे,
प्रभात प्रहर ने पळ परम यात्रातणी अति धन्य छे.

४. गिरनार गिरि आरोहनारा पदयुगल ने धन्य छे,
प्रभु नेमिनाथ ने निरखनारा नेत्रयुगल ने धन्य छे,
अहो भावथी अवनत थनारा शीर्ष ने अति धन्य छे,
अंजलिबद्ध प्रणाम करता करयुगल ने धन्य छे.

५. गद्-गद् स्वरे गुणगान गाता कंठ ने पण धन्य छे,
भक्ति थी स्फुरती शब्दमाला अर्पती मति धन्य छे,
शुभ भावकुंज ने धारनारा हृदय ने अति धन्य छे,
साधन बने निज साधनानुं देह ते अति धन्य छे.

६. जिनभवन निर्माणे समर्पित पुनित पुद्‌गल धन्य छे,
जिन बिंबरुपे पूज्यतम पाषाण खंड ने धन्य छे,
सर्जन थी करता भाववर्धन शिल्पीवृंद ने धन्य छे,
श्रमजीवीओना रक्तकण प्रस्वेद बिंदु ने धन्य छे.

७. देवालये सद्‌व्यय थनारा द्रव्य ने पण धन्य छे,
आसक्ति मूर्छा त्यागनारा दानवीरो धन्य छे,
नश्वरवसु सार्थक करे ते धर्मवीरो धन्य छे,
वसुधाविभूषण तीर्थना इतिहास सृष्टा धन्य छे.

८. प्रेरणा थी भाव जगाडनारा गुरुवरो ने धन्य छे,
पावन प्रतिष्ठाकारका सुसमर्थ सूरिवरो धन्य छे,
आशिष थी बळ आपनारा योगी पुरुषो धन्य छे,
निज साधनाथी तीर्थ महिमा वृद्धिकारक धन्य छे.

९. आ तीर्थनी करे स्पर्शना ते यात्रिकोने धन्य छे,
नव्वाणुं यात्राओ करे ते साधकोने धन्य छे,
पदयात्रा संघे आवनारा भाविको पण धन्य छे,
धन व्यय करी यात्रा करावे भावुको पण धन्य छे.

१०. आ तीर्थ काजे प्राण पण देनार वीरो धन्य छे,
शूरवीरता ने सत्त्वविभूषित नरवीरो ने धन्य छे,
आ वर्तमान देखाडनारा पूर्व पुरुषो धन्य छे,
महा साहसी ने पराक्रमी सात्त्विक सुगुण नर धन्य छे.

११. प्रभु मस्तके मनमोहती अभिषेक धारा धन्य छे,
भवी पापमळ ने पखाळनारी निरधारा धन्य छे,
नेमि नवण निरखी वरसती अश्रुधारा धन्य छे,
अभिषेकनुं उपकरण बननारा कळश ने धन्य छे.

१२. सद्‌भाग्य वर उपलब्धी करता क्षीरने पण धन्य छे,
वरक्षीर झरनारी सुमंगल धेनुमाता धन्य छे,
झांखी करावे सुरसदननी भक्तगणने धन्य छे,
ढोलक ने घंटारव सुमंजुल शंखनाद ने धन्य छे.

१३. सामिप्य प्रभुनुं पामती केसर कचोली धन्य छे,
नेमिनाथ अंगने फरसनारो सुरभि केसर धन्य छे,
प्रभु चरणे चढनारा सुगंधी कुसुमने पण धन्य छे,
पूजाथी पूज्य बनी जनारा पूजकोने धन्य छे.

१४. जिन भवनने महेकावनारी धुपधाणी धन्य छे,
प्रभु कांति पुंज रेलावनारी दीपमाळा धन्य छे,
प्रभु भक्तिमां उल्लसावनारी चामरावलि धन्य छे,
नेमिनाथ भक्तिमां समर्पित भक्त हृदयो धन्य छे.

१५. जिन दीक्षा केवल मोक्ष कल्याणक तणी भूमि धन्य छे,
उद्धार कल्याणक भूमिनो करावनारा धन्य छे,
त्यागी ने भीष्म तपस्वी श्री हिमांशुसूरीश्वर धन्य छे,
पुरुषार्थ जेमनो धन्य छे तपसाधना अति धन्य छे.

१६. सेवार्थे निज शिष्यो ने मोकलनार गुरुवर धन्य छे,
संयम शासन ने तीर्थना अनुरागी गुरुवर धन्य छे,
शूरवीर शासनना सुभट गुरु चंद्रशेखर धन्य छे,
सेवा समर्पणथी सुवासित शिष्यगणने धन्य छे.

१७. निर्दोष संयमना खपी गुरु-शिष्ययुगलने धन्य छे,
संयमबळे करे तीर्थ - कार्यो धर्मरक्षितजी धन्य छे,
गिरनारमय हर श्वास जेना योगीवर ते धन्य छे,
महासत्त्वशाळी हेमवल्लभ साधनाने धन्य छे.

१८. गिरनार तीर्थ मळ्यो मने मुज पुण्यने पण धन्य छे,
रंगायुं मनडुं भावमां प्रभुनी कृपा ने धन्य छे,
भावोनी पुष्टि करावतो गिरनार गिरिवर धन्य छे,
मुज धन्यताना मूळ नेमिनाथ दादा धन्य छे.

श्री शान्त सुधारस संवेदना (बार भावना)

१. दुर्ध्याननना महाअग्निथी भड भड सळगता जगतने,
शुभ भाव शान्त सुधारसे प्रभु ! भींजवी दीधुं तमे !
समता महासागर छलोछल ऊछळे तुज नयनमां,
आ प्रार्थनानी शुभ पळे ते अवतरो मुज हृदयमां.

भूमिका

२. स्वजनो शरीर समृद्धि साधन स्थिर नथी कंई पण अहीं,
अस्थिर सकल संसार आ, स्थिरता अहीं क्यांये नहीं,
संसार सुख तजवा हवे, शिवसुख हवे लागे सही,
शुभ भावना मुज हृदयमां वरसावजो पळ पळ प्रभु !

अनित्य

३. हो राय के हो रंक यम आगळ बधा लाचार छे,
ना शरण कोई मरण समये धर्म शरणाधार छे,
आ जन्म-मरण परंपरा तोडीश हुं निर्धार छे,
शुभ भावना मुज हृदयमां वरसावजो पळ पळ प्रभु !

अशरण

४. ज्यां जन्म जीवन ने मरण बध्धुं ज कर्माधीन छे,
संसारमां तो पण अहीं जीवो क्षणिक सुखलीन छे,
हुं मोक्ष झंखुं ज्यां सदा सर्वोच्चसुख स्वाधीन छे,
शुभ भावना मुज हृदयमां वरसावजो पळ पळ प्रभु !

संसार

५. आव्यो अहीं हुं अेक ने अहींथी जईश पण अेक हुं,
संबंधी सौ आ जन्मना छे, स्वार्थी छे, प्रभु ! शुं कहुं,
तुं अेक छे मारो प्रभु ! तारो थईने हुं रहुं,
शुभ भावना मुज हृदयमां वरसावजो पळ पळ प्रभु !

अेकत्व

६. आव्यो अहीं हुं खाली हाथे खाली हाथे जईश हुं,
अहींया मळ्या, अहीं रही जशे यश वैभवो स्वजनो सहु,
मारुं अहीं कांई नथी, तारे भरोसे हुं रहुं,
शुभ भावना मुज हृदयमां वरसावजो पळ पळ प्रभु !

अन्यत्व

७. जे पुद्गलो आजे सुगंधी स्वादु शीतल सरस छे,
काले हता गंदा, सडेला आवती काले हशे,
काया, चमकती चामडी पाछळ अशुचिग्रस्त छे,
शुभ भावना मुज हृदयमां वरसावजो पळ पळ प्रभु !

अशुचि

८. मिथ्यात्व अविरति मनवचन काया कषाय प्रमादवश,
थई जाउं त्यारे कर्म आत्मामां प्रवेशे अेकरस,
कर्मो करी नाखे प्रभु ! मारुं स्वरुप तहसनहस,
शुभ भावना मुज हृदयमां वरसावजो पळ पळ प्रभु !

आश्रव

९. आ कर्मने अटकाववा सम्यक्त्व अपनावीश हुं,
संयम क्षमा संतोष समता सरलता पामीश हुं,
स्वाध्याय सुकृतो धर्मध्याने जीवन अजवाळीश हुं,
शुभ भावना मुज हृदयमां वरसावजो पळ पळ प्रभु !

संवर

१०. कर्मो अनंतानंत आत्मामां भर्या तेने हवे
नाखीश तपनी आगमां डरवुं हवे नहीं पालवे,
करुणा करो जो प्रभु ! तमे बध्धुं असंभव संभवे,
शुभ भावना मुज हृदयमां वरसावजो पळ पळ प्रभु !

निर्जरा

११. ऋतुओ समयसर छलकती - आ धर्मनो ज प्रभाव रे,
सृष्टि रहे छे मलकती - आ धर्मनो ज प्रभाव रे !
सद्भावनाओ धबकती - आ धर्मनो ज प्रभाव रे !
शुभ भावना मुज हृदयमां वरसावजो पळ पळ प्रभु !

१२. आ चौद रज्जुलोक विश्व विशाळ छे केवुं अरे !
जीवो अनंता आम तेम भवे भवे भटक्या करे,
केवां करम ! केवां जनम ! केवां विविध रुपो धरे,
शुभ भावना मुज हृदयमां वरसावजो पळ पळ प्रभु !

१३. अेकेन्द्रिये विकलेन्द्रिये बुद्धि जरा पण ना रही,
नरकेय हुं क्यारेय धर्मश्रवण पण पाम्यो नहीं,
धर्मश्रवण धर्माचरण संयोग हुं पाम्यो अहीं,
शुभ भावना मुज हृदयमां वरसावजो पळ पळ प्रभु !

हे देव ! मैत्री भावनी सुरभि वहो...

मैत्री भावना

१. ना वैर हो मुज हृदयमां, किन्तु रही शुभकामना !
ना कोई साथे शत्रुता, ना क्यांय हो दुर्भावना !
कल्याण हो सौ जीवनुं - आ भाव हो मुज हृदयमां !
हे देव ! मैत्रीभावनी सुरभि वहो मुज हृदयमां !

२. सौनां सकल दुःखडां टळो, सौने अमर सुखडां मळो !
ना पाप कोई आचरो, सौ धर्म निशदिन आदरो !
सौ जीव मैत्रीमय बनो - आ भाव हो मुज हृदयमां !
हे देव ! मैत्रीभावनी सुरभि वहो मुज हृदयमां !

प्रमोद भावना

३. सुख कोईनुं देखी प्रभु ! मुज हृदयमां ईर्ष्या न हो !
ने कोईना अवगुण निरखवानी मने इच्छा न हो !
गुणने निहाळे - अेवी हो गुणदृष्टि मारा हृदयमां !
हे देव ! मैत्रीभावनी सुरभि वहो मुज हृदयमां !

४. गुण देखुं ने आनंदनां झरणां वहो मुज हृदयमां !
गुण देखुं ने गुणप्राप्तिनी कांक्षा रहो मुज हृदयमां !
सुंदर गुणानुरागनी हो सृष्टि मारा हृदयमां !
हे देव ! मुदिताभावनी हो वृष्टि मारा हृदयमां !

करुणा भावना

५. दउं अन्न भूख्याने अने दउं नीर तरस्याने अने -
दीनहीनने दउं आशरो, सन्मार्ग दउं सौ जीवने !
बस, अन्य काजे सर्वदा मुज शक्तिनो उपयोग हो !
हे देव ! मैत्रीभावनी सुरभि वहो मुज हृदयमां !

६. दुःख कोईनुं जीरवी शके ना - अेवुं हो अंतःकरण !
दुःख कोईनुं, जोई वहो, मुज नयनमां अश्रुझरण !
मुज दुःख भूली अन्यनुं दुःख टाळवा मुज भाव हो !
हे देव ! मैत्रीभावनी सुरभि वहो मुज हृदयमां !

७. जे पंथ भूल्या जिंदगीनो, ग्रन्थने जे अवगणे !
हितकर वचन ना सांभळे, क्रोधान्ध थईने धणधणे !
ते जीव प्रत्ये पण हृदयमां प्रगटजो दुर्भाव ना !
हे देव ! मैत्रीभावनी सुरभि वहो मुज हृदयमां !

८. निःशंक थई पापो करे, निर्दय बनी हिंसा करे !
जे देव-गुरुनी पण सदा बेफाम बनी निंदा करे !
अेवा जीवो पर मुज हृदयमां द्वेष ना हो राग ना !
हे देव ! मैत्रीभावनी सुरभि वहो मुज हृदयमां !

करुणा रसे अंजन करो...

१. करुणाजले घुघवी रह्यां सागर समा तारा नयन,
महातेजथी चमकी रह्यां छे सूर्य सम तारा नयन;
ज्यां सौम्यता छलकी रही छे चंद्र सम तारा नयन,
करुणारसे अंजन करो जेथी खूले मारा नयन.

२. हुं हितने देखुं नहि आ अंध छे मारा नयन,
अहितमां कूदी पडुं आ बंध छे मारा नयन,
शुभ भावने प्रसवे नहि आ वन्ध्य छे मारा नयन,
करुणारसे अंजन करो जेथी खूले मारा नयन.

३. अद्‌भुत मनोहर शोभता जितमृग छे तारा नयन,
सौंदर्यनी हरिफाईमां जितपद्म छे तारा नयन;
कीकी अतिशय श्यामळी जितभृंग छे तारा नयन,
करुणारसे अंजन करो जेथी खूले मारा नयन.

४. पररुपमां लंपट सदा विरुप छे मारा नयन,
विकार कालिमा थकी छे श्यामळा मारा नयन;
अति क्रोधथी जे तगतगे बिहामणां मारा नयन,
करुणारसे अंजन करो जेथी खूले मारा नयन.

५. कैवल्यनी साक्षी बन्या दर्पण समा तारा नयन,
जो भव्यगण पक्षी बन्या तो गगन सम तारा नयन;
दर्शन सुधाभक्षी बनुं अमृतझरा तारा नयन,
करुणारसे अंजन करो जेथी खूले मारा नयन.

६. अति रागथी राता थया अंगार सम मारा नयन,
ने द्वेषथी दूषित बन्या छे धूम सम मारा नयन;
वळी मोहथी मेला बन्या उत्कर समा मारा नयन,
करुणारसे अंजन करो जेथी खूले मारा नयन.

७. तारा नयन उत्सव बन्या नाची रह्यां मारा नयन,
तारा नयन वादळ बन्या टहूंकी रह्यां मारा नयन;
तारा नयन छे दीपज्योति झळहळे मारा नयन,
करुणारसे अंजन करो जेथी खूले मारा नयन.

८. अमृतझरा तारा नयन अश्रुभरा मारा नयन,
करुणाभीना तारा नयन भावेभीनां मारा नयन;
अविकार छे तारा नयन अनुरागी छे मारा नयन,
करुणारसे अंजन करो जेथी खूले मारा नयन.

९. लयलीन तारा नयनमां अनिमेष छे मारा नयन,
जल मीन संबंधो रचे तारा नयन मारा नयन;
नहीं दीन आ मारा नयन में नीरखीया तारा नयन,
करुणारसे अंजन करो जेथी खूले मारा नयन.

१०. जोवा समुं कशुं ये नहि सिवाय के तारा नयन,
तेथी टगर जोया करे मारा नयन तारा नयन;
तेथी ज बीजे क्यांय पण ठरता नथी मारा नयन,
करुणारसे अंजन करो जेथी खूले मारा नयन.

११. जे रागमां लेपाय ना वीतराग छे तारा नयन,
न द्वेषथी खरडाय ना वीतद्वेष छे तारा नयन;
समभावनाथी मघमघे छे दिव्यफूल तारा नयन,
करुणारसे अंजन करो जेथी खूले मारा नयन.

१२. अज्ञानना अंधारमां मूंझाय छे मारा नयन,
साचुं कशुं सूझे नहि अकळाय छे मारा नयन;
तारा नयननुं तेज झंखे आजथी मारा नयन,
करुणारसे अंजन करो जेथी खूले मारा नयन.

१३. तल्लीन थई तुज आंखमां पीगळी गया मारा नयन,
तुज तेजने स्पर्शी करी चमकी गया मारा नयन;
अंधार मारो दूर थयो उजळां थया मारा नयन,
करुणारसे अंजन करो जेथी खूले मारा नयन.

१४. हे, ऋषभ ! तारी यादमां झूरी रह्यां मातृनयन,
हजार वरसो रोई रोई सूझी गया मातृनयन;
पण ऋद्धि तारी नीरखता अे खूलीं गया आंतर नयन,
करुणारसे अंजन करो जेथी खूले मारा नयन.

१५. हे, वीर ! संगमनी पूंठे भीनां थया तारा नयन,
अे दृश्य मनमां आवता भीनां थया मारा नयन;
तारा नयननी आकृति नीरख्या करे मारा नयन,
करुणारसे अंजन करो जेथी खूले मारा नयन.

१६. तुज विरहमां तडपी रह्या गौतम तणा प्यारा नयन,
ने अश्रुधारे वही रह्यां गौतम तणा प्यारा नयन;
तारी कृपाथी झळहळ्या गौतम तणा प्यारा नयन,
करुणारसे अंजन करो जेथी खूले मारा नयन.

१७. तिमिर टळ्युं मुज जीवनमां जोया थकी तारा नयन,
खुशीओ छवाई दिल महीं जोया थकी तारा नयन,
आधि टळी व्याधि टळी जोया थकी तारा नयन,
करुणारसे अंजन करो जेथी खूले मारा नयन.

१८. तारा नयननी अे छबी उपसी हवे मारा नयन,
प्रतिबिंब रुपे झळहळे मुज नयनमां तारा नयन;
लागी रह्युं तेथी मने नीरखी प्रभु तारा नयन,
मारा नयन तारा नयन, तारा नयन मारा नयन...

गिरनार अभिषेक स्तुति

१. गिरनार पर प्रभु नेमना, अभिषेकनो पावन समय,
प्रभु नेमिनाथ जिनालये, वातावरण शुभभावमय,
ते परम पावन दृश्य मारा, नेत्रने निर्मल करो,
नेमिनाथनी अभिषेक धारा, विश्वनुं मंगल करो... (२)

२. श्यामल प्रभुना मस्तके, नीरखु हुं क्षीरधारा धवल,
रोमांच अनुपम अनुभवुं, गद्‌गद् हृदय लोचन सजल,
प्रत्येक आत्मप्रदेशे नेमि, प्रीतने निश्चल करो,
नेमिनाथनी अभिषेकधारा, विश्वनुं मंगल करो... (२)

३. अभिषेकना सुप्रभावथी, विघ्नो तणो थाओ विलय,
सर्वत्र आ संसारमां, शासन तणो थाओ विजय,
सुख शांति पामे जीव सहु, करुणा सुवासित दिलकरो,
नेमिनाथनी अभिषेकधारा, विश्वनुं मंगल करो... (२)

४. अभिषेकना सुप्रभावथी, भवतापनुं थाओ शमन,
उर केरी उखर भूमि पर, सम्यक्त्वनुं थाओ वपन;
मिथ्यात्व मोह कुवासना, कुमतितणो सवि मल हरो,
नेमिनाथनी अभिषेकधारा, विश्वनुं मंगल करो... (२)

५. अभिषेकना सुप्रभावथी, गिरनारनो जय विश्वमां,
महिमा महागिरिराजनो, व्यापी रहो आ विश्वमां,
आ तीर्थना आलंबने, भवि जीव शिव मंजिल वरो,
नेमिनाथनी अभिषेकधारा, विश्वनुं मंगल करो... (२)

गिरनार - नेमिनाथजी की आरती

१. जय जय आरती नेमिजिणंदा,
समुद्रविजय शिवादेवीको नंदा...

२. पहेली आरती भावथी कीजे,
गिरनार भेटीने पुण्य लहीजे...

३. दूसरी आरती जिनो अनंता,
दीक्षा-केवल-शिवसुख धरंता...

४. तीसरी आरती नेमिजिणंदा,
सहसावने व्रत - नाण वरंता...

५. चोथी आरती भवपार थावे,
पांचमी टूंके परम पद पावे...

६. पंचमी आरती चिंतामणि पाया,
गिरनार - नेमिगुण हेमने गाया...

गिरनार - नेमिनाथजी का मंगल दीवा

१. दीवो रे दीवो रे, प्रभु मंगलिक दीवो रे;
आरती उतारण रे गढ गिरनारनी रे... दीवो रे...

२. सोहामणो अे, गढ गिरनार;
भविजननो अे, तारणहार... दीवो रे...

३. नित्य ध्यावे तस, भव अजवाळे;
भवचोथे अे, शिवपुर निहाळे... दीवो रे...

४. सुरनरदेवा, करे गिरि सेवा;
आरती उतारी, पामे शिव मेवा... दीवो रे...

५. आ भव मंगलिक, परभव मंगलिक,
मंगलिक भवोभव सौनुं होजो... दीवो रे...

श्री गिरनार महातीर्थ के खमासमणा के दोहे

१. **रैवतगिरि** समरुं सदा, सोरठ देश मोझार,
मानवभव पामी करी, ध्यावुं वारंवार...

२. सोरठदेशमां संचर्यो, न चढ्यो गढ **गिरनार**,
सहसावन फरश्यो नही, एनो एळे गयो अवतार...

३. दीक्षा-केवल सहसावने, पंचमे गढ निर्वाण,
पावनभूमिने फरशता, जनम सफल थयो जाण...

४. जगमां तीरथ दो वडा, शत्रुंजय गिरनार,
एक गढ ऋषभ समोसर्या, एक गढ नेमकुमार...

५. **कैलास** गिरिवरे शिववर्या, तीर्थंकरो अनंत,
आगे अनंता पामशे, तीरथकल्प वदंत...

६. गजपद कुंडे नाहीने, मुख बांधी मुखकोश,
देव नेमिजिन पूजता, नाशे सघला दोष....

७. एकेकु पगलु चढे, **स्वर्णगिरि**नुं जेह,
हेम वदे भवोभवतणां, पातिक थाये छेह...

८. **उज्ज्यंत** गिरिवर मंडणो, शिवादेवीनो नंद,
यदुकुलवंश उजाळीयो, नमो नमो नेमिजिणंद...

९. आधि व्याधि उपाधि सौ, जाये तत्काल दूर,
भावथी **नंदभद्र** वंदता, पामे शिवसुख नूर...

एक खमासमण आपीने श्री रैवतगिरि महातीर्थ आराधनार्थं काउस्सग्ग करुं ? इच्छं. रैवतगिरि महातीर्थ आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तियाए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धीइए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं, अन्नत्थ उससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छिएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं । एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(९ लोगस्सनो काउस्सग्ग न आवडे तो ३६ नवकारनो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स बोलवो.)

● लोगस्स सूत्र ●

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे,
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवलि. १

उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च,
सुमई च; पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे. २

सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपूज्जं च,
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि. ३

कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं,
नमिजिणं च; वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च. ४

एवं, मए अभिथुआ, विहुय रयमला पहीण जरमरणा,
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु. ५

कित्तिय - वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा,
आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु. ६

चंदेसुनिम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा,
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु. ७

चैत्यवंदन विधि विभाग

(नीचे की विधि से प्रथम इरियावहि करनी)

● इच्छामि खमासमण सूत्र ●

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए मत्थएण वंदामि,

(भावार्थ : इस सूत्र द्वारा देवाधिदेव परमात्मा को तथा पंचमहाव्रतधारी साधु भगवंतो को वंदन किया जाता है)

● इरियावहियं सूत्र ●

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं १. इरियावहियाए विराहणाए २. गमणागमणे ३. पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे, ओसाउत्तिंग पणग दग, मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे ४. जे मे जीवा विराहिया ५. एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया ६. अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्विया, ठाणाओठाणं, संकामिया, जिवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ७.

(भावार्थ : इस सूत्र से हिलते चलते जीवों की जाने अनजाने में विराधना होने से लगा हुआ पाप दूर होता है।)

● तस्स उत्तरी सूत्र ●

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहिकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं.

(भावार्थ : इस सूत्र द्वारा इरियावहियं सूत्र से बाकी रहे पापो की विशेष शुद्धि होती है.)

● अन्नत्थ सूत्र ●

अन्नत्थ उससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिगसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए १. सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं २. एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ३. जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ४. ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ५.

(भावार्थ : इस सूत्र में काउस्सग्ग के सोलह आगार का वर्णन तथा कैसे खड़ा रहना वह बताया.)

(एक लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा तक और न आये तो चार नवकार का काउस्सग्ग करना, फिर प्रगट लोगस्स कहना)

● लोगस्स सूत्र ●

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे, अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवलि १. उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमईं च; पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे २. सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च; विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ३. कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च; वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ४. एवं, मए अभिथुआ, विहुय

रयमला पहीण जरमरणा, चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ५. कित्तिय-वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा, आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु, चंदेसुनिम्मलयरा, आइच्चेसुअहियं पयासयरा, सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु. ७.

(भावार्थ : इस सूत्र में चोवीस तीर्थंकरो के नामपूर्वक स्तुति की गई है.)

(तीन खमासमण देकर, बाया घुंटन खड़ा करके हाथ जोड़कर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करुं ? इच्छं कही चैत्यवंदन करवुं.

सकल कुशल वल्ली - पुष्करावर्त मेघो,
दुरित तिमिर भानुः कल्पवृक्षोपमानः
भव जल निधि पोतः सर्व संपत्ति हेतुः
स भवतु सततं वः श्रेयसे शान्तिनाथः
श्रेयसे पार्श्वनाथः

● श्री सामान्यजिन चैत्यवंदन ●

तुज मुरतिने निरखवा, मुज नयणां तलसे;
तुज गुण गणने बोलवा, रसना मुज हरखे... १
काया अति आनंद मुज, तुम युग पद फरसे;
तो सेवक तार्या विना, कहो किम हवे सरसे... २

एम जाणीने साहिबा ए, नेहनजर मोहे जोय;
ज्ञानविमल प्रभु सुनजरथी, ते शुं ? जे नवि होय... ३

• जंकिंचि सूत्र •

जंकिंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए;
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि.

(भावार्थ : इस सूत्र द्वारा तीनों लोक में विद्यमान नाम रुपी तीर्थों एवं जिन प्रतिमा को नमस्कार किया गया है.)

• नमुत्थुणं सूत्र •

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं. १. आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं २. पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरिआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं. ३. लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपइवाणं, लोगपज्जोअगराणं, ४. अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं, ५. धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत - चक्कवट्टिणं, ६. अप्पडिहयवरनाण - दंसणधराणं, विअट्ट - छउमाणं. ७. जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं; बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं, ८. सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयल मरुअ - मणंत मक्खय मव्वाबाह - मपुणरावित्ति - सिद्धि गइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो

जिणाणं जिअभयाणं ९. जे अ अइया सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले; संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि. १०.

(भावार्थ : इस सूत्र में अरिहंत परमात्मा के गुणों का वर्णन है. इन्द्र महाराजा स्तुति करते समय यह सूत्र बोलते हैं.)

● जावंति चेइआइं सूत्र ●

(पुरुषों को दो हाथ उपर करके बोलना है)
जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ;
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं.

(भावार्थ : इस सूत्र द्वारा तीन लोक में रही जिनप्रतिमा को नमस्कार किया गया है।)

इच्छामि खमासमणो, वंदिउं जावणिज्जाए,
निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

● जावंत केवि साहू सूत्र ●

जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ;
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं.

(भावार्थ : इस सूत्र में भरत, ऐरावत और महविदेह तीनों क्षेत्र में बिचरते सर्वे साधु साध्वीजी को नमस्कार किया गया है.)

(नीचे का सूत्र सिर्फ पुरुषों को बोलना है)

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

(भावार्थ : इस सूत्र में पंचपरमेष्ठि भगवंत को नमस्कार किया गया है।)

(इस पुस्तक में से भाववाही स्तवन के संग्रह से कोई भी एक स्तवन अथवा नीचे का स्तवन गाना)

● श्री सामान्य जिन स्तवन ●

आज मारा प्रभुजी, सामुं जुओने, सेवक कहीने बोलावो रे;
एटले हुं मनगमतुं पाम्यो, रुठडा बाळ मनावो,
मारा सांइ रे... १

पतितपावन शरणागतवत्सल, ए जश जगमां चावो रे;
मन रें मनाव्या विण नहीं मूकुं, ए ही ज माहरो दावो,
मारा सांइ रे... २

कबजे आव्या हवे नहि मूकुं, जिहां लगे तुम सम थावो रे;
जो तुम ध्यान विना शिव लहिए, तो ते दाव बतावो.
मारा सांइ रे... ३

महागोपने महानिर्यामक, इणि परे बिरुद धरावो रे;
तो शुं आश्रितने उद्धरतां, बहु बहु शुं रे कहावो.
मारा सांइ रे... ४
ज्ञान विमल गुरुनो निधि महिमा, मंगल एहि वधावो रे;
अचल - अभेदपणे अवलंबी, अहोनिश एहि दिल ध्यावो.
मारा सांइ रे... ५

● जय वीयराय सूत्र ●

जयवीयराय ! जगगुरु होउ ममं तुह पभावओ भयवं
भवनिव्वेओ मग्गा - णुसारिया इट्ठफलसिद्धि ...१

लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ, परत्थकरणं च;
सुहगुरुजोगो तव्वयण - सेवणा आभवमखंडा ...२

(दो हाथ नीचे करके)

वारिज्जइ जइवि निआण - बंधणं वीयराय ! तुह समए;
तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं. ...३

दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहिमरणं च बोहिलाभो अ;
संपज्जउ मह एअं, तुह नाह ! पणामकरणेणं. ...४

सर्व-मंगल-मांगल्यं, सर्व-कल्याणकारणम्;
प्रधानं सर्व-धर्माणां, जैनं जयति शासनम्. ...५

● अरिहंत-चेइआणं सूत्र ●

अरिंहत चेइआणं करेमि काउस्सग्गं ॥१॥

वंदणवत्तियाए पूअणवत्तियाए,
सक्कारवत्तियाए सम्माणवत्तियाए,
बोहिलाभवत्तियाए निरुवसग्गवत्तियाए ॥२॥

सद्धाए, मेहाए, धिइए, धारणाए,
अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥३॥

अन्नत्थ, ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए, १.
सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं
दिट्ठिसंचालेहिं. २.
एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज में काउस्सग्गो. ३.
जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं,
मोणेणं, झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ४.

(कहकर एक नवकार का काउस्सग्ग पार के)
नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः
(बोलकर थोय बोलना)

राजुल वर नारी, रुपथी रति हारी,
तेहना परीहारी, बालथी ब्रह्मचारी;
पशुआ उगारी, हुआ चारित्रधारी,
केवल सिरी सारी, पामीया घाती वारी.

• चैत्यवंदन •

(१)

नेमिनाथ बावीशमा, अपराजीतथी आय;
सौरीपुरमां अवतर्या, कन्या राशि सुहाय... १

योनि वाघ विवेकीने, राक्षस गण अद्भुत;
रिख चित्रा चोपन दिन, मौनवता मनपूर... २

वेतस हेठे केवलीए, पंचसया छत्रीश;
वाचंयमशु शिव वर्या, वीर नमे निशदीश... ३

(२)

नेमिनाथ बावीशमा, शिवादेवी माय;
समुद्रविजय पृथ्वीपति, जे प्रभुना ताय... १

दस धनुषनी देहडी, आयु वरस हजार;
शंखलंछनधर स्वामीजी, तजी राजुल नार... २

शौरीपुरीनयरी भलीए, ब्रह्मचारी भगवान;
जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां अवचिल ठाम... ३

(३)

विशुद्धविज्ञान भृतां वरेण, शिवात्मजेन प्रशमाकरेण;
येन प्रयासेन विनैव कामं, विजित्य विक्रान्तवरं प्रकामम्. १

विहायराज्यं चपल स्वभावं, राजिमतिराजकुमारिकां च;
गत्वा सलीलं गिरनारशैलं, भेजे व्रतं केवल मुक्तियुक्तम्. २

निःशैषयोगीश्वरमौलिरत्नं, जितेन्द्रियत्वे विहितप्रयत्नम्;
तमुत्तमानन्द निधानमेकं, नमामि नेमिं विलसद्विवेकम्, ३

(४)

बाल ब्रह्मचारी नेमनाथ, समुद्रविजय विस्तार;
शिवादेवीनो लाडको, राजुल वर भरथार. १

तोरण आव्या नेमजी, पशुडे मांड्यो पोकार;
मोटो कोलाहल थयो, नेमजी करे विचार. २

जो परणुं राजुलने, जाय पशुना प्राण;
जीवदया मनमां वसी, त्यांथी कीधुं प्रयाण. ३

तोरणथी रथ फेरव्यो, राजुल मूर्च्छित थाय;
आंखे आंसुडां वहे, लागे नेमजीने पाय, ४

सोगन आपुं माहरा, पाछा वळो एक वार;
निर्दय थई शुं वालमा, कीधो मारो परिहार. ५

झीणी झबुके विजळी, झरमर वरसे मेह;
राजुल चाल्यां साथमां, वैराग्य भींजी देह. ६

संजम लइ केवळ वर्या ए, मुक्ति पुरीमां जाय;
नेम राजुलनी जोडने ज्ञान नमे सुखदाय. ७

(५)

नेमि जिनेसर नियमथी, नमता नव निधि,
सकल पदारथ पूरवे, सेव्यो दीए सिद्धि. १

निरागीमां लीह दीह, रयणी दिल मोरे,
रसीओ मन अली माहरो, पदकमले तोरे. २

तुं त्राता त्रिभुवन धणी, निज सेवक संभाळ,
राम विजय जिन नामथी, लहीए सुख रसाळ. ३

(६)

समुद्र विजय कुल चंद, नंद शिवादेवी जाया;
जादव वंश नभोमणि, शौरिपुर ठाया... (१)

बालथकी ब्रह्मचर्यघर, गत मारने प्रचार;
भक्ति निज आत्मिक गुण, त्यागी संसार... (२)

निष्कारण जगजीवनो ए, आशानो विश्राम;
दीन दयाल शिरोमणी, पूरण सुरतरु काम... (३)

पशु पोकार सुणी करी, छांडी गृहवास;
तत्क्षण संजम आदरी, करी कर्मनो नाश.. (४)

केवल श्री पामी करी ए, पहोंच्या मुक्ति मोझार;
जन्म मरण भय टाळवा, ज्ञान सदा सुखकार (५)

(७)

जयवंत महंत निरंजन छो, भवनां दुःख दोहग भंजन छो;
भविनेत्र विकासज अंजन छो, प्रभु काम विकार विगंजन छो. (१)

जगनाथ अनाथ सनाथ करो, मम पाप अमाप समूल हरो;
अरजी उर नेमि जिणंद धरो, तुम सेवक हुं प्रभु ना विसरो. (२)

सुर अर्चित वांछित दायक छो, सहु संधतणा प्रभु नायक छो;
गिरनार तणा गुण गायक छो, कलहंसतणी गति लायक छो. (३)

(८)

नायक त्रिभुवन नाथजी, श्री नेमिजिनसार,
प्रभुपद प्रेमे पूजीए, गिरूओ गढ गिरनार (१)

ए गिरि उपर एहना, तीन कल्याणक तास,
अरिहंत भक्ति अनुसरो, आणी मन उल्लास (२)

जादव कुल दिनकर जीस्यो, ब्रह्मचारी शिरदार,
सतीओ मांहे शिरोमणि, रूडी राजुलनार, (३)

सहसावन संयम लीयो, गिरि उपर केवलज्ञान,
कृपानाथ सरखी करी, भामीनीने भगवान (४)

सातकूट सोहामणी, ए तीरथ अहिठाण,
पंचम टुंके श्री प्रभु, पाम्यापद निर्वाण (५)

गुणी अढारे गणधरा, गिरूआ बहु गुणवंत,
सहस अढारे श्रमणने, सेवो भविजन संत (६)

आठ भवोनी अंबिका, ए तीरथ रखवाल,
सेवो भविशुद्धे मने, जावे भवदुःख जाल (७)

भविजन भावे भेटीए, आणी मन आणंद,
हंस विजय नमे हरखशुं, पामे परमानंद (८)

(९)

गिरि गिरनार जई वसे, जेसे नेमकुमार
कनक भूमि करी देवता, भक्ति करे मनोहार (१)

एक प्रतिमा वज्रनी, एक कंचनकेरी,
एक प्रतिमा रत्न मणिमय भलेरी (२)

काले सज्जन बहुमिल्यांए, जेणे कीधो उद्धार
नेमनाथ बेठां तिंहा, कंठे रयण मनोहार (३)

(१०)

बालपणे श्रीनेमिनाथ, वंदु ब्रह्मचारी;
आठ भवोनी प्रीतडी, तारी राजुलनारी. १

समुद्रविजयसुत जाणीये, शंख शीवादेवीना जाया;
जादवकुल सोहामणो, शंख लंछन गुण गाया. २

बत्रीस सहस बंधव तणी, जाणो पटराणी;
पिचकारी सोवनतणी, नीर जले भरी आणी. ३

दडो उछाले फुलनो, दीयरने बोलावे;
नेमको विवाह मांडियो, भोजाइओ मनावे. ४

परणो राजुल नार तिहां, उग्रसेननी बेटी;
सत्यभामानी बेनडी, समकित गुणनी पेटी. ५

नारी विनानुं घर नहीं, वांढो पुरुषविख्यात;
भोजाइ मेणां मारशे, परणो नेम कुमार. ६

एक नारी विना इश्यो, घर स्मशान कहेवाशे;
उना अन्न कोण आपशे, सुणो बांधव वात. ७

मंडप चौराशी स्तंभनो, रचीयो मन रंगे;
चौदिशी गौरी गावती, सांजने प्रभाते. ८

भात भातना धान तिहां, जुवारा ववरावे;
भोजाइ पासे सींचाववा, गंगा नीर मंगावे. ९

पीठी चोले पीतराणी मली, उने जल नवरावे;
पीठी घउंला भेळवी, मग पीठी मंगावे. १०

आभूषण अंगे धरी, शेष भरावे;
वरघोडे श्री नेमनाथ, परणे राजुलनार. ११

पंचजातना वाजींत्र वागे, भेरी वजडावे;
थैइ थैइ नाच पताका, तोरण नेमकुमार. १२

पशुडां करे पोकार, तिहां साळाने बोलावे;
सारथवाहने पूछता, जीव बंधने केम बांध्या. १३

जादवकुल एने परे, परभाते गौरव दइशुं;
विषयारसने कारणे, जीव संहार करीशुं. १४

अंग फरके जमणुं तिहां, नवला नेमकुमार;
राजुल कहे सुणो साहेलीओ, रथ वाळ्यो तत्काळ. १५

वरसीदान देई करी, एक कोडी साठ लाख;
सहसावन जइ संयम लीधो, सहस पुरुष संगाथ. १६

राजुल धरणी ढळी पड्या, उज्ञयंत गढ चाल्या;
गुफामां श्री रहनेमी, राजुल प्रतिबोधे. १७

स्वामी हाथे संजम लीधो, संलेखणा एक मास;
केवलज्ञाने झळहळे, पाम्या शिवपुर वास. १८

पीयु पहेलां मुगते गया, धनधन नेमकुमार;
परणे शिवनी नार तिहां, सहस पुरुष संगाथ. १९

भणतां शिवसुख उपजे, गुणतां मंगलकार;
विनयविजय वाचक जस, तस घर कोडी कल्याण. २०

(११)

बावीशमा श्री नेमिनाथ, घोर ब्रह्मव्रत धारी;
शक्ति अनंती जेहनी, त्रण भुवन सुखकारी... (१)

इन्द्र चन्द्र नागेन्द्रने, वासुदेवो सर्वे;
चक्रवर्तिओ नेमिने, सेवे रही अगर्वे... (२)

कृष्णादिक भक्तो घणाए, जेनी सेवा सारे;
एवा परमेश्वर विभु, सेवंता सुख भारे... (३)

(१२)

श्री गिरनार महातीर्थने, समरतां दोषो दूर थावे,
ध्यान तेहनुं जे धरे, भव चोथे शिव पावे...
अनंत जिननुं मोक्षधाम, दीक्षा नाण संगाथ,
नेमिवर व्रत तिहां, नाण निर्वाणनी साथ...
गजपदकुंड छे तिंहा, छे गोमेध नामे यक्ष,
मा अंबा सार करे तिंहा, अमासे थई प्रत्यक्ष...

(१३)

अचलापुरी धनभव लही, सौधर्मे बने देव;
चित्रगति विद्याधर, करे जिणंदनी सेव. १

चोथे चोथो देवलोक, अपराजित नृपति;
दीक्षा लई सुर भवनमां, अगियारमे संपत्ति. २

शंख नृपति थया सातमे, संयम आधारी;
वीशस्थानक साधी थया, अपराजित निराबाधी. ३

नवमे नेमि जिनेश्वरु रे, अंजनवान शरीर;
'ज्ञानविमल' संभारता पामे भवजल तीर. ४

(१४)

दीक्षा केवल ने वळी, त्रीजुं निरवाण,
त्रण कल्याणक उपना, गिरनारे ते जाण... १

अनंत चोविसीए अनंत, कल्याणक वखाण,
वर्तमानमां नेमिनाथना, गिरनारे ते जाण... २

अनागत जिनवर सवि, पामशे शिवपुर ठाण,
सादि अनंत भागे सुखी, गिरनारे ते जाण... ३

संप्रति ने संग्रामनी, कुमारपालनी जाण,
मंदिर श्रेणी सोहामणी, गढ गिरनारे वखाण... ४

मोहराय मल्ल भागतो, मांगे कदि नवि दाण,
धर्मरत्न पसायथी, गिरनारे चित्त आण... ५

(१५)

राजुल वर श्री नेमिनाथ, शामळियो सारो;
शंख लंछन दस धनुष देह, मनमोहन गारो. १

समुद्र विजय राय कुळतिलो, शिवादेवी सुत प्यारो;
सहस्त्र वरसनुं आउखुं, पाळी सुखकारो. २

गिरनारे मुक्ति गया ए, शौरीपुरी अवतार;
'रुपविजय' कहे वालहो, जगजीवन आधार. ३

श्री नेमिनाथ थोय

(१) (चार बार बोल सकते हैं)

गिरनारे गीरुओ वहालो नेमि जिणंद,
अष्टापद उपर, पूजी धरो आनंद,
सिद्धांतनी रचना, गणधर करे अनेक,
दिवाळी दिवसे द्यो अंबा विवेक. १

(२)

श्री नेमिजिन प्रणमी, सवि दुःख टाळुं,
सविजिन वंदी, अघ संचित गाळुं;
जिन आगमथी, जगमांहे अजवाळुं,
देवी अंबाइ, करे रखवाळुं.

(३)

नेमिनाथं, वन्दे बाढम्, १ सर्वे सार्वाः, सिद्धिं दद्यु; २
जैनी वाणी, सिद्धयै भूयात्. ३ वाणी विद्यां, दद्याद् हृद्याम्. ४

(४)

गढ गिरनारे नमुं, नेमिजिनेश्वरस्वाम,
चोबीशे जिनवर, जगतजीव विश्राम;
अमृत सम आगम, सुणीये शुभ परिणाम,
अंबिका देवी, सारे काज तमाम.

(५)

नेमिनाथ गुणना भंडार, चोवीश जिनबिंब जुहार;
जेनी वाणी अमृत धार, अंबिकादेवी विघ्न निवार.

(६)

गिरनारमंडन नित्य नमीजे, नेमीश्वर निरंजनजी,
भावि चोविसी मांहे सौ जिन, मुक्ति वरसे गिरनारजी;
आतम काजे होय हितकारी, शास्त्रवचन उदारजी,
हेमवदे गिरि अंबा समरी, वल्लभपदने पामोजी.

(७)

राजुल वर नारी, रुपथी रति हारी,
तेहना परिहारी, बालथी ब्रह्मचारी;
पशुआं उगारी, हुआ चारित्रधारी,
केवलसिरी सारी, पामिया घाती वारी. १

त्रण ज्ञान संयुता, मातानी कुखे हुंता,
जन्मे पुरहुंता, आवी सेवा करंता;
अनुक्रमे व्रत लहंता, पंच समिति धरंता;
महियल विचरंता, केवलश्री वरंता. २

सवि सुरवर आवे, भावना चित्त लावे,
त्रिगडुं सोहावे, देवछंदो बनावे;

सिंहासन ठावे, स्वामिना गुण गावे,
तिहां जिनवर आवे, तत्त्ववाणी सुणावे. ३

शासनसुरी सारी, अंबिका नाम धारी,
जे समकिती नर नारी, पाप संताप वारी;
प्रभु सेवा कारी, जाप जपीए सवारी,
संघ दुरित निवारी, पद्मने जेह प्यारी. ४

(८)

सुर असुर वंदित पायपंकज मयणमल्लमक्षोभितं,
धन सुधनश्याम शरीरसुंदर शंखलंछनशोभितं;
शिवादेवीनंदन त्रिजगवंदन भविककमलदिनेश्वरं,
गिरनार गिरिवरशिखर वंदो श्रीनेमिनाथजिनेश्वरं. १

अष्टापदे श्रीआदिजिनवर वीर पावापुरी वरं,
वासुपूज्य चंपानयर सिध्या नेम रैवतगिरिवरं;
समेतशिखरे विस जिनवर मुक्ति पहोंच्या मुनिवरं,
चोविश जिनवर नित्य वंदु सयल संघ सुहंकरं. २

अगियार अंग उपांग बारे दश पयन्ना जाणीए,
छ छेदग्रंथ प्रशस्त अत्था चार मूल वखाणीए;
अनुयोगद्वार उदार नंदी-सूत्र जिनमत गाइए;
वृत्ति टीका भाष्य चूर्णी पिस्तालीस आगम ध्याइए. ३

दोय दिशी दोय बालक सदा भवियण सुखकरु,
दुःखहरी अंबा लुंब सुंदर दुरित दोहग अपहरु;
गिरनारमंडन नेमि जिनवर चरणपंकजसेवीए,
श्री संघ सुप्रसन्नमंगल करो ते अंबादेवीए. ४

(९)

श्री गिरनार शिखर शणगार,
राजीमती हैडानो हार जिनवर नेमिकुमार,
पुरण करुणा रसभंडार,
उगार्या पशुआं ए वार समुद्रविजय मल्हार;
मोर करे मधुरो किंकार,
विचे विचे कोयलना टहुकार सहस गमे सहकार
सहसावनमां हुआ अणगार,
प्रभुजी पाम्या केवलसार पोहता मुक्ति मोझार. १

सिद्धिगिरिए तीरथ सार,
आबु अष्टापद सुखकार चित्रकूट वैभार,
सुवर्णगिरि सम्मेत श्रीकार,
नंदीश्वरवर द्वीप उदार जिहां बावन विहार;
रुचक कुंडलने इषुकार,

शाश्वत अशाश्वता चैत्यविहार अवर अनेक प्रकार,
कुमति वयणे म भूल गमार,
तीरथ भेटे लाभ अपार भवियण भावे जुहार. २

प्रगट छट्ठे अंगे वखाणी,
द्रौपदी पांडवनी पटराणी पूजा जिनप्रतिमानी,
विधिशुं कीधी उलट आणी,
नारद मिथ्यादृष्टि अन्नाणी छांडी अविरति जाणी;
श्रावककुलनी ए सहि नाणी,
समकित आलावे आख्याणी सातमे अंगे वखाणी,
पूजनिक प्रतिमा एम पंकाणी,
इम अनेक आगमनी वाणी ए सुणजो भवि प्राणी. ३

केडे कटिमेखला घुघरियाळी,
पाये नेउर रमझम चाली उज्जयंतगिरि रखवाली,
अधर लाल जीस्या परवाळी,
कंचनवान काया सुकुमाली कर लहके अंबडाळी;
वैरीने लागे विकराळी,
संघनां विघन हरे उजमाली अंबादेवी मयाली,
महिमाए दश दिशी अजुआळी,
श्री संघविजय बुध आनंदकारी नित्य नित्य घेर दिवाळी ४

(१०)

श्री गिरनारे जे गुण नीलो, ते तरण तारणत्रिभुवन तिलो,
नेमीश्वर नमीए ते सदा, सेव्यो आपे सुख संपदा. १

इन्द्रादिक देव जेहने नमे, दर्शन दीठे दुःख उपशमे,
जे अतीत अनागत वर्तमान, ते जिनवर वंदु वर प्रधान. २

अरिहंते वाणी उच्चारी, गणधरे ते रचना करी,
पीस्तालीश आगम जाणीए, अर्थ तेना चित्त आणीए. ३

गढ गिरनारनी अधिष्ठायिका जिन शासननी रखवाळीका,
समरू सा देवी अंबिका, कवि उदयरत्न सुखदायिका. ४

(११)

नेमिनाथ निरंजन निरख्यो, निज नयने मे आजजी,
पाप संताप टळे तुम नामे, हुवे वांछित काजजी,
सेव सुवाळी खांड जलेबी, लापसी तलधारीजी,
सवैया मोतैया मोदक, तुम नामे लहे नरनारीजी. १

खाजा ताजा फेणी मगदाळ, मेसुर मोतीचुरजी,
द्राख दाडम अखोड खलेला, खारेक खुरमा खजुरजी,
नाळीयेर नारंगी दाडिम, मीठा फणस उदारजी,
ए फळ फुल लइ जिन पूजो, चोविशे जिनराजजी. २

दूधपाक मालपुआ पेंडा, पतासाने पुरीजी,
गुंदपाक गोळधाणी गलेफा, गोळ पापडी गुण भुरीजी,
आंबा रायण साकर घेबर, मरकीणी सम मीठीजी,
ए सुखडीथी जिनजीनी वाणी, अति मीठी में दीठीजी. ३

साली दाली पंचामृत भोजन, खीर खांडनी पोलीजी,
सरस सलुणा उना तीखा, नित जमीए घीशुं झबोळीजी,
पान सोपारी काथा चुनो, एलची वासित घाणीजी,
वीर कहे अंबाइ तुसे, तो सुख लहे सवि प्राणीजी. ४

(१२)

गिरनारे नेमनाथ गाजे रे, राणी राजुल ध्रुसके रूवे रे,
मारो शामळीयो गिरधारी रे, एणे हरणो ने हरणी उगारी रे. १

एक चडता चडती दीसे रे, अष्टापद जिन चोविसे रे,
शत्रुंजय जुहारो रे, आबुजी जइ दुःख वारो रे. २

ज्यां चोत्रीस अतिशय छाजे रे, त्यां बेठां धींगडमल गाजे रे,
धींगडमलनी वाणी मीठी रे, सहु सुणजो समकित प्राणी रे. ३

ज्यां अंबिका देवी भारी रे, तेने नाके सोनानी वाळी रे,
सहु संघना संकट चूरे रे, नय विमलना वांछित पूरे रे. ४

(१३)

जादवकुलश्री नंद समो ए, नेमिसर ए देव तो,
कृष्ण आदेशे चालीया ए, वरवा राजुल नार तो,
अनुक्रमे त्यां आवीया ए, उग्रसेन दरबार तो,
इन्द्र इन्द्राणी नाचता ए. नाटक थाय तेणी वार तो. १

तोरण पासे आवीया ए, पशुओनो पोकार तो,
सांभळीने मुख मरडीयुं ए, राजुल मन उच्चाट तो,
आदिनाथ आदि तीर्थंकर ए, परण्या छे बहु नार तो,
तेणे कारण तुमे कांइ डरो ए, परणो राजुल नार तो. २

रथ फेरी संजम लीओ ए, चढ्या गढ गिरनार तो,
नेमीश्वर काउस्सग्ग रह्या ए पाम्या केवल सार तो,
सोल पहोर दीए देशना ए, आपी अखंडाधार तो,
भविक जीव प्रतिबोधिआ ए, बुझी राजुल नार तो. ३

अथिर जाणी संयम लीओ ए, अंबा जय जयकार तो,
पाये झांझर झम झमे ए, नाचे नेम दरबार तो,
श्याम वर्णना नेमजी ए, शंख लंछन श्रीकार तो,
कवि नमि कहे रायने ए, परण्या शिवसुंदरी नार तो. ४

(१४)

हरिवंश वखाणुं, जिम वयरागर खाण,
जिहां रतन अमूलख, नेमिनाथ जगभाण,
लघुवय ब्रह्मचारी, जग राखे अखियात,
पहोंता पंचम गति, कर्म हणी घनघात. १

क्रोधादिक सोलस, छे कषाय अति दुष्ट,
हास्यादिक नव जे, नोकषाय बल पुष्ट,
ए प्रकृति खपावी, पाम्या शुद्ध चारित्र,
ते जिनपति सघळां, वंदो पुण्य पवित्र. २

प्रवचननी रचना, गणधर करे गुणवंत,
जेहमांहि जीवा - जीवादिक विरचंत,
लोक स्थिति अद्भूत, अष्ट प्रकार कहाय,
ते भणतां सुणतां, सकल संशय पलाय. ३

जस दोय कर सोहे, आंबा लुंबी उदार,
दोय कर निज अंगज, सुंदरने श्रीकार,
अंबाइ देवी, अकल रूप अविकार,
श्री विजयराजसूरि, शिष्यने जय जयकार. ४

(१५)

(राग - जिनशासन वंछित, पुरण देव रसाल)

गया शस्त्रागारे, शंख निज हाथ धारे,
कीधो शब्द प्रचारे, विश्व कंप्या तिवारे;
हरि संशय धारे, एहनी कोइ सारे,
ज्यो नेमकुमारे, बालथी ब्रह्मचारी. १

चार जंबुद्वीपे, विचरंता जिनदेव,
अड घातकीखंडे, सुरनर सारे सेव;
अड पुष्कर अरधे, इणीपरे विश जिनेश,
संप्रति ए सोहे, पंचविदेह निवेश. २

प्रवचन प्रवहण सम, भवजलनिधिने तारे,
कोहादिक म्होटा, मच्छतणा भय वारे;
जीहां जीवदया रस, सरस सुधारस दाख्यो,
भवि भाव धरीने, चित्त करीने चाख्यो. ३

जिनशासन सांन्निध्यकारी, विघन विदारे,
समकितदृष्टि सुर, महिमा जास वधारे;
शत्रुंजयगिरि सेवो, जिम पामो भवपार,
कवि धीरविमलनो, शिष्य कहे सुखकार. ४

(१६)

(राग - मनोहर मूर्ति महावीरतणी)

नमो नेम नगीनो नभमणि, आव्यो पदवी भोगवी सुरतणी,
मोक्ष पाम्यो अष्ट करम हणी, लही अक्षय ऋद्धि अनंत गुणी. १

इम विस चार जिन जनमीया, दिग्कुमारीए हुलरावीआ,
मीली मीली इन्द्राणीए गाइआ, धनधन माता जिणे जाइआ. २

नेमि जिनवर दिये देशना, भवि पंचमी करो आराधना,
पंच पोथी ठवणी वीटांगणा, दाबडी जपमाला थापना. ३

जिन उत्तम पद पद्मने प्रणमे, करे सेवा दुःख हरे तस खिणमे,
गोमेध जक्षने अंबादेवी, विघ्न हरे नित समरेवी. ४

(१७)

दुरित भय निवारं, मोह विध्वंसकारं,
गुणवंतमविकारं, प्राप्त सिद्धि मुदारं,
जिनवर जयकारं, कर्म संक्लेशहारं,
भवजलनिधितारं, नौमि नेमिकुमारं. १

अड जिनवर माता, सिद्धि सौधे प्रयाता,
अड जिनवर माता, स्वर्ग त्रीजे विख्याता,
अड जिनवर माता, प्राप्त माहेन्द्र शाता,
भव भय जिन त्राता, संतने सिद्धि दाता. २

ऋषभ जनक जावे, नागसुर भाव पावे,
इशान सग कहावे, शेष कान्ता स्वभावे,
पद्मासन सुहावे, नेम आद्यन्त पावे,
शेष काउस्सग्ग भावे, सिद्धि सूत्र पठावे. ३

वाहन पुरूष जाणी, कृष्ण वर्णे प्रमाणी,
गोमेध ने षट् पाणि, सिंह बेठी वराणी,
सजी कनक समाणी, अंबिका चार पाणि,
नेम भक्ति भराणी, वीरविजये वखाणी. ४

(१८)

यादव कुलमंडण, नेमिनाथ जगनाथ,
त्रिभुवन जगमोहन, शोभन शिवपुर साथ;
गिरनार शिखर शिर, दीक्षा- नाण - निर्वाण,
शौरिपुरि नगरे च्यवन जनम सुखकार. १

इम भरते पंचे, ऐरवते बलसार,
चोविसे जिननां, थाये जिन आधार,
तस पंच कल्याणक वंदे पूजे जेह,
निरूपम सुख संपत्ति, निश्चे पामे तेह, २

जिनमुखे लही त्रिपदी, वली आगम गुंथ्या जेह,
वर अंग अग्यार. दृष्टिवाद गुणगेह;
त्रण काले जिनवर, कल्याणक विधि तेह,
समकित थीर कारण, सेवो धरिय सनेह. ३

श्री नेमिजिनेश्वर, शासन विनये रत्त,
जिनवर कल्याणक, आराधक भविचित्त;
देवचंद्रने शासन, सानिध्य करे नित मेव,
समरीजे अहनिश, सा अंबाइ देव. ४

(१९)

अमर किन्नर ज्योतिषधर, नर अभिवंदित पायाजी,
समुद्रविजय कुल कानन जलघर, श्यामल वर्णजस कायाजी,
जय यदुनंदन मदन विगंजन, चंदन वचन सुहायाजी,
नेम निरंजन नयन नलीनदल, पावन शिव सुख दायाजी, १.

जय राजुलवर करूणासागर, पुन्यपवित्र तुज कायाजी,
राजुल रढीयाली लटकाली, छोडी चाल्यो तजी मायाजी,
सत्यभामा वर लइ हलधर, तोरण किणही पठायाजी,
ऋषभादिक जिनथी तुं अधिको, कहत शिवा सुण जायाजी, २.

चारित्र लेइ चोपनमें दिन, केवलज्ञान उपायाजी,
चउविह देव मली मन रंगे, समवसरण विरचायाजी,
बारह पर्षदामांही बेसी, बहुजन धर्म बतायाजी,
शासन पामी त्रिभुवन स्वामी, आपे मुगते सधायाजी, ३.

यदुनायक श्री नेमि जिनेश्वर, यादववंश दिपायाजी,
राजुलनारी पियुने प्यारी, लेइ मुगति राखी मायाजी,
जगदंबा अंबा रखवाली, शासन देवी ठायाजी,
माय मया करी संघ विघनहर, भाणविजय गुणगायाजी. ४

(२०)

(राग : नेत्रानंदकरी भवोदधि - तरी)

चिक्षेपोर्जितराजकं रणमुखे यो लक्षसंख्यं क्षणा,
दक्षामं जन भासमानम हसं राजीमतीतापदम्,
तं नेमीं नम नम्र निर्वृतिकरं चक्रे यदूनां च यो,
दक्षामंजनभासमानमहसं राजीमतीतापदम्... (१)

प्रावाजीज्झितराजका रजइव ज्यायोऽपि राज्यं जवाद्,
या संसारमहोदधावपि हिता शास्त्री विहायोदितम्;
यस्याः सर्वत एव सा हरतु नो राजी जिनानां भवा,
यासं सारमहो दधाव पिहिता शास्त्री विहायोदितम्.... (२)

कुर्वाणाणुपदार्थ दर्शन वशाद् भास्वत्प्रभाया स्त्रपा,
मानत्या जनकृत्तं - मोहरत मे शस्तादऽरिद्रोहिका,
अक्षोभ्या तव भारती जिनपत्ते प्रोन्मादिनां वादिनां,
मानत्याजन कृत्तमोहरतमेश स्तादऽरिद्रोहिका... (३)

हस्ता लम्बितचूतलुम्बिलतिका यस्या जनोऽभ्यागमद्,
विश्वासेवित ताम्रपादपरतां वाचा रिपुत्रासकृत्;
सा भुतिं वितनोतु नोऽर्जुनरुचि, सिंहेऽधिरूढोल्लसद्
विश्वासे विततताम्रपादपरताऽम्बा चारिपुत्राऽसकृत्... (४)

(२१)

(राग : नेत्रानंदकरी भवोदधि-तरी)

त्वं येनाक्षतधीरिमा गुणनिधिः प्रेम्णा वितन्वन् सदा,
नेमेऽकान्तमहामना विलसतां राजीमतीरागतः;
कुर्यास्तस्य शिवं शिवांगज ! भवाम्भोधौ न सौभाग्यभाग्,
नेमे ! कान्तमहामऽनाविल ! सतां राजीमती रागतः... (१)

जीयासुर्जिन पुंगवा जयति ते राज्यर्द्धिषु प्रोल्लस,
द्वामानेक परा जितासु विभया सन्नाभिरा मोदिताः;
योधालीभिरूदित्वरा न गणिता यैः स्फातयः प्रस्फुर,
द्वामानेक परा जितासु विभया सन्नाभिरा मोदिताः... (२)

या गंगेव जनस्य पंकमखिलं पूता हरत्यंजसा,
भारत्याऽऽगम संगता नयतताऽमायाचिता साधुना;
अध्येतुं गुरूसन्निद्यौ मतिमता कर्तुं सतां जन्मभी,
भारत्यागम संगता न यतता माऽऽया चिता साऽधुना... (३)

व्योम स्फारविमानतूरनिनदैः श्री नेमिभक्तं जनं,
प्रत्यक्षामर साल पादपरतां वाचालयन्ती हितम्;
दध्यान्नित्यमिताऽऽम्रलुम्बिलतिका विभ्राजिहस्ताऽहितं,
प्रत्यक्षामर सालपादरतां ऽम्बा चालयन्ती हितम्... (४)

(२२)

कमलवल्लपंन तव राजते, जिनपते ! भुवनेश शिवात्मज,
मुकुरवद् विमलं क्षणदावशाद्, हृदयनायकवत् सुमनोहरम्... (१)

सकलपारगतः प्रभवन्तु मे, शिवसुखाय कुकर्म विदारकाः;
रूचिरमंगल वल्लिवने घना, दशतुरंगम गौर यशोधराः (२)

मदनमानजरानिघनोज्झिता, जिनपते ! तववागमृतोपमा,
भवभतां भवता वशर्मणेच्छि, पयोधिपत ज्ञनतारका (३)

जिनपपादपयोरूहहंसिका, दिशतु शासन निर्जर कामिनी,
सकलदेह भृताममलं सुखं, मुखविभाभर निर्जित भाधिपा... (४)

(२३)

जित मद नम नेमे, तानि सन्नाथ नेमे,
निरूपम शम नेमे, येन तुभ्यं विनेमे;
निकृत जलधि नेमे, सीर मोह द्रु नेमे,
प्रणिदधति न नेमे, तं परा आप्य नेमे... (१)

विगलित व्रजिनानां, नौमिराजीं जिनानाम्,
सरसज नयनानां, पूर्ण चंद्राननानाम्;
गजवर गमनानां, वारिवाह स्वनानाम्,
हत मद मदनानां, मुक्तजीवासनानाम्... (२)

अविकल कल तारा, प्राणनाथं सु तारा,
भवजलधि तारा, सर्वदा विप्र तारा:;
सुरनर विन तारा, त्वार्हति गीर्बतारा,
दनवर तमि तारा, ज्ञानलक्ष्मी सुतारा... (३)

नयन जीत कुरंगि, कांशु धारो चिरंगि,
मिह किल मुहु रंगि, कृत्य चित्तां तरंगि;
स्मृतिः सुचिरंगि, देवतां य स्तुरंगि,
कुरूत इम मुरंगि, त्यादि कृत् बंधुरंगी... (४)

(२४)

यदुवंशाकाशे उडुपतिसमा नेमिजिनजी !,
शरीरे रंभा भारती मदहरी राजुल तजी;
ग्रही दीक्षा भारी भविजन विबोधे दिनकरी !,
करो दृष्टि सवामी हरिणपशु जैसे हितकारी... (१)

गया मुक्ति स्वामी गिरिशिखर उज्ञंत शिरसी !,
अपापामां वीर शिवसुख अनंत विफरसी;
ज्याभू चंपामां धवलगिरि श्री आदिजिनजी !,
समेता आनंदामृत रस कर्या विस जिनजी... (२)

अनेकांत स्याद्वादनयगम भंगा विविधसु !,
यजे आहीं तीर्थांतर सवबुधै कीट स प्रसु;
निहारी वाणी जो जिननी सय पंचासय विहा,
सुधा धारा सारा जिन मुख थकी निर्गत सुहा... (३)

अधिष्ठात्री अंबा प्रवचन नमे नेमिजिनजी,
कुरोगो ने धोई सतत सुख शांति अति घणी;
विजय आनंदे श्री तपगणगणि वल्लभ सदा,
नमो भावे शुध्धे मनवचन काया फळ तदा... (४)

(२५)

गिरनार गिरिवर, नेमि जिनवर विश्वसुखकर देवरे,
ज्योतिष व्यंतर, भुवनवासी नाकि सारे सेव रे,

यदुवंश दिपक मदनजीपक बाविसमो नेमिनाथ रे,
भावे भजो भवि भुवन हितकर मुक्ति केरो साथ रे... १.

प्रथम जिनेश्वर सिध्धि पाम्या अष्टापद गुणंवत रे,
वासुपूज्य चंपा रैवताचल नेमि राजीमति कंत रे,
नयरी अपापा वीर स्वामी समेतशिखर गिरि राय रे;
तिहां विश जिनवर मुक्ति पाम्या तास प्रणमु पाय रे... २.

अरिहंत वाणी सुणो प्राणी चित्ते जाणी सार रे,
सिद्धांत दरियो रयण भरीयो भविकजन सुखकार रे;
आगम आराधि भाव साधी नरनारी वली जेह रे,
स्वर्गना सुख भोगवी पछी परम पद लहे तेह रे... ३.

अंबिका देवी यक्षगोमेध नेमि सेवा सारता,
जिन धर्म वासित भविकजनना दुरित दूर निवारता,
श्रीपुन्यविजय उवज्झाय सेवक भक्ते नामी शीश रे,
गुणविजय करजोडी जंपे पुरो संघ जगीश रे... ४.

(२६)

यदु कुलाम्बर भासन भास्करो,
जनि शिवानि शिवातनयः सृजन्;
नयतु नेमिजिनो जिन सम्पदं,
सुजन मंजन मंजु तनुत्विषः... (१)

सकल भव्य तमोभर भास्करा,
जन चकोर मुदेक निशाकराः;
तनुमतां नमतां ददतां श्रियं,
जिनवरा नवराग विदारिणः... (२)

नय वितानमणी रमणीयतां,
विदधतं गमभंग समाकुलम्;
भगवतां सकलांग भृतांदया,
रसमयं समयं जलधि श्रये... (३)

जिन पदाब्ज पराग मधुव्रता,
कवि कलाम्र विलास वनप्रिया;
शमयतामशिवं शिवकारिणी,
श्रुत सुरित सूरिजन मुख्यता... (४)

(२७)

नेमि जिनेसर समरीए, शिवादेवी माय,
समुद्रविजय कुल उपन्या, शंखलंछन पाय;
दश धनुष प्रभु देहमान, श्यामवरणी तस काय,
अष्टकर्म हेले हणी, मुक्तिपुरीमां जाय... (१)

नवणविलेपन वासनी, धूप दीप निवेद,
फुल अक्षते पूजीए, जेहथी जाय भव खेद;
जिन चोविसे पूजतां, दुर्गति नवि थाय,
महानिशिथे भाख्युं, बारमे देवलोके जाय... (२)

नेमिनाथ केवल लह्युं, उज्जयंतगिरि आय,
भविकजीवने कारणे, देशना दीये जिनराय;
सुणी चारीत्र केइ लहे, केइ श्रावक धर्म,
एम अनेक जीव भवतर्या, पाम्या शिवशर्म... (३)

गोमेध जक्षने अंबिका, शासन रखवाल,
जिननी सेवा जे करे, तेनी करे सारसंभाल;
आभव परभव सुख घणुं, जे ध्यावे चित्त,
मुनि हूकम जिन सेवीए, शिव पामवानी रीत... (४)

(१) निरख्यो नेमि जिणंदने

निरख्यो नेमि जिणंदने अरिहंताजी, राजिमती कर्यो त्याग; भगवंताजी,
ब्रह्मचारी संयम ग्रह्यो अरि., अनुक्रमे थया वीतराग - भ. १
चामर चक्र सिंहासन अरि., पादपीठ संयुक्त - भ.
छत्र चाले आकाशमां अरि., देवदुंदुभि वर उत्त - भ. २
सहस जोयण ध्वज सोहतो अरि., प्रभु आगल चालंत - भ.
कनक कमल नव उपरे अरि., विचरे पाय ठवंत - भ. ३
चार मुखे दीये देशना अरि., त्रण गढ झाकझमाल - भ.
केश रोम श्मश्रु नखा अरि., वाधे नहि कोइ काल - भ. ४
कांटा पण उंधा होये अरि., पंच विषय अनुकूल - भ.
षट्ऋतु समकाले फळे अरि., वायु नहि प्रतिकूल - भ. ५
पाणी सुगंध सुर कुसुमनी अरि., वृष्टि होय सुरसाल - भ.
पंखी दीये सुप्रदक्षिणा अरि., वृक्ष नमे असराल - भ. ६
जिन उत्तम पद पद्मनी अरि., सेवा करे सुरकोडी - भ.
चार निकायना जघन्यथी अरि., चैत्यवृक्ष तेम जोडी - भ. ७

(२) तोरण आवी रथ

(राग : एक दिन पुंडरीक...)

तोरण आवी रथ फेरी गया रे हां, पशुआं शिर देइ दोष मेरे वालमा;
नव भव नेह निवारियो रे हां, शो जोइ आव्या जोष. मेरे. तो. १

चंद्र कलंकी जेहथी रे हां, रामने सीता वियोग; मेरे.
तेह कुरंगने वयणडे हां, पति आवे कुण लोग. मेरे, तो. २

उतारी हुं चित्तथी रे हां, मुक्ति धुतारी हेत; मेरे.
सिद्ध अनंते भोगवी रे हां, तेहशुं कवण संकेत. मेरे तो. ३

प्रीत करंता सोहीली रे हां, निर्वहेतां जंजाल; मेरे,
जेहवो व्याल खेलाववो रे हां, जेहवी अगननी झाल. मेरे. तो. ४

जो विवाह अवसर दीयो रे हां, हाथ उपर नवि हाथ; मेरे.
दीक्षा अवसर दीजीए रे हां, शिर उपर जगनाथ, मेरे. तो. ५

इम वलवलती राजुल गइ रे हां, नेमि कने व्रत लीघ; मेरे,
वाचक यश कहे प्रणमीए रे हां, ए दंपति दोय सिद्ध. मेरे. तो. ६

(३) परमातम पूरण

परमातम पूरण कला, पूरण गुण हो पूरण जन आश;
पूरण दृष्टि निहाळीए, चित्त धरीये हो अमची अरदास, परमातम.१

सर्व देश घाती सहु, अघाती हो करी घात दयाल;
वास कीयो शिवमंदिरे, मोहे वीसरी हो भमतो जगजाल, परमातम. २

जगतारक पदवी लही, तार्या सही हो अपराधी अपार;
तात कहो मोहे तारतां, किम कीनी हो इण अवसर वार, परमातम. ३

मोह महामद छाकथी, हुं छकीयो हो नहि शुद्धि लगार;
उचित सही इणे अवसरे, सेवकनी हो करवी संभाळ, परमातम. ४

मोह गये जो तारशो, तिण वेळा हो कीहां तुम उपगार;
सुख वेळा सज्जन घणा, दुःख वेळा हो विरला संसार, परमातम. ५

पण तुम दरिशन जोगथी, थयो हृदये हो अनुभव प्रकाश;
अनुभव अभ्यासी करे, दुःखदायी हो सहु कर्म विनाश, परमातम. ६

कर्म कलंक निवारीने, निज रूपे हो रमे रमता राम;
लहत अपूरव भावथी, इण रीते हो तुम पद विसराम, परमातम. ७

त्रिकरण जोगे हुं विनवुं, सुखदायी हो शिवादेवीना नंद्र
चिदानंद मनमें सदा, तुमे आवो हो प्रभु नाणदिणंद, परमातम. ८

(४) रहो रहो

(राग : बोलो बोलो रे शालीभद्र...)

रहो रहो रे यादवजी दो घडीयां. रहो.
दो घडीयां, दो चार घडीयां, रहो रहो रे यादवजी दो घडीयां;
शिवा मात मल्हार नगीनो, क्युं चलीए हम विछडीयां;
यादव वंश विभूषण स्वामी, तुमे आधार छो अडवडीयां. रहो रहो.१

तो बिन ओरसें नेह न किनो, ओर करनकी आंखडीयां;
इतने बिच हम छोड़ न जइए, होत बुराइ लाजडीया. रहो रहो. २

प्रीतम प्यारे कहकर जानां, जे होत हम शिर बांकडीयां;
हाथसें हाथ मिलादे सांइ, फुल बिछाउं सेजडीयां. रहो रहो. ३

प्रेमके प्याले बहुत मसाले, पीवत मधुरे सेलडीया;
समुद्रविजय कुलतिलक नेमकुं, राजुल झरती आंखडीयां. रहो रहो. ४

राजुल छोड चले गिरनारे, नेम युगल केवल वरीयां;
राजीमती पण दीक्षा लीनी, भावना रंग रसे चडीयां. रहो रहो. ५

केवल लइ करी मुगति सिधाये, दंपति मोहन वेलडीयां;
श्री शुभवीर अचल भइ जोडी, मोहराय शिर लाकडीयां. रहो रहो. ६

(५) अब मोरी अरज

अब मोरी अरज सुनो महाराज, हो गिरनार के जानेवाले;
गिरनार के जानेवाले, हो मुगति के पानेवाले (अंचली) अब,
मुक्ति भोग जोग लीया धार, अब कया सोचो नेमकुमार;
करती राजुल सोच विचार, वेरण मुक्तिने घर घाला. अ. १

तोरण आय रथ दीया फेर, प्रभु तुम सुनी पशुअनकी टेर;
तुमने जरा न कीनी देर, नव भव प्रीत निभानेवाले. अ. २

डूबी भवसागरमां नैया, मेरे तुम बीन कौन खेवैया;
तुम हो अरजी के सुनवैया, बेडा पार लगानेवाले. अ. ३

दिल मेरा है तेरा गुलाम, हरदम लेता तेरा नाम;
मुझे भक्ति सिवा नहीं काम, मेरे दिलमें समानेवाले. अ. ४

तुम तो नेमनाथ भगवान, लीना सहसावनमें ध्यान,
कीना अति उत्तम ए काम, आतम पार लगानेवाले. अ. ५

(६) में आज दरिसण

में आज दरिसण पाया, श्री नेमिनाथ जिनराया.
प्रभु शिवादेवीना जाया, प्रभु समुद्रविजय कुल आया,
कर्मों के फंद छुडाया, ब्रह्मचारी नाम धराया;
जीने तोडी जगतकी माया (२) में. १

रैवतगिरि मंडनराया, कल्याणक तीन सोहाया,
दीक्षा केवल शिवराया, जगतारक बिरुद धराया;
तुम बैठे ध्यान लगाया (२) में. २

अब सुनो त्रिभुवनराया, में कर्मों के वश आया,
मैं चतुर्गति भटकाया, में दुःख अनंता पाया;
ते गीनती नाही गिनाया. (२) में. ३

में गर्भावासमें आया, उंधे मस्तक लटकाया,
आहार अरसविरस भुगताया, एम अशुभ करम फल पाया;
इण दुःखसे नाहि मुकाया (२) में. ४

नरभव चिंतामणि पाया, तब चार चोर मील आया,
मुजे चौटेमें लूंट खाया, अब सार करो जिनराया;
किस कारण देर लगाया (२) में. ५

जिणे अंतरगतमें लाया, प्रभु नेमि निरंजन ध्याया,
दुःख संकट विघन हटाया, ते परमानंद पद पाया;
फिर संसारे नहि आया (२) में. ६

में दूर देशसें आया, प्रभु चरणे शीष नमाया,
में अरज करी सुखदाया, तुमे अवधारो महाराया;
एम विरविजय गुण गाया (२) में. ७

(७) तुज दरिशन दीठु

तुज दरीशन दीठु अमृत मीठु लागे रे यादवजी,
खिण खिण मुज तुजशुं धर्म सनेहो जागे रे यादवजी,
तुं दाता त्राता भ्राता माता तात रे यादवजी,
तुज गुणना मोटा जगमां छे अवदात रे यादवजी. १

काचे रति मांडे सूरमणी छांडे कुण रे यादवजी,
लइ साकर मूकी कुण वळी चूकी लुण रे, यादवजी;
मुज मन न सुहाये तुज विण बीजो देव रे, यादवजी,
हुं अहर्निश चाहुं तुज पद पंकज सेव रे यादवजी. २

सुरनंदन हेवा गज जिम रेवा संग रे यादवजी,
जिम पंकज भृंगा शंकर गंगा रंग रे, यादवजी;
जिम चंद चकोरा मेहा मोरा प्रीति रे यादवजी,
तुजमां हुं चाहु तुज गुणने जोगे छती, यादवजी. ३

में तुमने धार्या विसार्या नहि जाय रे. यादवजी,
दिन राते भाते ध्याउं तो सुख थाय रे, यादवजी;
दिल करूणा आणो जो तुम जाणो राग रे यादवजी,
दाखो एक वेळा भवजल केरा ताग रे यादवजी. ४

दुःख टळीयो मीलीयो आपे मुज जगनाथ रे यादवजी,
समता रस भरीयो गुण दरियो शिव साथ रे यादवजी;
तुज मुखडुं दीठे दुःख नाठे सुख होइ रे यादवजी,
वाचकजस बोले नहि तुज तोले कोइ रे यादवजी. ५

(८) हारे मारे नेमि

(राग : हारे मारे धर्म जिनेश्वर)

हांरे मारे नेमि जिनेसर, अलवेसर आधार जो,
साहिबरे सोभागी गुणमणी आगरूं रे लो;
हांरे मारे परम पुरुष परमातम देव पवित्रजो,
आज महोदय दरिसण पाम्यो ताहरु रे लो. १

हांरे मारे तोरण आवी, पशु छोडावी नाथजो,
रथ फेरीने वळीया, नायक नेमजीरे लो;
हांरे मारे दैव अटारें, ओ शुं कीधु आज जो,
रढीयाळी वर राजुल छोडी नेमजी रे लो. २

हांरे मारे सयोगी भाव, वियोगी जाणी स्वामी जो,
ए संसारे भमता को केहनुं नहि रे लो;
हांरे मारे लोकांतिकने, वयणे प्रभुजी तामजो,
वरसीदान दीये तिण अवसर जिन सहीरे लो. ३

हांरे मारे सहसावनमां सहस पुरूषनी साथजो,
भवदुःख छेदन कारण चारित्र आदरे लो,
हांरे मारे वस्तु तत्त्वने रमण करंता सार जो;
चोपनमें दिन केवळज्ञान दशा वरे रे लो. ४

हांरे मारे लोकालोक प्रकाशक त्रिभुवन भाणजो,
त्रिगडे बेसी धरम कहे श्री जिनवरू रे लो;
हांरे मारे शिवानंदन वरसे सुखकर वाणीजो,
आस्वादे भवि भाव धरीने सुंदरू रे लो. ५

हांरे मारे देशना निसुणी, बुज्या राजुल नारजो,
निज स्वामीने हाथे संयम आदरे रे लो;
हांरे मारे अष्ट भवोनी, पाळी पूरण प्रीतजो,
पियु पहेला शिव लक्ष्मी राजीमती वरे रे लो. ६

हांरे मारे विचरी वसुधा, पावन कीधी सारजो,
जग चिंतामणी जग उपगारी, गुणनिधिरे लो;
हांरे मारे जिन उत्तम पद पंकज केरी सेवजो,
करता रतन विजयनी कीरति अति वधीरे लो. ७

(९) द्वारापुरीनो नेम

द्वारापुरीनो नेम राजीयो; तजीं छे जेणे राजुल जेवी नार रे,
गिरनारी नेम संयम लीधो छे बाळा वेशमां १

मंडप रच्यो छे मध्यचोकमां, जोवा मळीया छे द्वारापुरीना लोक रे. २

भाभीए मेणामार्या नेमने, परणे व्हालो श्री कृष्णनोवीर रे. ३

गोखे बेसीने राजुल जोइ रह्या, क्यारे आवे जादवकुळनो दीप रे. ४

नेमजी ते तोरण आवीया, सुणी कंइ पशुनो पोकार रे. ५

सासुए नेमजीने पोंखीया, व्हालो मारो तोरण चढवा जाय रे. ६

नेमजीए साळाने बोलावीया, शाने करे छे पशुडा पोकार रे. ७

राते राजुल बहेन परणशे, सवारे देशुं गौरवना भोजन रे. ८

पशुए पोकार कर्यो नेमने, उगारो व्हाला राजीमती केरां कंत रे. ९

नेमजीअे रथ पाछो वाळीओ, जई चढ्या गढ गिरनार रे. १०

राजुल बेनी रूवे धुसके, रूवे कांइ द्वारापुरीना लोक रे. ११

वीराए बेनीने समजावीया, अवर देशुं नेम सरीखो भरथार रे. १२

पीयुं ते नेम एक धारीया, अवर देखु भाईने बीजा बाप रे. १३

जमणी आंखे श्रावण सरवरे, डाबी आंखे भादरवो भरपूर रे १४

चीर भींजाय राजुल नारीना, वागे छे कांइ कंटको अपार रे. १५

नेम तीर्थंकर बावीसमा, सखीयो कहे ना मळे एनी जोड रे. १६

हीर विजय गुरू हीरलो, लब्धि विजय कहे करजोड रे. १७

(१०) सहसावन जई

सहसावन जई वसीये, चालोने सखी सहसावन जइ वसीये;
घरनो धंधो कबही न पुरो, जो करीए अहो निशिए;
पीयरमां सुख घडीय न दीठु, भय कारण चउदिशिये, १

नाथ विहुणा सयल कुटुंबी, लज्जा कमियी न पसीए;
भेगा जमीए ने नजर न हिंसे, रहेवुं घोर तमसीए. २

पीयर पाछळ छल करी मेल्युं, सासरीये सुख वसीये;
सासुडी ते घर घर भटके, लोकने चटके डसीए. ३

कहेता साचुं आवे हासुं, भुंशीये मुख लइ मशीए;
कंत अमारो बाळो भोळो, जाणे न असि मसि कसिए. ४

जुठा बोली कलहण शीला, घर घर शूनि ज्युं भसीये;
ए दुःख देखी हइडुं मुंझे, दुर्जनथी दूर खसीये. ५

रैवत गिरिनुं ध्यान न धरीयुं, काल गयो हसमसीए;
श्री गिरनारे त्रण कल्याणक, नेमि नमन उल्लसीए. ६

शिव वरसे चोविश जिनेश्वर, अनागत चउवीशीए;
कैलास उज्जयंत रैवत कहीए, शरण गिरिने फरशीये. ७

गिरनार नंदभद्र ए नामे, आरे आरे छवीसीये;
देखी महितल महिमा मोटो, प्रभुगुण ज्ञान वरसीए. ८

अनुभव रंग वधे तेम पूजो, केशर घसी ओरशीये;
भावस्तव सुत केवल प्रगटे, श्री शुभवीर विलशीये. ९

(११) नेमि जिनेश्वर

(राग : सिध्धारथना रे नंदन)

नेमि जिनेश्वर नमीए नेहशुं, ब्रह्मचारी भगवान;
पांच लाख वरसनुं आंतरू, श्याम वरण तनुवान. १

कारतिक वदि बारस चविया प्रभु, माता शिवादे मल्हार;
जनम्या श्रावण सुदिपांचम दिने, दश धनुष काया उदार. २

श्रावण सुदि छट्ठे दीक्षा ग्रही, आसो अमासे रे नाण;
अषाढ सुदि आठमे सिध्धि वर्या, वरस सहस आयु प्रमाण. ३

हरि पटराणी शांब प्रद्युम्न वली तिम वसुदेवनी नार;
गजसुकुमाल प्रमुख मुनिराजीया, पहोंचाड्या भवपार. ४

राजीमती प्रमुख परिवारने, तार्यो करूणा रे आण;
पद्मविजय कहे निज पर मत करो, मुज तारो तो प्रमाण. ५

(१२) अरजी सुनलो

(रागः मेरा जीवन कोरा)

अरजी सुनलो हो नेम नगीना, राजुलना भरथार,
भजलो भजलो हो जगना प्राणी, भजो सदा किरतार...अरजी १

जान लइने आव्या त्यारे, हर्ष तणो नहि पार,
पशुतणो पोकार सुणीने, पाछा वळ्या तत्काळ... अरजी २

राजुल गोखे राह नीरखती, रडती आंसुधार,
पियुजी मारा केम रिसायां, मुज हैयाना हार... अरजी ३

नेम बन्यां तीर्थंकर स्वामी, बावीशमा जिनराज,
माया छोडी मनडुं साध्युं, नमो नमो शिरताज... अरजी ४

नेम निरंजन नाथ हमारा, अम नयनोना तारा,
बाळक तुम भक्तिने माटे, रडतो आंसुधार... अरजी ५

परदुःख भंजन नाथ निरंजन, जगपालक किरतार,
ज्ञानविमल कहे, भवसिन्धुथी, मुजने पार उतार.... अरजी ६

(१३) नेम प्रभुना

(राग : अमी भरेली नजरू राखो...)

नेम प्रभुना चरण कमळनी लगनी अमने लागी;
भर जोबनमां राजुल जेवी रमणी जेणे त्यागी... नेम....१

कृष्णदेवनी सघळी नारी, मनहरनारी कामणगारी;
विवाहनी वातो उच्चारी, मन डोलावा लागी... नेम....२

पशुओनी सुणीने वाणी, दया अतिशय दिलमां आणी;
गिरनारे जइ संयमधारी, माया ममता त्यागी... नेम....३

पाछळ आवी राजुल नारी, पूर्व जन्मथी छे संस्कारी;
तेने पण आपे त्यां तारी, भवनी भावठ भागी... नेम....४

रोमरोममां निर्विकारी, अमने आपो बुद्धि सारी;
श्याम जीवनमां झळहळकारी, निर्मळ ज्योति जागी... नेम....५

(१४) नेमजी कागल

(राग : मेरा जीवन कोरा कागझ)

नेमजी कागल मोकले, निशदिन राजुल हाथ;
हवे अमे संयम लेइशुं, तमे चालो अमारी साथ... ॥१॥

अमे छीए गढ गिरनारमां, सुंदर सहेसारे वन;
तिहां तमे व्हेला पधारजो, जो होय संयमनो मन... ॥२॥

कहेशो अमने कह्युं नही, आठ भवनी हो प्रीत;
वलतुं वालम वालमा, ए छे उत्तम रीत... ॥३॥

लेख वांचीने राजीमति, चढियां गढ़ गिरनार;
स्वामी हाथे संयम लीधो, पाळे पंच आचार... ॥४॥

धन्य राजुल धन्य नेमजी, धन्य धन्य बेहुनी प्रीत;
संयम पाळी मुक्ते गयां, रूप वंदे निशदिन... ॥५॥

(१५)

(राग : सोनामां सुगंध भळे...)

सुणोसखी सज्जन ना विसरे, सुणो सखी०... आंकणी०

आठ भवांतर नेह निवाही, नवमें कयुं विसरे;
नेह विलुब्धो आ दुनियामां, झंपापात करे सु०. ॥१॥

घर छंडी परदेशमें भमता, पूरण प्रेम करे;
जान सजी करी जादव आये, नयने नयन मिले सु०. ॥२॥

तोरण देख गये गिरनारे, चारित्र लेइ विचरे;
दूषण भरिया दुर्जन लोको, दयिता दोष भरे सु०. ॥३॥

मात शिवासुत सांभल सज्जन, साचा इम ठरे;
तोरण आइ मुज समजाइ, संयम शान करे सु०. ॥४॥

राजुल राग विरागे रहेती, ज्ञान वधाइ वरे;
प्रीतम पासे संयम वासे, पातिक दूर करे सु०. ॥५॥

सहसावनकी कुंज गलनमें, ज्ञान से ध्यान धरे;
केवल पामी शिवगति गामी, आ संसार तरे सु०. ॥६॥

नेमिजिणेसर सुख सय्याए, पोढ्या शिवनगरे;
श्री शुभवीर अखंड सनेही, कीर्ति जग प्रसरे सु०. ॥७॥

(१६) आव्या उग्रसेन

(राग : मारा शामळा छो नाथ)

आव्या उग्रसेन दरबार, नेम परणवा राजुलनार,
नवभवनी नारीने बुजववा ॥१॥

जान तोरण पासे आवे, सखीयो मंगल गीतो गावे,
सजी सोल शणगार, राजुल उभा गोख मोजार,
पति शामलीया नेमने निहाळवा. ॥२॥

सुणी नेमनुं हैयुं दुभाय छे, रथडो पाछो वाळीने जाय छे,
देवा मांडयुं वरसीदान, त्यांतो रूवे राजुलनार ॥३॥

पति विरह सुणी धरणी ढळे, राजुल कोटी कोटी विलाप करे,
मुजने छोडी न जाओ नाथ, हुं तो आवु तमारी साथ ॥४॥

सहसावनमां जइ संयम लीये, राजुल पण संसार तजे,
बुजवी स्नेहे राजुलनी जोडी शोभे छे ॥५॥

बन्ने मुक्तिनी मोज माणे छे,
पहेला तारी राजुल नार पछी पहेरे मुक्तिमाळ, पति० ॥६॥

गुरू उदय रत्न विनवे छे, भवोभवनां दर्शन इच्छे छे,
जेम तारी राजुलनार, तेम तारी ल्यो आ बाळ,
पति शामलीया नेमने निहाळवा. ॥७॥

(१७) नेमि जिनेसर

(राग : सिद्धारथना रे नंदन)

नेमि जिनेसर निज कारज कर्यो, छांड्यो सर्व विभावोजी;
आतम शक्ति सकळ प्रगट करी, आस्वाद्यो निज भावोजी... (१)

राजुल नारी रे सारी मति धरी, अवलंब्या अरिहंतोजी;
उत्तम संगे रे उत्तमता वधे, साधे आनंद अनंतोजी... (२)

धर्म अधर्म आकाश अचेतना, ते विजाती अग्राह्योजी;
पुद्गल ग्रहवे रे कर्म कलंकता, वाधे बाधक बाह्योजी... (३)

रागी संगे के राग दशा वधे, थाए तिणे संसारोजी;
निरागीथी रे रागने जोडवो, लहीये भवने पारोजी... (४)

अप्रशस्तता रे टाळी प्रशस्तता, करवा आश्रव नाशोजी;
संवर वाधे रे साथे निर्जरा, आतम भाव प्रकाशोजी... (५)

नेमि प्रभु ध्याने एकत्वता, निज तत्त्वे इक तानोजी;
शुकल ध्याने रे साधी सुसिद्धता, लहिये मुक्ति निदानोजी... (६)

अगम अरूपी रे अलख अगोचरू, परमातम परमीशोजी;
देवचंद जिनवरनी सेवना, करतां वाधे जगीशोजी... (७)

(१८) सुणो सैयर मोरी

सुणो सैयर मोरी, जुओ अटारी आवे छे नेम कुमार;
शिवा देवीनो नंद छे वालो, समुद्र विजय छे तात,
कृष्ण मोरारीनो बांधव वखाणुं, यादव कुळ मोझार रे,
प्रभु नेम विहारी, बाळ ब्रह्मचारी, जुओ अटारी... १

अंग फरके छे जमणुं बेनी, अपशुकन मने थाय;
जरूर व्हालो पाछो ज वळशे, नहि ग्रहे मुज हाथ रे,
मने थया दुःख भारी, कहुं हुं आभारी, जुओ अटारी रे... २

परणुं तो बेनी तेनेज परणुं, अवर पुरूष भाइ बाप;
हाथ न ग्रहो मारो तो तेमने मुकावु मस्तके हाथ,
हुं थावुं व्रत धारी, बाळ ब्रह्मचारी, जुओ अटारी... ३

संयमधारी राजुल नारी, चाल्या छे गढ गिरनार;
मारगे जाता मेघजी वरस्या, भींजाय सतीना चीररे,
गया गुफा मोझारी, मनमां विचारी, जुओ अटारी... ४

चीर सुकवे छे सती राजुला, नग्न पणे तेणी वार;
रहनेमि तिहां काउस्सग्गे उभा, रूपे मोह्या तेणीवार,
सुणो भाभी अमारी, थाव घरबारी, जुओ अटारी... ५

वमेला आहारने शुं करवो छे, सुणो दियर मोरी वात,
मुजने वमेली जाणो देवरजी, शाने खोवो व्रत धीररे,
संयम सुखकारी, पाळो आवारी, जुओ अटारी... ६

रहनेमि मुनिवर राजीमतीने, उपन्युं केवळज्ञान;
चरम शरीरी मोक्षे पधार्या, साधवा आतम काजरे,
वीर विजय आवारी, गाउं गुण भारी, जुओ अटारी... ७

(१९) थाशुं काम सुभट गयो

(राग - चांदी की दिवार ना तोडी...)

थाशुं काम सुभट गयो हारी, थाशुं काम सुभट गयो हारी;
रतिपति आण वहे सौ सुरनर, हरि हर ब्रह्म मुरारि रे...थाशुं... १

गोपीनाथ विगोपीत कीनो, हर अर्धांगित नारी रे;
तेह अनंग कीयो चकचूरण, ए अतिशय तुज भारी... थाशुं... २

ए साचुं जिन नीर- प्रभावे, अग्नि होत सवि छारी रे;
ते वडवानल प्रबल जब प्रगटे, तब पीवत सवि वारि रे...थाशुं...३

तेणी परे दहवट अति कीनी, विषय रति अरति नारी रे;
नय विजय प्रभु तुहीं निरागी, तुं ही मोटा ब्रह्मचारी... थाशुं...४

(२०) नेमि निरंजन नाथ

(राग - आज मारा प्रभुजी)

नेमि निरंजन नाथ हमारो, अंजन वर्ण शरीर;
पण अज्ञान तिमिरने टाळे, जीत्यो मनमथ वीर...

प्रणमो प्रेम धरीने पाय, पामो परमानंदा;
यदुकुलचंदा राय ! मात शिवादेवी नंदा... प्रणमो प्रेम...१

राजीमती शुं पूरव भवनी, प्रीत भली परे पाळी,
पाणिग्रहण संकेते आवी, तोरणथी रथ वाळी... प्रणमो प्रेम...२

अबळा साथे नेह न जोड्यो, ते पण घन्य कहाणी,
एक रसे बिहु प्रीत थइ तो, कीर्ति क्रोड गवाणी... प्रणमो प्रेम...३

चंदन परिमल जिम, जिम खीरे घृत एकरूप नवि अलगा,
इम जे प्रीत निवासहे अहनिश, ते धन गुण सुविलगा... प्रणमो प्रेम...४

इम एकंगी जे नर करशे, ते भव सायर तरशे,
ज्ञानविमल लीला ते धरशे, शिवसुंदरी तस वरशे...प्रणमो प्रेम...५

(२१) देखो माइ ! अजब

(राग - जिन तेरे चरण की शरण...)

देखो माइ ! अजब रूप जिनजी को...
इन के आगे और सबहुं को, रूप लागे मोंहे फिको... देखो...
नयन करूणा अमृत कचोले, मुख सोहे अति निको... देखो....
कवि जशविजय कहे ए नेमजी, प्रभु त्रिभुवन टीको... देखो...

(२२) महेर करो मनमोहन

(राग - निरख्यो नेमि जिणंदने...)

महेर करो मनमोहन दुःखवारणजी, आवो आणे गेह चित्तठारणजी;
रोष न कीजे राजीया दुःखवारणजी, आणो हइडे नेह चित्तठारणजी... १

काल जशे कहाणी चहेरो दुःखवारणजी, जग विस्तरशे वात चित्तठारणजी;
कोइ मुजने नरती कहशें दुःखवारणजी, कोइ वली तुम्हने कुभात चित्तठारणजी... २

पहिलि वात विमासीये दुःखवारणजी, तो न होय उपहास चित्तठारणजी;
जो होयें घर आपणो दुःखवारणजी, तोहिज दीजें आश चित्तठारणजी... ३

विण तरूअर वनवेलीने दुःखवारणजी, कुण राखे ? निज छांहि चित्तठारणजी;
कंत विना तेम नारीने दुःखवारणजी, कुण अवलंबे ? बांहि चित्तठारणजी... ४

नेह नथी मुज कारमो दुःख वारणजी, निश्चे जाणो नाथ चित्तठारणजी;
देह तणी जिमछांडही दुःखवारणजी, नहीं छांडु तिम साथ चित्तठारणजी... ५

दुःखीयाना दुःख टाळवा दुःखवारणजी, शुं शुं न करे संत ? चित्तठारणजी;
तो मुज आप उत्तम थइ दुःखवारणजी, कां उवेखो कंत चित्तठारणजी... ६

इम कहेती राजीमती दुःखवारणजी, पोहती गढ गिरनार चित्तठारणजी;
विनय कहे जइ मुगतिमां दुःखवारणजी, भेट्यो निज भरतार चित्तठारणजी... ७

(२३) शौरीपुर सोहामणुं रे

(राग - एक दिन पुंडरिक गणधरूं रे लाल...)

शौरीपुर सोहामणुं रे लाल, समुद्रविजय नृप नंद रे सोभागी,
शिवादेवी माता जनमीयो रे लाल, दरिसण परमानंद रे सोभागी...१
नेमि जिनेसर वंदिये रे लाल...

जोबन वय जब जिन हुआ रे लाल, आयुधशाळा आय रे सोभागी,
शंख शब्द पूर्यो जदा रे लाल, भय भ्रांत सहु तिहा थाय रे सोभागी...२

हरि हइडे एम चिंतवे रे लाल, ए बलियो निरधार रे सोभागी,
देव वाणी तब इम हुए रे लाल, ब्रह्मचारी व्रतधार रे सोभागी...३

अंते उरी सहु भेली थइ रे लाल, जल श्रृंगी कर लीध रे सोभागी,
मौन पणे जब जिन रह्या रे लाल, मान्युं - मान्युं एम कीध रे सोभागी... ४

उग्रसेन राय तणी सुता रे लाल, जेहनुं राजुल नाम रे सोभागी,
जान लेइ जिनवर गया रे लाल, फल्यो मनोरथ ताम रे सोभागी...५

पशुय पोकार सुणी करे रे लाल, चित्त चिंते जिनराय रे सोभागी,
धिग् ! विषया सुख कारणे रे लाल, बहु जीवनो वध थाय रे सोभागी...६

तोरणथी रथ फेरीयो रे लाल, देइ वरसी दान रे सोभागी,
संजम मारग आदर्यो रे लाल, पाम्या केवळ ज्ञान रे सोभागी...७

अवर न इच्छुं इण भवे रे लाल, राजुले अभिग्रह लीघ रे सोभागी,
प्रभु पासे व्रत आदरी रे लाल, पामी अविचळ रिद्ध रे सोभागी...८

गिरनार गिरिवर उपरे रे लाल, त्रण कल्याणक जोय रे सोभागी,
श्री गुरु खिमाविजय तणो रे लाल, जश जग अधिको होय रे सोभागी...९

(२४) नेमि जिनेसर वाल्हो रे....

(राग - सरस्वती स्वामिने विनवुं रे मनना रसीया...)

नेमि जिनेसर वाल्हो रे, राजुल कहे इम वाण रे... मनवसीया
एहज में निश्चय कीयो रे, सुखदायक गुण खाण रे... शिवरसीया...१

कृपावंत शिरोमणि रे, में सुण्यो भगवंत रे... मनवसीया
हरिण - शशादिक जीवने रे, जीवित आप्युं संत रे... शिवरसीया...२

मुज कृपा ते नवि करी रे, जाणुं सहि वीतराग रे... मनवसीया
याचक दु:खीया-दीनने रे, दीधुं दान महाभाग्य रे... शिवरसीया...३

मागुं हुं प्रभु एटलुं रे, हाथ उपर द्यो हाथ रे... मनवसीया
ते आपी तुम नवि शको रे, आपो चारित्र हाथ रे... शिवरसीया...४

चारित्र ओथ आपी करी रे, राजुल निज सम कीध रे... मनवसिया
ऋद्धि कीर्ति पामी करी रे, अमृत पदवी लीध रे... शिवरसीया...५

(२५) नेमिजिन सांभळो

(राग - तार मुज तार - ऋषभ जिनराज...)

नेमिजिन सांभळो विनति मुज तणी, आश निजदासनी सफळ कीजे,
ब्रह्मचारी शिरसेहरो तुं प्रभो, तात मुज वात तुं चित्त धरीजे.... १

नगर शौरीपुर नाम रळीयामणुं, समुद्रविजयाभिधे भूप दीपे,
श्री शिवादेवी नंदन करूं वंदना, अंजनवान रतिनाथ जीपे... २

शंख उज्ज्वल गुणा शंख लांछन थकी, सार इग्यार गणधर सोहावे,
आउ एक सहस वरस माने कह्युं, अंग दशधनुष माने कहावे...३ यक्ष
गोमेधने अंबिका यक्षिणी, जैनशासन सदा सौख्यकारी,
अढार हजार अणगार श्रुतसागरा, सहस चालीश अज्ञाविचारी... ४

कांचनादिक बहु वस्तु जगकारमी, सार संसारमां तुं ही दीठो,
प्रमोद सागर प्रभु हरखथी निरखतां, पातिक पूर सवि दूर नीठो... ५

(२६) बावीसमा नेमि जिणंद

(राग - यह है पावनभूमि...)

बावीसमा नेमि जिणंद, मुख दीठे परम आणंद,
भवि कुमुद चकोरी चंद, सेवे वृंदारक वृंद... बावीसमा... १

परमातम पूरण आनंद, पुरुषोत्तम परम मुणिंद,
जय जय जिनजगत जिणंद, गुणगावे त्रिभुवन वृंद... बावीसमा...२

धीरीम जित मेरूगिरींद, गंभीरम शयन मुकुंद,
सदा सुप्रसन्न मुख अरविंद, दंत छबि चित्त मसि कुंद... बावीसमा...३

श्री समुद्रविजय नरींद, माता शिवादेवीना नंद,
वारंता प्रभु भवभय फंद, दूरे कर्या दुःख कंद... बावीसमा...४

जेणे जीत्या मोह मृगेंद, शिवसुख भोगी चिदानंद,
वाघजी मुनि शिष्य भाणचंद्र, इम विनवे हर्ष अमंद... बावीसमा... ५

(२७) नेमिजिन जादवकुळ

(राग - चांदी की दिवार ना तोडी...)

नेमिजिन जादवकुळ तार्यो, नेमिजिन जादवकुळ तार्यो,
एकही एक अनेक उपरे, कृपा धरम मन धार्यो... नेमि...१

विषय विषोपम दुःख के कारण, जाणी सबी सुख छायो,
संजम लीनो पशुहित कारन, मदन सुभट मद गार्यो... नेमि...२

आप तरी राजुलकुं तारी, पूरव प्रेम समार्यो,
कहे जिनहर्ष हमारी किरपा, क्या मनमांही विचार्यो... नेमि...३

(२८) सांभळ स्वामी चित्तसुखकारी !

(राग - इतनी शक्ति हमे देना...)

सांभळ स्वामी ! चित्त सुखकारी ! नवभव केरी हुं तुज नारी !
प्रीति विसारी कां प्रभु मोरी, कयुं रथ फेरी जाओ छोरी... १

तोरण आवी शुं मन जाणी ? परिहरी माहरी प्रीति पुराणी,
किम वन साधे ? व्रत लीये आधे विण अपराधे श्ये प्रतिबंध ?... २

प्रीति करीने किम तोडीजे, जेणे जस लीजे ते प्रभु कीजे,
जाण सुजाण ज ते जाणीजे, वात जे कीजे ते निवहीजे... ३

उत्तमही जो आदरी छंडे, मेरू महीधर तो किम मंडे ?
जो तुम सरीखा सयण ज चूके, तो किम जलघर धारा मूके... ४

निगुणा भूले ते तो त्यागे, गुण विण निवही प्रीति न जाये,
पण सुगुणा जो भूली जाये, तो जगमां कुणने कहेवाये ?... ५

एक पंखी पण प्रीति निवाहे, धन धन ते अवतार आराहे,
इम कही नेमशुं मली एकतारे, राजुल नारी जइ गिरनारे... ६

पूरण मनमां भाव धरेइ, संयमी होइ शिवसुख लेइ,
नेम शुं मलीया रंगे रलीया, केशर जंपे वंछित फलीयां... ७

(२९) नेमजी रे तोरण

(राग - बेना रे...)

नेमजी रे तोरण आवीने पाछा न जवाय,
कुंवारी कन्या राणी राजुल कहेवाय,
प्रभु गुण गाय, सामे ज थाय... कुंवारी... १

आठ भवोनी प्रितलडीने, नवमे भवे ना तोडाय (२)
बाल ब्रह्मचारी राजुलबाळा, विनवे नेमजीने पाय (२)
नेमजी रे पाछा वळीने, अमारो पकडोने हाथ... कुंवारी... २

पशुतणो पोकार सुणीने, रथ पाछो वाळ्यो (२)
ध्रुसके रुवे राजुलबाला, धरणी पर छे धराणी (२)
नेमजी रे पाछा वळीने, तिंहा दीधुं वरसीदान... कुंवारी... ३

पंचावन में दिन प्रभुजी, पाम्या केवल ज्ञान (२)
सुणी वधामणी राजुलबाला, प्रभुजीने चरणे जाय (२)
नेमजी रे दीक्षा आपी कर्म खपावी, मुक्तिपुरीमां जाय... कुंवारी... ४

केवल कल्याणक जे कोइ गाशे, लेशे मुक्तिनुं राज (२)
नेमजी पहेला पहोंची राजुल, मुक्तिने गोतवा जाय (२)
नेमजी रे हीर विजय गुरु, हीरलोने वीर विजय गुणगाय... कुंवारी... ५

(३०) राग : तने साचवे पार्वती अखंड सौभाग्यवंती

आवो आवो ने नेमकुमार, आवो ने अम आंगणीए,
विनवे रडती राजुलनार, आवो ने अम आंगणीए...
बांध्या बांध्या तोरण बारणे, वागे वागे शरणाई ढोल आंगणीए,
सज्या राजुल सोले शणगार...

आपणी आठ आठ भवनी प्रीतलडी, नवमे भव केम विसारी दीधी,
ओछुं आव्युं शुं राजकुमार...

सुणी पोकार पशुडा पाडता, प्रभु रथने पाछो वाळता,
बसिया जई गढ गिरनार...

लीधुं संयम केवल मोक्षे गया, दीक्षा लीधी राजुल संगे गया,
माणेक वंदन वारंवार...

(१) सौ चालो गिरनार जइए

(राग - सौ चांलो सिध्धगिरि जइए...)

सौ चालो गिरनार जइए, प्रभु भेटी भवजल तरीये;
सोरठ देशे तरवानुं मोटुं जहाज छे... सौ. १,
ज्यां सन्यासीओ बहु होवे, धर्मभावथी गिरिवर जोवे;
एवुं सुंदर जूनागढ गाम छे... सौ. २,
ज्यां गिरनार द्वार आवे, विविध भावना सौ भावे;
एवुं मोहक रणीयामणुं आ स्थान छे... सौ. ३,
ज्यां तणेटी समीपे जातां, आदेश्वरना दर्शन थाता;
धर्मशाळा ने बगीचो अभिराम छे... सौ. ४,
ज्यां गिरि चढतां जमणे, अंबा सन्मुख उगमणे;
मस्तके पगलां प्रभु नेमिकुमारना छे... सौ. ५,
ज्यां गिरि चढंता भावे, भव्यात्मा कर्म खपावे;
एवो मारग मुक्तिपुरी जाय छे... सौ. ६,
ज्यां चडाण आकरा आवे, दादानी याद सतावे,
जपतां हैये हाश मोटी थाय छे... सौ. ७,
ज्यां पहेली टूंके जातां, दहेराना दर्शन थातां;
प्रभुने जोवा हैयुं घेलुं थाय छे... सौ. ८,
ज्यां अतीत चोवीसी मांहे, सागरप्रभुना काळे;
इन्द्रे भरावेल मूरतना दर्शन थाय छे... सौ. ९,

ज्यां शत त्रण पगला चडतां, गौमुखी ए पाद धरतां;
चोवीस प्रभुनां पगलां पावनकार छे... सौ. १०,

ज्यां अंबा - गोरख जातां, शांबप्रद्युमनना पगला देखातां;
नमन करतां सौ आगळ चाली जाय छे... सौ. ११,

ज्यां पांचमी टूंके पहोतां, मोक्षकल्याणक प्रभुनुं जोतां;
रोमे रोमे आनंद अपार छे... सौ. १२,

ज्यां सहसावने जातां, दीक्षा- नाण प्रभुना थातां;
पगले पगले कोयलना टहूकार छे... सौ. १३,

ज्यां जिनशासनना पाने, प्रथमचोमासुं तळेटी थावे;
छत्रछाया हिमाशुंसूरि राय छे... सौ. १४,

ज्यां वीर छव्वीससो वरसे, हेम नव्वाणुं वार फरशें;
प्रेम-चंद्र-धर्म नी पसाय छे... सौ. १५,

(२) वंदो गिरनारने रे..

(राग - पूजो गिरिराजने रे...)

वंदो गिरनारने रे... पूजो गिरनार ने रे...
ए गिरिवरनो महिमा मोटो, कहेता नावे पार... रे... वंदो..

अवसर्पिणीना छ आरे रे, विधविध नाम धरे... वंदो...
छव्वीस योजन पहेले आरे, कैलासगिरि जे कहे... वंदो...
उज्जयंत नामे वीस योजननो, बीजे ते आरे रहे... वंदो..

रैवतगिरिवर त्रीजे आरे, षट्दस मान धरे... वंदो...
स्वर्णगिरि अभिधा चोथे आरे, योजन दसनो बने.... वंदो...

प्रभुनुं शासन तिंहा प्रवर्ते, धर्मनी हेली वहे... वंदो...
बे योजन मान गिरनारनुं रे, नेमि भजो पंचमे... वंदो..

छट्ठे आरे नंदभद्र नामे, शतधनु ते रहे रे...
विधविध अभिधा एम धरे रे गिरिगुण हेम करे... वंदो...

(३) रूडा रूडा गिरनारना शिखरो...

(राग - ऊंचा ऊंचा शत्रुज्यना शिखरो...)
(मेरा जीवन कोरा कागझ)

रुडा रुडा गिरनारना शिखरो सोहाय (२)
वच्चे मारा दादा केरा, देराओ देखाय... रुडा रुडा...
आदीश्वरना दरशन करी,
तलेटीए लागुं पाय (२)
नेमजीना चरण नमीने,
मनडुं मारुं धाय (२)
ए गिरिवरनुं ध्यान धरतां, भवचोथे शिव थाय.... १

एक एक पगले प्रभु समरतां,
नाचे मननो मोर (२)
श्वासेश्वासे जपुं जिनने
पगमां आवे जोर (२)
तीर्थंकरो सिध्या अनंता व्रतनाण पामी दोय... २

पहेली टूंके देवकोट मांहे,
नेम प्रभु देखाय (२)

नयणां मारा धन्य बनेने,
हैये हर्ष न माय (२)
मानवभवनो ल्हावो लइने फेरो सफलो थाय... ३

चौदे चैत्यना दर्शन पामी,
लळी लळी लागुं पाय (२)
गजपदकुंडनुं जल फरसता,
अंतर भीनुं थाय (२)
जिनवर केरी भक्ति करता, पापो दूर पलाय... ४

चोवीसजिनना पावन पगलां,
गौमुख गंगा मांय (२)
रहनेमिना दर्शन करीने,
अंबाटूंक जवाय (२)
अंबाजीमां शांबजीना, चरण बे सोहाय... ५

त्रीजी टूंके गोरख जाता,
प्रद्युम्न पाद देखाय (२)
चोतरफ अवलोकन करतां,
आनंद अति उभराय (२)
पांचमी टूंके नेमप्रभुजी, मुक्तिगामी थाय... ६

नेमीश्वर ज्यां व्रत ग्रहीने,
पाम्या केवल सार (२)
राजीमतीजी शिववर्या ते,
सहसावन मनोहर (२)
घाती-अघाती कर्मो खपावी, पहोंता मुक्ति मोजार.... ७

अनंतजिन कल्याणक जाणो,
पावन गढ गिरनार (२)
गुणला ए रैवतगिरिना;
कहेता न आवे पार (२)
हेम वदे तमे भावे भजीलो, दादा छे उदार... ८

(४) पल पल तारुं स्मरण...

(राग : अेक घडी प्रभु उर अंकांते)

पल पल तारुं स्मरण हो जीवनमां, निशदिन दर्शन मले,
मारुं जीवन धन्य बने, मारा भवनुं भ्रमण टळे... मारुं... १

गिरनारतीर्थनो वासी व्हालो, महिमा अपरंपार,
तीर्थंकरो सिध्या अनंता, पाम्युं सिद्धपद सार... मारुं... २

तारा दर्शन काजे दादा, नित्य सवारे दोडुं,
अेक वेळा मनमंदिर पधारो, अंतर द्वार खोलुं... मारुं... ३

आंखडी तारी कमळ पांखडी, अद्भुत रुप सोहे,
तारुं मुखडुं जोतां मारुं, हैयुं गद्‌गद् बने... मारुं... ४

खाली हाथे आव्या सौने, खाली हाथे जावुं,
आ जीवनमां तुजने पामी, तारा गुणला गावुं... मारुं... ५

आ भव परभव अेटलुं मांगु, तारुं शरण मळे,
ना रहे कोई द्वेष जीवनमां, ना क्यांय राग रहे... मारुं... ६

तारे द्वारे आव्यो छु हुं, संचित कर्मो लईने,
तपानलना तापे आतम, हेम सुशुद्ध बने... मारुं... ७

(५) माता शिवादेवीना नंद...

(राग : माता मरुदेवीना नंद)

माता शिवादेवीना नंद, सती राजीमतीना कंत;
निरखी ताहरु मुखडु, मारुं हैयुं भींजाणुं रे
के मारुं चित्तडुं चोराणुं रे... १

अंतर्ध्यानी अंतर्दशी, काया श्यामल वान;
शंखलंछनधर स्वामिजीरे, दस धनु काय प्रमाण... २

राजुल आंगणे आव्या स्वामि, सुण्यां पशुपोकार;
दीलडुं दाझ्युं मनडुं साध्युं, संयम लेवा सार... ३

व्रत ग्रह्युं सहसावनमां ने, पाम्या केवळज्ञान;
पांचमी टूंके सिद्धिवर्या प्रभु, आयु सहस प्रमाण... ४

जगहितकारी जगना बांधव, जगना तारणहार;
भक्त वत्सल प्रभु नाम धरावो, आपो निजपद सार... ५

गांधर्वो सौ नृत्य करंता, गुणला गावन काज;
सुरवर कोडी सेवा करंता, लेवा मुक्तिनुं राज... ६

श्री गिरनारजी तीरथकेरा, योगी नेमिजिणंद,
वल्लभ छो भविजनो केरा, हेम वदे मुणिंद... ७

(६) में भेट्या युदुकुळमंडन...

(राग : में भेट्या नाभिकुमार)

में भेट्या यदुकुळमंडन, में भेट्या शिवादेवीनंदन;
दरशन तारुं सफळ बन्युं, मारो सफळ थयो अवतार... १

जगमां तीरथ बे वडां रे, शत्रुंज्य गिरनार;
अेक गढ ऋषभ समोसर्या रे, अेक गढ नेमकुमार... २

यदुकुलवंश उजाळीयो रे, ब्रह्मचारी कीरतार;
श्यामलवरणी देहडी रे, शंखलंछन मनोहार... ३

सोरठमंडन तु धणी रे, निरखतां हरखनां पूर;
श्रद्धा केरा पुष्पे वधावतां, थाय मिथ्यात्व दूर... ४

पशुतणो पोकार सुणीने, आवी करुणा अपार;
राह निरखती राजीमतीने, त्यजतां लागी ना वार... ५

दीक्षा लीधी सहसारे वनमां, पाम्या केवलसार;
शिवरमणीने ते तो वर्या, पांचमी टूंक मोज़ार... ६

काश्मीर देशथी संघ पधारे, करवा भक्ति खास;
मूरतितणो लेप गळंता, थाय रतनने त्रास... ७

नवल पडिमा पामवा काजे, आदरे ते उपवास;
स्वर्णगुफाथी अंबा आपे, बिंब रतनने खास... ८

अतित चोवीशी सागर काळे, इन्द्रे भरावी तास;
कृष्णादिके पूजी जाणतां, थाय तेने उ□ास... ९

पोष मास सोहामणो ने, सुद सातम सोमवार;
वीर छव्वीस शताब्धि वरसे, नव्वाणुं थई सुखकार... १०

भव अनंता भमतां भमतां, क्यांये ना आव्या हाथ;
प्रचंड पुण्यनो उदय थातां, आप्यो हेमने साथ... ११

(७) बाल ब्रह्मचारी नेमजी...

(राग : जगजीवन जगवालहो..., नेमिजिन पंचकल्याण स्तवन)

बाल ब्रह्मचारी नेमजी, शिवादेवीनो नंद लाल रे,
निर्विकारी निरमल, धरिया गुण अनेक लाल रे... १

आसो वद बारसे प्रभु, अवतर्या मातनी कूखे लाल रे,
श्रावण सुद पंचमी वळी, जन्म्या शौरीपुरी गाम लाल रे... २

दस धनुषनी देहडी, श्यामल वर्ण अंग लाल रे,
श्रावण सुद छट्ठे विभु, व्रत गहे सहसावन लाल रे... ३

भादरवा वदि अमास दिने, पाम्या ज्ञानप्रकाश लाल रे,
अषाढ सुदि आठमे जिन, वरिया शिवपुरवास लाल रे... ४

आयुवरस हजार रही, जगमां वल्लभ थाय लाल रे,
हेम स्तवे भावे भजो, कल्याणक ते पंच लाल रे.... ५

(८) जगवत्सल जगबांधव रे...

(राग : बालुडो निःस्नेही थई गयो रे...)

जगवत्सल जगबांधव रे, दयासागर अपार (२)
भोळा पशु उगारवा, छोडी चाल्या घरबार (२)
मेरो चित्त चोरी गयो साहिबो... १

स्वामीनी प्रीत नित सांभरे रे, साले विरह अपार (२)
नवभव नेह विसारियो, सूण्यो पशुडानो साद (२) मेरो चित्त...२

नेमजी वैरागी थई गया रे, छोड्यो राजुलनो हाथ (२)
संयम रमणी आराधवा, लेवा शिवपुरनो साथ (२) मेरो चित्त...३

राजुलने मेली अेकली रे, जाय दिन नवि रात (२)
हृदय सिंहासन बेसवा, झूरे हैयुं अपार (२) मेरो चित्त...४

सहसावने संयम वरे, पामे केवळज्ञान (२)
हेमपरे कर्मशोधतां, वरे वल्लभ स्थान (२) मेरो चित्त...५

(९) मेरा आतम तेरे हवाले...

(राग : मेरा जीवन तेरे हवाले...)

मेरा आतम तेरे हवाले, प्रभु इसे हरपल तुंही संभाले,
ये आतमधन तुजसे पाया, कर्मोने तो डेरा डाला (२)
मेरे दोषोको तुं ही मीटा दे... प्रभु... १

भवसागरमें मेरा आतम, डूब रहा है ओ तरवैया (२)
इसे आकर तुंही बचाले... प्रभु... २

रागद्वेषने डंश लीया आकर, कैसे बचुं में झहर को खाकर (२)
इस विषको तुंही उतारे... प्रभु... ३

जनममरण की भूल भूलैया में, मेरा आतम भटक रहा है (२)
तुं ही आकर राह दिखा दे... प्रभु... ४

मोहमाया के बंधन तोडो, हे प्रभु अपने चरणो में ले लो
इस पापी को तुं ही अपना ले... प्रभु... ५

मिथ्यामत में दरदर भागा, विषय कषायको कभी नहीं त्यागा (२)
ज्ञानज्योतिको तुं ही जला दे... प्रभु...६

स्वर्णगिरि की गोदमें आकर, बिनती करे हेम चरणोका चाकर (२)
इस आतमको सिद्ध बना दे... प्रभु... ७

(१०) यात्रा नव्वाणुं करीओ...

(राग : यात्रा नव्वाणुं करीअे...)

यात्रा नव्वाणुं करीअे रैवतगिरि ... यात्रा नव्वाणुं
तीर्थंकरो अनंता सिध्या, दीक्षा - केवल धरीने... रैवतगिरि... १
घेर बेठां तस ध्यान धरंता, चोथे भवे शिव लहीअे... २
अरिहंतपदनो जाप जपतां, कर्म मल सवि हरीअे... ३
त्रण-त्रण कल्याणक नेमिजिनना, आराधी भव तरीअे... ४
गजपदकुंडना जलने फरसतां, आधि-व्याधि दूर करीअे... ५
अतीत चोवीसी मांहे घडेला, पडिमा पूजी हरखीअे... ६
सहसावने व्रत - ज्ञान वरंता, चरण नमी अघ हरीअे... ७
नव्वाणुं वार से गिरि चढंता, भवरण नवि भमीअे... ८
हेम वदे से तीरथ सेवतां, वल्लभपदने वरीअे... ९

(११) नेमिवर निराला...

(राग : सावन का महिमा)

नेमिवर निराला, निरंजन निर्विकार,
पूजो वंदो भावे, थाये बेडो पार... १

પશુતણા પોકાર સૂણીને, દયા અતિશય દિલમાં આણી;
કરુણાના છે સ્વામી, આતમના હિતકાર... પૂજો ૨

રાજીમતિને સાથ ના આપ્યો, મસ્તકે તેના હાથને થાપ્યો;
કર્મકલંક નિવારે, મુગતિના દાતાર... પૂજો ૩

કૃષ્ણરાયને મારગ આપે, ભક્તિ કરતાં જિનપદ થાપે;
નિજપદના દાતારી, કરુણાના કરનાર... પૂજો ૪

જે કોઇ નેમિ જિનને ધ્યાવે, કામજ્વર તેના પલમાં શમાવે;
બ્રહ્મચારી શિરનામી, અવિચલ અવિકાર... પૂજો ૫

રૈવતગિરિ એ દીક્ષા લેવે, નાણને નિર્વાણ તિહાં તે પાવે;
ગિરનાર ગિરિને ધ્યાવે, હેમ હોવે સુખાકાર... પૂજો ૬

(૧૨) ગિરનાર ગિરિવર...

(રાગ : નગરી નગરી દ્વારે દ્વારે)

ગિરનાર ગિરિવર સમતા આપે, કામ ક્રોધને કાપે;
તેની ભક્તિ કરતાં જે કોઇ, શિવ સુખ સૌને આપે રે... ગિરનાર....૧

પાતકી-ઘાતકી જે કોઈ આવે, સૌને તિહા સમાવે,
કર્મમલ સૌ દૂર નિવારી, પરમપદને આપે રે... ગિરનાર....૨

સૂક્ષ્મ - બાદર જે જીવ આવે, શિવસુખ સંબલ પાવે
ચઉગતિ કેરા ફેરા વિરામી, મુગતિપુરીએ જાવે રે... ગિરનાર....૩

कामविकारी भोगसुखकारी, अे गिरिने जे फरशे,
मोहरायने दूर हटावी, अविचल सुखडां वरशे रे...गिरनार....४

घेर बेठां अे गिरिने ध्यावे, भवचोथे शिव पावे;
हेम संगे सौ जगना प्राणी, गिरिवर गुणलां गावे रे... गिरनार....५

(१३) श्री रे गिरनार भेटीने...

(राग : श्री रे सिद्धाचल भेटवा...)

श्री रे गिरनार भेटीने, हैये हरख न मायो;
नेमिजिन भक्ति करी गिरिवर गुणमें गायो... श्री रे... १

श्यामवरण तनु नेमनुं, देखी आनंद पायो;
ब्रह्मेन्द्रे पडिमा भरी, लीधो अनुपम लाहो... श्री रे... २

तस पुण्यपसाये लीये, संयम नेमनी पास;
वरदत्त गणधर थया, साधे सिद्धपद खास... श्री रे... ३

दीक्षा नाण प्रभु नेमना, सहसावन मोझार;
पंचमे गढ लहे तेह, शिवपदवी उदार... श्री रे. ४

अनंता जिनवर वरे, व्रत केवल निर्वाण,
भवविश्राम अनंता लहे, जिनवचनथी जाण... श्री रे... ५

पावन अे गिरि भोमका, कण कण हेम समाया;
स्वर्णगिरि नामे जेह, वल्लभ पदने पाया... श्री रे... ६

(१४) नित ध्यावो भवि गिरनार

(राग : शंखेश्वर साहिब साचो / चउमासी पारणुं आवे...)

नित ध्यावो भवि गिरनार, नाम लेतां करे भवपार;
त्रस थावर करे उद्धार, अे तीरथ गुणलां अपार रे...
गिरनार गिरिवर भेटो, चौद राजमां ना जडे जोटो रे,

जे पक्षी छाया गिरि फरशे, दुर्गति दुःख तेना खरशे;
घेर बेठां अे गिरि ध्यावे, भव चोथे शिवपद पावे रे...

प्रत्येक चोवीसीमां जाण, जिन दीक्षा-नाण-निर्वाण;
अनंता अरिहानी खाण, कल्याण अनंतजिन माण रे...

अतीत सागरजिन पास, करजोडी शक्र वदे खास;
कदा छूटशे मुज भवपाश, प्रभु पाडे तस प्रकाश रे...

गणधर नेमजीना थाशो, गिरनार गिरि शिव जाशो;
ईम सागर जिननी वाणी, ब्रह्मेन्द्रे ते श्रवणे आणी रे...

प्रभु पडिमा इन्द्रे भरावी, बहुकाळ सुरलोकमां ठावी;
नेमिकाळे कृष्णधरे आवी, अंबिका ते गिरनार लावी रे..

आचारज बप्पभट्टाणंद, तीर्थसेवा करे भद्रेश्वर;
तीर्थोदये हर्ष अमंद, पामे नीति-हिमांशुसूरीवर रे...

कुमार-वस्तु-तेजपाळ, संप्रति सज्जनने धार;
पेथड झांझणने संग्राम, करे तीरथ भगती अपार रे...

दोय सहस बोतेर वरसे, जेठ सुदी त्रीजने दिवसे;
हेम अे गिरीशने फरशे, वल्लभपद तिहां ते तलसे रे...

(१५) गुणला शुं गाउं श्री...

(राग : शोभा शी कहुं रे शेत्रुंजा तणी...)

गुणला शुं गाउं श्री गिरनारना,
जिहां अनंता तीर्थंकर निर्वाण जो;
दिक्खा नाण निर्वाण अनंता जिन लहे,
श्री नेमीश्वर पामे त्रिकल्याण जो... गुणला शुं...

च्यवनने जनम ते शौरीपुरे लहे,
सहसावनमां व्रत केवलज्ञान जो;
आर्य-अनार्य भूमिमां विचरण करे,
पंचमे गढ नेमिवर शिववास जो... गुणला शुं...

उर्ध्व, अधो, तीर्च्छा त्रणे लोकमां,
सुर-असुरादि भजता जस आकार जो;
दिव्य औषधी, स्वर्णसिद्धि, रसकूंपिका,
पुन्ये पामे गिरनारे भंडार जो... गुणला शुं...

जिम तारलीया नभमांहे गणाय ना;
तिम गिरिगुण मुखमांहे न समाय जो,
जाणे ने देखे निज निज नाण थकी,
भाखी शकेना सर्वे ते जिनभाण जो... गुणला शुं...

स्पर्श थकी जे जल भविजन अघ हरे,
दूर करे वळी काम-श्वासादि रोग जो;
आधि-व्याधि सवि भवरोगने दूरे करे,
गजपदकुंड गौरववंत गुणखाण जो... गुणला शुं...

घर बेठा पण अे गिरि ध्यावे जे सदा,
चोथे भव ते पामे पद निर्वाण जो;
पंच प्रस्ताव वस्तुपाल चरित्त महिं,
भाखे श्री जिनहर्ष गणिराज जो... गुणला शुं...

अप्सराओ, ऋषिओने गांधर्वो,
तीरथ भजवा आवे मोटा संघजो;
जे जे पक्षी छाया गिरिवर फरसती,
दूर टळे तस दुर्गति केरा बंध जो... गुणला शुं...

पाप हरे सविजन जे तीरथ भजे,
फल पामे शेत्रुंजा भगति समान जो;
भावथी जे विधिवत् अेक यात्रा करे,
निश्चे पामे ते भवि पद निर्वाण जो... गुणला शुं...

कल्याणकभूमि जे जे फरशे जीवडा,
बृहत्कल्प वदे दृढ करे समकित ठाणजो;
गुण केटलां गाउं गिरनार गिरि तणां,
जिहां कणकण मांहे हेमवास जो... गुणला शुं...

(१६) आतम जीने आ खोळीयुं...

(राग : पंखीड़ा ने आ पिंजरु...)

आतम जीने आ खोळीयुं, बंधन बंधन लागे;
घणुंये मथे तोये आतम, मुक्ति पद न पामे...

मनोरथ कीधां एणे, आतम अजवाळवा;
भगीरथ कर्या प्रयासो, सिद्धे सिधावा,
मुक्तिपुरीए जावा, तलप एने लागी... घणुंये मथे

नरक तिर्यंचनी, गतिमांहें पटकायो;
देव मनुज ना भवे, मोहमायामां सपडायो,
चउगतिना चोकमां, घणुये भटकायो... घणुंये मथे

राग अने द्वेषना रे, पाशमां फसायो,
क्रोध अने माननी, ज्वाळामां झडपायो,
तपना रे तापे तपीने, ''हेम'' जेवा थावुं... घणुंये मथे

गिरनार शरण अने नेमि, चरणने पायो;
पुण्य केरो उदय जाणी, आतमजी हरखायो,
जागृत थईने हवे, धर्मना रंगे म्हाले... घणुंये मथे

(१७) गिरनार गिरिवर भेटो भविका...

(राग : दीठो दीठो... में आज त्रिशलानंदन दीठो...)

गिरनार गिरिवर भेटो भविका ! गिरनार गिरिवर भेटो (२) भविका !
ब्रह्मचारी नेमिपद लेटो, पाप पडल सवि मेटो (२) भविका !...

जिन अनंत ईणगिरि खाण, व्रत-केवल-निरवाण;
नेमि जिनवर दीक्षा नाण, शिवपुर पदवी जाण (२) भविका !..

भीमसेन जे घोर पापी, तार्यो तेहने उगारी;
दुर्गंधा जे अतिदुर्भागी, थाअे समकितधारी (२) भविका !..

गजपद जल जे जन फरसे, दुःख दोहग हरशे,
घेर बेठां गिरि मन धरशे, भव चोथे शिव वरशे (२) भविका !...

सौभाग्यमंजरी जे बालिका, कीधा तस महादेविका;
नेमिचरण पामी अंबिका, कीधी शासन सेविका (२) भविका..!

तार्या नामि-अनामि भवि, तारशे केई भावि;
हेम वदे अे गिरि सेवी, पामो परमानंद धावी (२) भविका..!

(१८) जाणी गिरिगुण शास्त्रमां...

(राग : आणी शुद्ध मन आस्था...)

जाणी गिरिगुण शास्त्रमां, ध्यावुं निशदिन रातमां;
गिरनार गिरिवर गुण भरपूर, दोषो करे ते सहुना दूर..

पंखी छाया गिरिने अडे, दुर्गति तेने कदिना नडे;
घेर बेठां जे ध्यावे जीव, भव चोथे ते थावे शिव,
गिरनार गिरिवर...

जे जे प्राणी गिरिए वसे, भाग्य केरु तस पान खसे;
ज्ञानी वदे ईम गिरिने विशे, आठ भवे ते सिद्ध थशे,
गिरनार गिरिवर...

सहसावने दीक्षा सुवास, चोप्पन दिने ज्ञानप्रकाश;
आतम केरो थाय विकास, नेमि पंचम गढ शिववास,
गिरनार गिरिवर...

दुःखडा सौना दूर करे, वांछित सघळा तेह पूरे;
अशुभ तेना कर्म खरे, जे जे हियडे गिरिने धरे,
गिरनार गिरिवर...

प्रणमु प्रेमे अंबिका माय, गोमेध यक्ष बिंब सदाय;
हेमवदे गिरि लागो पाय, पद वल्लभने पामो सदाय,
गिरनार गिरिवर...

(१९) रैवतगिरिनो डुंगर व्हालो

(राग : सिद्धाचलनो वासी... विमलाचलनो वासी...)

रैवतगिरिनो डुंगर व्हालो लागे मोरा राजिंदा,
उज्जयंतगिरिनो डुंगर व्हालो लागे मोरा राजिंदा... (१)

इण रे डुंगरीए जिन अनंता सिध्या (२)
व्रत-केवल-वली पाया मोरा राजिंदा... (२)

गत चोवीसी सागरजिन काले (२)
पडिमा इन्द्र भरावे मोरा राजिंदा... (३)

श्यामवर्ण नेमिवर सोहे (२)
मुखडुं देखी मन मोहे मोरा राजिंदा... (४)

पहेली टूंके चउद चैत्य सोहे (२)
दरिसण निरमल होवे मोरा राजिंदा... (५)

सहसावने नेमि दिक्खा नाण होवे (२)
गढ पंचम मुक्ति पावे मोरा राजिंदा... (६)

इण आलंबन कृष्ण जिनपद पामे,
थाशे अममजिन नामे मोरा राजिंदा... (७)

हेमवल्लभ वदे गिरि नित ध्यावो,
भव चोथे शिवपावो मोरा राजिंदा.... (८)

(२०) नीरखी नयणा भींजाय

(राग : मिले मन भीतर भगवान)

नीरखी नयणा भींजाय, नीरखी नयणा भींजाय,
श्री गिरनारी नेमप्रभुने, नीरखी नयणा भींजाय,
व्हालाजीनुं मुखडु देखी, हियडे हरख न माय...
जिनेश्वर ! नीरखी नयणा भींजाय (२)

स्वामी स्पर्शे रोमराजी, पलमां पुलकित थाय (२)
श्री जिनवरना गुणला गाता, आनंद अति उभराय...
जिनेश्वर ! नीरखी नयणा भींजाय (२)

श्यामल वरणी देहडीने, उज्ज्वल एनी कांति (२)
अषाढ मासे घनघोर मेहे, वीज तणी ए भ्रांति...
जिनेश्वर ! नीरखी नयणा भींजाय (२)

पदवी लही षट्जीवत्राता, आपता सौने शाता (२)
सहसावनमां साधनाए, हुआ केवलज्ञाता...
जिनेश्वर ! नीरखी नयणा भींजाय (२)

चंदनवने सर्पनाशे, मोर तणे टहूकार (२)
श्री नेमीश्वर नाम समरता, दूर टळे विकार...
जिनेश्वर ! नीरखी नयणा भींजाय (२)

आर्य अनार्यभूमि विहरता, जिन वचनामृत पाता (२)
श्री गिरनारनी पंचमटूंके, मुगतिपतिअे थाता...
जिनेश्वर ! नीरखी नयणा भींजाय (२)

घेर बेठां अे गिरि ध्यावे, भवचोथे शिव जावे (२)
हेम वदे जे अे गिरि सेवे, वल्लभपदने पावे...
जिनेश्वर ! नीरखी नयणा भींजाय (२)

(२१) तुम्ही हो भ्राता, तुम्ही हो त्राता

तुम्हीं हो भ्राता, तुम्हीं हो त्राता, तुम्हीं हो प्रभु जगत विधाता,
मै चाहु तेरा प्रेम... ओ नेम... ओ नेम...

तुम्ही हो सुख, तुम्हीं हो शांती, तुम्हीं से मेरी भागे भयभ्रांति,
करु में तुमसे ही प्रेम... ओ नेम... ओ नेम...

तुम्हीं हो ज्ञान, तुम्हीं हो ध्यान, तुम्हीं हो दया सागर महान,
मुज पर करना रहेम... ओ नेम... ओ नेम...

तुम्हीं हो दृष्टि, तुम्हीं हो सृष्टी, तुम्हीं हो मेरे पुण्य की पुष्टी...
बरसाओ मुजपे प्रेम... ओ नेम... ओ नेम...

तुम्हीं हो यंत्र, तुम्हीं हो तंत्र, तुम्ही हो मेरे प्राणप्रिय मंत्र,
सदा कीयो तुमसे प्रेम... ओ नेम... ओ नेम...

तुम्हीं हो रिद्धि, तुम्हीं हो सिद्धि, तुम्हीं से मेरे जीवन की शुद्धि,
तुम से ही है मेरा प्रेम... ओ नेम... ओ नेम...

तुम्हीं हो शक्ति, तुम्हीं हो भक्ति, तुम्हीं से मेरे आतम की मुक्ति,
कृपा करो हेमपे नेम... ओ नेम... ओ नेम...

आचार्य हेमवल्लभसूरिजी कृत्

श्री गिरनारजी महातीर्थ महिमा गर्भित

श्री नव्वाणुं प्रकारी पूजा विधि

जधन्य से कलश ग्रहण करनेवाले नव श्रावक और
उत्कृष्ट से नव्वाणुं श्रावक

जधन्य से नव जाति के प्रत्येक ११ फल लेकर प्रत्येक पूजा में ९ फल रखना, उससे ग्यारह पूजा में ९-९ फल रखने से ९९ फल होंगे। उसी तरह नैवेद्य आदि भी जघन्य से ९ जाति से ११-११ नंग लाकर प्रत्येक पूजा में ९-९ नंग रखना।

नव्वाणु दीपक वंशमाले धरने के लिये
चावल के ९९ साथियें करना।

श्री गिरनारजी महातीर्थ महिमा गर्भित
श्री नव्वाणुं प्रकारी पूजा प्रारंभ

प्रथम पूजा

भूमिका

इस पूजा में गिरनारजी महातीर्थ को वंदन करने हेतु गिरनार की ९९ यात्रा का संक्षिप्त में वर्णन करने जा रहे हैं, और साथ में शास्त्रानुसार गिरनार के छः आरे के समय के विध-विध नाम और प्रमाण का वर्णन किया है। यानि की कौन से आरे में गिरनारजी का

क्या नाम है और उस आरे में गिरनारजी की ऊँचाई कितनी होती है उसकी जानकारी भी दी गई है।

गिरनारजी महातीर्थ के शास्त्रीय छः नाम ही आज उपलब्ध होने से प्रायः शाश्वत ऐसा गिरि अनंतकाल से विद्यमान होने से उस-उस काल में अनंत नामों से पहचाना जाता होगा, मगर वर्तमान में वह नाम अपने पास उपलब्ध न होने के कारण इस गिरि के अनंत गुणों को ध्यान में रखते हुए उसके १०८ नामों की सुंदर रचना की है। उनमें से ९९ नामों के उल्लेख ११ पूजा में ९-९ नामों के हिसाब से प्रत्येक पूजा में किया गया है।

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः

: दुहो :

श्री शाश्वतगिरि शिर धरी, प्रणमी श्री गुरुपाय;
रैवतगिरि गुण गाईशुं, समरी शारद माय ॥१॥

प्रायः अे गिरि शाश्वतो, महिमानो नहि पार;
दीक्षा केवळने निर्वाण, नेमीश्वर मनोहार ॥२॥

शत्रुंजय तीरथ तणुं, शिखर पंचम सार;
दायक पंचमनाणनो, गिरिभूषण गिरनार ॥३॥

उत्कृष्ट परिणामे जे करे, यात्रा नव्वाणुं वार;
पुण्यपूंज करी अेकठो, न लहे फरी अवतार ॥४॥

नवकळशे अभिषेक नव, अेम अेकादश वार;
पूजा दीठ श्रीफळ प्रमुख, अेम नव्वाणुं प्रकार ॥५॥

:: ढाल ::

(राग : जिनराजकुं सदा मोरी वंदना)

गिरनारकुं सदा मोरी वंदना रे, गिरनारकुं सदा मोरी वंदना रे;
यात्रा नव्वाणुं करतां होवे, भवोभव पाप निकंदना रे... ॥१॥

छ'री पाळी रैवतगिरि आवी, नेमिनाथ जुहार रे;
लाख नवकार गणणुं गणीजे, पूजा नव्वाणुं प्रकार रे... ॥२॥

केवल दीक्षा कल्याणकभूमि, नेमिजिन चैत्य उदार रे;
प्रदक्षिणा काउस्सग्ग करीजे, अष्टोत्तर शतवार रे... ॥३॥

चोविहार छट्ठ करी सात यात्रा, गजपदना जले स्नान रे;
चौद चैत्य नववार नमीजे, देववंदन गुणगान रे... ॥४॥

छअे आरे ईण गिरिना, विध विध नाम वखाणो रे;
योजन छव्वीस वीस षोडश दस बे, छट्ठे चउशत हस्त मानोरे... ॥५॥

नव्वाणुं गिरि नाम भलेरा, तेहमां षट् छे मुख्य रे;
'कैलासगिरि' थयो पहेले आरे, 'उज्जयंत' बीजे पूज्य रे... ॥६॥

त्रीजे आरे 'रैवतगिरि' मोहे, चोथे 'स्वर्णगिरि' प्रसिद्ध रे;
ईण पावन तीर्थे आवीने, अनंत तीर्थंकर सिद्ध रे... ॥७॥

पांचमे आरे 'गिरनार' सोहे, छट्ठे 'नंदभद्र' जणाय रे;
'पारसगिरि' 'योगेन्द्र' 'सनातन', गिरिवर नाम कहाय रे... ॥८॥

गिरनार भक्ति रंग थकी रे, उपन्यो नेह अपार रे;
हेम वदे अे तीरथ सेवंता, भवजल पार उतार रे... ॥९॥

(काव्यम्-अनुष्टुप)

अनंत महिमावन्तं, दीक्षा केवल सिद्धिदं;
सदाकल्याणकैः पूतं, वन्दे तं रैवताचलं.

(अथमंत्र)

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु निवारणाय,
श्रीमते जिनेन्द्राय, जलादिकं यजामहे स्वाहा

॥ इति प्रथम पूजाभिषेके उत्तरपूजा ९ संपूर्ण ॥

द्वितीय पूजा

भूमिका

इस पूजा में गिरनारजी महातीर्थ की सात टूंकों के नाम उल्लेख करते हुए साथ में इस गिरिराज की प्रदक्षिणा करने से दुःख और दुर्भाग्य दूर चले जाते हैं, ऐसा बताने में आया है।

इन सात टूंकों की प्रथम टूंक के उपर महाप्रभावशाली गजपद कुंड आया हुआ है। उसके उद्‌गम का प्रसंग तथा अत्यंत दुर्गंधवाली दुर्गंधा नाम की स्त्री इस पावन कुंड के निर्मल जल से स्नान करने के प्रभाव से सुगंध प्राप्त करती है, ऐसा बताके, इस पवित्र जल से स्नान, पान और अर्चना द्वारा प्राप्त होनेवाले फल की तरफ ध्यान आकर्षित कराने में आया है।

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः

: दुहो :

सात टूंक गिरनारनी, आपे सप्तमराज;
गजपद कुंडनुं पावन जल, कापे कर्मने आज.

:: ढाल ::

(राग : गिरिवर दरिशन विरला पावे)

गिरनार गिरिवर नयणे निरखे, पूरव भव केरा पुण्य पसाये;
परिक्रमा सात टूंक करे जे, दुःख दोहग तस दूर पलाये ॥१॥

देवकोट नामे पहेले शिखरे, अनुपम चउद जिनालय सोहे;
बीजे अंबाजी गोरख त्रीजे, चोथे ओघड मुज मन मोहे ॥२॥

परमपददायक पंचम शिखरे, नेम प्रभुजी मोक्षे सिधावे;
छट्ठे अनसुया सातमे कालिका, सप्त शिखर ईम गिरि सुहावे ॥३॥

आवत इन्द्र ईणगिरि उपरे, गजपद ठावीने कुंड बनावे;
नेमि जिणंदनी पूजा काजे, त्रिभुवन पावकजल तिंहा लावे ॥४॥

द्विजकुल पामी पूरव भवमां, साधु दुगंछा करे तीव्र भावे;
कर्मवशे भवरणमां भमीने, दुर्गंधा दूरभिपणुं पावे ॥५॥

गजपद कुंडनो महिमा सुणीने, रैवतगिरिवर यात्राअे आवे;
सात दिवस तस पावन जलथी, स्नान करी सुगंधित थावे ॥६॥

पावन अे जलपानथी भविना, सघळां रोगो पलमां जावे;
निरमलनीरथी जिनने अर्ची, सर्व तीरथ पूजन फळ पावे ॥७॥

'सुरभि' 'उदय' 'तापस' 'आलंबन', 'परमगिरि' 'श्रीगिरि' कहावे;
'सप्तशिखर' 'चैतन्यगिरिवर', 'अव्ययगिरि'ना सुरगुण गावे ॥८॥

ध्येय रुपे गिरिवर घ्यावंता, आनंदघन आतम आराधे;
हेम परे तप तापे तपीने, त्रिभुवन वल्लभ शिवसुख साधे ॥९॥

(काव्यम्-अनुष्टुप)

अनंत महिमावन्तं, दीक्षा केवल सिद्धिदं;
सदा कल्याणकैः पूतं, वन्दे तं रैवताचलं.

(अथमंत्र)

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु निवारणाय,
श्रीमते जिनेन्द्राय, जलादिकं यजामहे स्वाहा

॥ इति द्वितीय पूजाभिषेके उत्तरपूजा १८ संपूर्ण ॥

तृतीय पूजा

भूमिका

इस पूजा में प्रायः शाश्वत ऐसे गिरनार गिरिवर के जिनालयों के वर्तमान अवसर्पिणी के चौथे आरे में हुए अनेक विविध जीर्णोद्धार एवं मुख्य जीर्णोद्धारों के नाम निर्देश किये है। जिसमें से युगादिदेव ऋषभदेव परमात्मा के पुत्र चक्रवर्ती भरत महाराजा द्वारा सर्वप्रथम जीर्णोद्धार से मंगल प्रारंभ होकर चौथे आरे के मुख्य उद्धार एवं अंतिम उद्धार करने का श्रेय काश्मीर देश से संघ लेकर आनेवाले रत्नश्रावक के नाम लिखा हुआ है।

आज भी गिरनारजी महातीर्थ उपर मूलनायक बालब्रह्मचारी श्री नेमिनाथ परमात्मा की जो प्रतिमा विराजमान है वह श्री रत्नश्रावक द्वारा स्थापित की गई है। पूजा के अंतिम भाग में गिरि के विविध नामों के उल्लेख के साथ इस गिरि के नाम स्मरण मात्र से और ध्यान करने से प्राप्त होनेवाले लाभ की ओर अंगुली दर्शन कराने में आया है।

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः

: दुहो :

भरत क्षेत्रना मानवी, चोथा आरा मोझार;
जिनवर दरशन लहे, करे आतम उद्धार.

:: ढाल ::

(राग : सिद्धाचल शिखरे दीवो रे...)

गिरनारे चित्तडुं चोर्युं रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे;
विण दरिसण आयखुं खोयुं रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे
आतमउद्धारने करवा रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे;
कीधा उद्धार गिरि गरवा रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे,
गिरनारे चित्तडुं... ॥१॥

भरतेसर पहेला आवे रे, नेमी... नमे चोथे आरे भावे रे, नेमी...
तीन कल्याणक नेमना जाणे रे, नेमी... सुरसुंदर चैत्य रचावे रे, नेमी...
गिरनारे चित्तडुं... ॥२॥

दंडवीर्य अष्टम पाटे रे, नेमी... करी उद्धार नेमनाथ भेटे रे, नेमी...
हरि अजितनाथने आंतरे रे, नेमी... चउ उद्धार गिरि शणगारे रे नेमी...
गिरनारे चित्तडुं... ॥३॥

कोडी सागर लाख अगियार रे, नेमी... सप्तम सगर उद्धार रे, नेमी...
चन्द्रयश चन्द्रप्रभ शासने रे, नेमी... करे तीर्थोद्धार बहुमाने रे, नेमी...
गिरनारे चित्तडुं... ॥४॥

चक्रधर शांतिनाथ सुत रे, नेमी... तस नवम उद्धार हूंत रे, नेमी...
रामचन्द्रनो दसमो उद्धार रे, नेमी... अगियारमो पांडव सार रे, नेमी...
गिरनारे चित्तडुं... ॥५॥

रत्नश्रावके बारमो कीधो रे, नेमी... प्रभु थापी दर्शनामृत पीधुं रे, नेमी...
प्रभु बेठा पश्चिमा मुख रे, नेमी... भांगे भविजनना दुःख रे, नेमी...
गिरनारे चित्तडुं... ॥६॥

'ध्रुव' 'परमोदय' 'निस्तार' रे, नेमी... 'पापहर' 'कल्याणक' सार रे, नेमी...
'वैराग्यगिरि' 'पुण्यदायक' रे, नेमी... 'सिद्धिपदगिरि' 'दृष्टिदायक' रे, नेमी...
गिरनारे चित्तडुं... ॥७॥

नामे निर्मल होवे काया रे, नेमी... प्रभु ध्याने नासे जगमायारे, नेमी...
गिरि दरिसण फरशन योगे रे, नेमी...हेम सुखीयो कर्म वियोग रे, नेमी...
गिरनारे चित्तडुं... ॥८॥

(काव्यम्-अनुष्टुप)

अनंत महिमावन्तं, दीक्षा केवल सिद्धिदं;
सदा कल्याणकैः पूतं, वन्दे तं रैवताचलं.

(अथमंत्र)

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु निवारणाय,
श्रीमते जिनेन्द्राय, जलादिकं यजामहे स्वाहा

॥ इति तृतीय पूजाभिषेके उत्तरपूजा २७ संपूर्ण ॥

भूमिका

इस पूजा में गिरनारजी महातीर्थ के पांचमे आरे में हुए विविध उद्धारों में से मुख्य उद्धार करानेवाले पुण्यात्माओं की नामावली बताई गई है। मगर हर एक उद्धार का उल्लेख यहाँ नहीं लिया है।

पांचवे आरे में गिरनार के उद्धार करानेवालों में प्रथम उद्धार करनेवाले अनार्य देश बेबीलोन के राजा नेबुचंद्रजी थे। नेबुचंद्रजी राजा प्रायः परमात्मा महावीर के शासन के श्रेणिक महाराजा के मित्र थे। उनके पुत्र आद्रकुमार ने अभयकुमार के परिचय में आकर दीक्षा ग्रहण की थी। पुत्र मुनि आद्रकुमार को खोजने के लिये पिता नेबुचंद्रजी महाराजा भारत आते है। तब जैन धर्म से प्रभावित होकर गिरनार उपर के बाल ब्रह्मचारी श्री नेमिनाथ परमात्मा जिनालय को जीर्ण हालत में देखकर उन्होंने वहाँ जीर्णोद्धार कराया था।

उसके बाद गिरि के अनेक उद्धार हुए हैं। जिसमें वर्तमान गिरनारजी के मूलनायक श्री नेमिनाथ परमात्मा के जिनालय का भी

उद्धार वि.सं. ११८५ के साल में पाटण नरेश सिद्धराज जयसिंहजी के मंत्री सज्जनजी द्वारा कराया गया और **कर्णविहार** प्रासाद नाम रखा गया। विश्व में मात्र प्रायः एक ही यह प्रासाद श्यामवर्ण के ग्रेनाइट के पत्थरों से निर्मित है। उसके बाद इस तीर्थ के अनेक उद्धार हुए मगर श्री नेमिनाथ परमात्मा की प्रतिमा को एवं इस प्रासाद को यथावत् रखकर ही हुए है।

आज से ४५ साल पहले जब नेमिनाथ प्रभु के दीक्षा-केवलज्ञान कल्याणक की पावन भूमि - ''सहसावन'' समस्त जैन संघ द्वारा उपेक्षित हो रही थी, तभी तपस्वी सम्राट प.पू.आ. हिमांशुसूरीश्वरजी महाराज साहेब के प्रचंड पुरुषार्थ और पुण्यप्रभाव से इस सहसावन की कल्याणकभूमि की स्मृति के लिये अत्यंत नयनरम्य विशाल समवसरण मंदिर का निर्माण वि.सं. २०४० की साल में करवाया गया है। जिसके कारण आज यह कल्याणकभूमि सुरक्षित है और उसकी महिमा भव्य जीवों के दिलों तक पहुंच चूकी है।

इस तरह अनेक पुण्यात्मा इस तीर्थ के माहात्म्य का श्रवण करके तीर्थ भक्ति के फलस्वरुप सद्गति और सिद्धगति के भोक्ता बनने में समर्थ हुए हैं।

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः

: दुहो :

पंचमकाळना मानवी, हैये हरख अपार;
निज निज शक्ति थकी, उद्धार करे गिरनार.

:: ढाल ::

(राग : हे त्रिशलाना जाया...)

जे गिरनारने ध्याया, दोषो दूर पलाया;
गिरिवर केरा उद्धार कराया, जीवो सद्‌गति पाया...
जे गिरनार... ॥१॥

अनार्यदेश बेबीलोनना, नेबुचंद्र महाराया (२)
पुत्रमुनि आद्रकुमारने, शोधन काजे आया (२)
नेमिजिनालय जीरण देखी, जीर्णोद्धार कराया...
जे गिरनार... ॥२॥

बप्पभट्टसूरीश्वर साथे, आमराजा गिरि आया (२)
निजसंपत्ति व्यय करीने, शासनशान बढाया (२)
अेक अेक मंदिर सार करीने, हर्षोल्लास धराया...
जे गिरनार... ॥३॥

सिद्धराजनृप सज्जनमंत्री, रैवतगिरिवर आया (२),
गामेगामथी उद्धार काजे, शिल्पीओ बुलाया (२)
कर्णविहार प्रासाद करावी, जगमां कीर्ति पाया...
जे गिरनार... ॥४॥

वस्तुपाळ ने तेजपाळ वळी, कुमारपाळ तिंहा आया (२)
समरसिंह हरपति श्रीमाळी, चौदमा सैके आया (२)
जयतिलकसूरि आणा लईने, नेमिभवन समराया...
जे गिरनार... ॥५॥

मालवदेव पंदरमे सैके, कल्याणत्रय रचाया (२)
लक्ष्मीतिलक नरपाल सजावे, पूर्णसिंह मनभाया (२)
चतुर्मुख लक्षोबा करावे, वर्धमान पद्म आया...
जे गिरनार... ॥६॥

शाणराज भुंभव तिहां आया, ईन्द्रनील बनाया (२)
प्रेमा संग्रामसोनी उद्धरिया, मानसिंह अपर बनाया (२)
नरशी केशव वीसमी सदीमां, नीतिसूरि महाराया...
जे गिरनार... ॥७॥

नेमप्रभुअे दीक्षा-केवल, सहसावनमें पाया (२)
पावन वह भूमिका महिमा, जबसे ध्यान में आया (२)
हिमांशुसूरिरायने उसका, तीर्थोद्धार कराया.
जे गिरनार... ॥८॥

आंबडमंत्री मानसिंह मेघजी, पाजगिरि समराया (२)
पेथड-झांझण अे गिरि आया, तीरथ ध्वज लहेराया (२)
नामी-अनामी केई पुण्यवान्, गिरिवर भक्ति पाया...
जे गिरनार... ॥९॥

गिरिभक्तिनो महिमा मोटो, कहेता नावे पारा (२)
जिनवयणने सूणतां सूणतां, कर दे भवनिस्तारा (२)
आतम अनुभव तत्त्व प्रकाशी, पंचमगति दाताराा...
जे गिरनार... ॥१०॥

'इन्द्र' 'निरंजन' विश्रामगिरिवर, 'पंचमगिरि' गुणगाया (२)
'भवच्छेदक' ने 'आश्रयगिरिवर', 'स्वर्ग' 'समत्व' सुखपाया (२)
'अमलगिरि' के जाप ने हेमको, आतमराम बनाया...
जे गिरनार... ॥११॥

(काव्यम्-अनुष्टुप)

अनंत महिमावन्तं, दीक्षा केवल सिद्धिदं;
सदा कल्याणकैः पूतं, वन्दे तं रैवताचलं.

(अथमंत्र)

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु निवारणाय,
श्रीमते जिनेन्द्राय, जलादिकं यजामहे स्वाहा

॥ इति चतुर्थ पूजाभिषेके उत्तरपूजा ३६ संपूर्ण ॥

पंचम पूजा

भूमिका

इस पूजा के प्रारंभ में तो परमात्मा के संग गाढ प्रिति की बात करके नेमिनाथ प्रभु का मुख देखते ही हृदय में आनंद एवं उल्लास सह उभरते भावों को व्यक्त किया गया है।

वर्तमान में गिरनार के शिखर पर विराजमान श्री नेमिनाथ परमात्मा की प्रतिमा के इतिहास की बाते करके कहा जाता है कि गत चौविशी के सागर नाम के तीसरे तीर्थंकर प्रभु के काल में पंचम देवलोक में इन्द्र द्वारा भराई हुई यह प्रतिमाजी है, जो वर्तमान विश्व में प्रायः यह एक मात्र प्रतिमा होगी जो ब्रह्मलोक के देवों द्वारा तैयार की गई और असंख्याता सालों तक पांचवे देवलोक में पूजी हुई है। यहाँ पूजा की रचना में शब्दों और अर्थ की सुंदर गुंथणी करके 'हरि' शब्द का एक अर्थ इन्द्र महाराजा और दूसरा अर्थ कृष्ण महाराजा कहकर पंक्ति को एकदम रोचक बनाया गया है।

पांचवे देवलोक में पूजी हुई यह प्रतिमा इन्द्र महाराजा द्वारा बालब्रह्मचारी श्री नेमिनाथ प्रभु की सूचना से श्री कृष्ण महाराजा के गृह चैत्य में बिराजमान की गई थी, उसके बाद द्वारिका नगरी के दाह के समय इस प्रतिमाजी को शासन अधिष्ठायिका अंबिकादेवी गिरनार की गुफा में बिराजमान करती है। बाद में रत्न श्रावक को अर्पण करती है, उसके पश्चात प्रभुजी को प्रथम टुंक पर अंदाजित ८५ हजार साल पूर्व स्थापना कराई थी, जो आज भी गिरनार उपर बिराजमान है।

ऐसे गौरवशाली गिरनार को रोम-रोम और श्वासोश्वास में स्थापित करके जाप करने से यह भवसागर तैरना अति सरल हो सकता है।

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः

: दुहो :

नयन निरुपम जेमना, रमणीय रुप देदार;
अेवा नेमिनाथथी, शोभे गढ गिरनार.

:: ढाल ::

(राग : क्युं कर भक्ति करुं प्रभु तेरी...)

नेमि निरंजन किमही न विसरे,
मनमोहनकी मोहनगारी,
मूरत देखी हियडुं हरखे ॥१॥

गत चोवीसी त्रीजाप्रभु मुखे, ब्रह्मेन्द्र निज मुक्ति जाणी;
अंजनरत्न नेमप्रभुनी, भरे प्रतिमा भक्ति आणी ॥२॥

असंख्यकाळ ते प्रभुने पूजी, हरि ते प्रतिमा हरिने आपे;
द्वारिका नाश थतां जिनबिंबने, अंबिका निज भवने स्थापे ॥३॥

नेम निर्वाण सहसदोय वर्षे, रत्नाशा छ'रीपालित आवे;
गजपद जलना कळशा भरीने, वेळुबिंब भविजन नवरावे ॥४॥

गलत प्रतिमा प्रभुनी पेखी, आहार चार रत्न तिंहा त्यागे;
उपवास करी अेकमासने अंते, शासनदेवी अंबिका जागे ॥५॥

वज्र अभेद्य रत्ननी पडिमा, कलिकाल जाणी आपे रतनने;
नेमिनाथ मूरत पधरावी, शोभावे गिरनारगिरिने ॥६॥

'ज्ञानोद्योतगिरि' 'गुणनिधि', 'स्वयंप्रभ' नामे पाप पलाये;
'अपूर्वगिरि' 'पूर्णानंदगिरिवर', 'अनुपमगिरि' परे मुगते जाये ॥७॥

'प्रभंजनगिरि' 'प्रभवगिरिवर', शोभे महितल अद्‌भुत काये;
'अक्षयगिरि' अे सोरठदेशनी, पृथ्वी सघळी पावन थाये ॥८॥

रोमे रोमे गिरनार गुंजे, श्वासे श्वासे नेमिनाथ बिराजे;
हेमवल्लभ कहे नाम प्रभुनुं, जपीअे भवजल तरवा काजे ॥९॥

(काव्यम्-अनुष्टुप)

अनंत महिमावन्तं, दीक्षा केवल सिद्धिदं;
सदा कल्याणकैः पूतं, वन्दे तं रैवताचलं.

(अथमंत्र)

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु निवारणाय,
श्रीमते जिनेन्द्राय, जलादिकं यजामहे स्वाहा

॥ इति पंचम पूजाभिषेके उत्तरपूजा ४५ संपूर्ण ॥

षष्ठम पूजा

भूमिका

इस पूजा में गिरनार माहात्म्य की बाते करते हुए प्रथम एक बात कहने में आयी है कि, जो गिरनार का साथ मिले और नेमिनाथ प्रभु का हाथ मस्तक पर रह जाये तो इस आत्मा को जगत में कौन-सी बात की कमी हो सकती है ?

गिरि की महिमा बताते हुये बताया जाता है कि अन्य किसी भी स्थान पर रहकर भी जो गिरनार का ध्यान करने में आये तो अनादिकाल से चर्तुगति में भ्रमण करती ये आत्मा चौथे भव में ही मुक्तिपद पाने के लिये समर्थ हो सकती है। इस गिरि के शरण में जाकर कितने ही पापी-घातक-व्यसनी आत्मा शाश्वत सुख के भोक्ता बन चूके हैं। जिनशासन के कई वीरलो ने इस तीर्थ की भक्ति से खुद के मानवभव को सफल किया हुआ है।

अरे ! जो पक्षी की छाया भी इस गिरिवर पर पड़े तो उनकी आत्मा का दुर्गति का भ्रमण भी अटक जाता है और त्रस-स्थावर जो भी तिर्यंच जीव इस गिरि के सानिध्य में रहते है, उनका

परमपद तरफ के गमन का प्रारंभ होकर, कर्ममल को दूर करके वे जल्दी मुक्ति गामी होते हैं।

और अंत में अति सुंदर बात की है कि जैसे पारसमणी के स्पर्श मात्र से लोहा भी कंचन अर्थात् सुवर्ण हो जाता है और हेम यानी सुवर्ण जैसे गुण होते है ऐसे ही गुणों को प्राप्त करता है, ऐसे ही रैवतगिरि के स्पर्श मात्र से अनादिकाल का भव भ्रमण करते समय लगे हुए अशुद्ध कर्ममल से दुषित हुआ शुद्ध स्वरुप आत्मा जगत में वल्लभ अर्थात् प्रिय ऐसी वीतराग स्थिती को पाकर मोक्ष पद को प्राप्त करता है।

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः

: दुहो :

अहो अहो अे गिरनारनी, स्तवना अति सुखदाय;
पूजो वंदो शुभभावथी, पातिक सवि दूर पलाय।

:: ढाल ::

(राग : ऋषभ जिनराज मुज...) (जागने जादवा...)

साथ गिरनारनो हाथ नेमनाथनो, होय जो मस्तके तो शो तोटो;
अन्यस्थाने रही ध्यावे रैवतगिरि, चोथे भव पामतो मोक्ष मोटो...॥१॥

मात तात घातकी पातकी अति घणो,राय भीमसेन गिरनार आवे,
मुनि बनी मौन धरी अष्टदिन तप तपी, उज्जयंतगिरिअे मुगति पावे...॥२॥

वस्तुपाळ तेजपाळ मंत्री साजनने, धार, पेथड श्रावक भीमो;
तीर्थभक्ति करी तन मन धन थकी, मनुज अवतार तस सफल कीनो... ॥३॥

छाया पण पक्षीनी आवी पडे गिरिवरे, भ्रमण दुर्गति तणा नाश थावे;
जल थल खेचरा इण गिरि पर रही, त्रीजे भव मोक्ष मोझार जावे... ॥४॥

व्यक्त चेतन रहित पृथ्वी अप तेजसा, वायु पादप गिरनार पामी;
तीर्थ महिमा थकी कर्म हळवा करी, सवि थया तेहथी मुगति गामी... ॥५॥

'रत्न' 'प्रमोद' 'प्रशांत' 'पद्मगिरि', 'सिद्धशेखर' भवि पाप जावे;
'चंद्र-सूरज गिरि' 'इन्द्र पर्वतगिरि', 'आत्मानंद' गिरिवर कहावे... ॥६॥

कथीर कांचन हूवे पारसना योगथी, हेम परे शुद्ध निज गुण पावे;
तिम रैवतगिरि योगथी आतमा, पदवी वल्लभ लही मोक्ष जावे...॥७॥

(काव्यम्-अनुष्टुप)

अनंत महिमावन्तं, दीक्षा केवल सिद्धिदं;
सदा कल्याणकैः पूतं, वन्दे तं रैवताचलं.

(अथमंत्र)

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु निवारणाय,
श्रीमते जिनेन्द्राय, जलादिकं यजामहे स्वाहा

॥ इति षष्ठम पूजाभिषेके उत्तरपूजा ५४ संपूर्ण ॥

सप्तम पूजा

भूमिका

बाल ब्रह्मचारी श्री नेमिनाथ प्रभु के साथ अविहड प्रीत ऐसी बनी की, अभी एक क्षण भी मन से अगर प्रभु का विस्मरण हो तो हमारे प्राण यह नश्वरदेह छोड़ के प्रभु के चरणों में चले जायेंगे। बस अभी तो यह प्राण को देह में टिकानेवाले सिर्फ और सिर्फ हमारे नेमप्रभुजी है, उनसे ही हमारा जीवन है वैसे भावों की अभिव्यक्ति इस पूजा में हैं।

नेमि प्रभु एवम् गिरनार की भक्ति करते - करते 'हरि' (कृष्ण महाराजा) ने भी तीर्थंकर नामकर्म निकाचित किया है और आगामी चौवीशी में इसी भरत क्षेत्र में बारहवें तीर्थंकर अममस्वामी बनेंगे।

समतारस का सतत अमृतपान करानेवाले धीर गंभीर ऐसे अनेक गुणों के समंदर रुपी गिरनार और उसके उत्तुंग शिखर पर विराजे हुए श्री नेमिनाथ प्रभु का हर पल और हर क्षण, सोते-जागते निशदिन अविरत ध्यान कर रहे हैं।

नेमिप्रभु की असीमकृपा से ही दुर्लभ ऐसा मानवभव, सुहावना संयम जीवन और गौरवशाली गिरनारजी का सांनिध्य प्राप्त हुआ है। प्रभुजी के इस उपकार का बदला संपूर्णतया वापस करने का मेरे जैसे पामर जीव के लिये असंभव है, वैसा बताकर रचनाकार लिखते हैं कि इन सभी उपकारों की किंचित् ऋणमुक्ति

के लिये मैंने तो अति मूल्यवान ऐसे मन रुपी माणेक को आपके चरणों गिरवी रख दिया।

पर प्रभु ! यह क्या ? जहाँ एक ओर से आपके अनहद उपकारों में से अंशमात्र भी मुक्त होने का प्रयत्न कर रहा हूँ, वही दूसरी ओर आप कृपालु ! करुणासागर ! मेरे उपर प्रेमरस की वर्षा करके मुझ पर और उपकार कर रहे हो।

हे देवाधिदेव ! पंगुल ऐसा मैं कब आपके इन उपकारों का पूरा ऋण चुका सकूंगा ? कुछ समझ में नहीं आ रहा है। बस अभी तो आप के प्रति गाढ़ श्रद्धा प्रगट हो चुकी है कि इस काल में आत्मा का उद्धार सिर्फ और सिर्फ आपके जरीये ही होगा।

और अंत में बहुत सुंदर भाव प्रगट करते हैं कि हे प्रभु ! आप तो करुणारस के भंडार हो, आपके नयनों में से तो करुणारस का झरना अविरत बरस रहा है। अभी तो एक ही अरमान है कि आपके करुणासभर नेत्रों की छवी (प्रतिबिंब) मेरे हृदयरुपी दर्पण में आ जाए। बस हमेशा आपके नेत्र युगल में से अविरतपणे झरते करुणारस के स्त्रोत में झीलकर मेरे आतमराम को निशदिन भीगोता रहूँ।

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः

: दुहो :

गिरनार गिरिनो राजीओ, नेमि निरंजन जोय;
तन मन आतमनो धणी, दूजो न होवे कोय।

:: ढाल ::

(राग : मेरो प्रभु पारसनाथ आधार...)

मेरो प्रभु, नेम तुं प्राण आधार, मेरो प्रभु, नेम तुं प्राण आधार,
विसरुं जो प्रभु अेक घडी तो, प्राण रहे ना हमार... नेम तुं ॥१॥

भोग त्यजीने जोग लेवाने, नीकळ्या नेमकुमार,
गढ गिरनारने घाटे वसिया, ब्रह्मचारी शिरदार... नेम तुं ॥२॥

तुज तीरथनी भक्ति करतां, थाय हरि अेक तार;
पद तीर्थंकर करे निकाचित, अकल तुज उपगार... नेम तुं ॥३॥

समतारस भरीयो गुण दरियो, नेमनाथ गिरनार;
सूता जागता ध्यावुं निशदिन, श्वासमांहि सोवार... नेम तुं ॥४॥

मन माणिककुं सोंप्युं में तो, मनमोहनने उधार;
प्रेम व्याज चढ्यो छे इतनो, किम छूटशे किरतार... नेम तुं ॥५॥

हारुं नहीं तुज बल थकीजी, सिद्धसुख दातार;
श्रद्धा भरी छे अेक हृदयमां, तुजथी पामीश पार... नेम तुं ॥६॥

'आनंदधरगिरि' 'सुखदायी', 'भव्यानंद' मनोहार;
'परमानंदगिरि' 'इष्टसिद्धिगिरि', 'रामानंद' जयकार... नेम तुं ॥७॥

'भव्याकर्षणगिरि' 'दुःखहरगिरि', 'शिवानंद' सुखकार;
जगनायक नेमिनाथ कहावे, गिरिनायक शणगार... नेम तुं ॥८॥

शामळीयाकुं अखियन जाणे, करुणारस भंडार;
हेमवदे प्रभु तुज अखियनकुं, दियो छबी अवतार... नेम तुं ॥९॥

(काव्यम्-अनुष्टुप)

अनंत महिमावन्तं, दीक्षा केवल सिद्धिदं;
सदा कल्याणकैः पूतं, वन्दे तं रैवताचलं.

(अथमंत्र)

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु निवारणाय,
श्रीमते जिनेन्द्राय, जलादिकं यजामहे स्वाहा

॥ इति सप्तम पूजाभिषेके उत्तरपूजा ६३ संपूर्ण ॥

अष्टम पूजा

भूमिका

इस पूजा में भव भवभ्रमण के दुःखों से छुटने के लिये बाल ब्रह्मचारी श्री नेमिनाथ परमात्मा को विनंती की गई है कि प्रभो ! आप मुझे इस भवदुःख से बचा लो। मुझे एहसास हो रहा है कि अब तो यह गिरनार गिरिवर ही मेरा एक सहारा है।

गिरनार गिरिवर के स्मरण और सेवन से अनेक पुण्यात्मा शिवसुख के स्वामी बन चूके है जिसमें जैन धर्म को अंगीकार की हुई अंबिका, अति हिंसक और मिथ्यात्वी गोमेध ब्राह्मण, अति दुःखी और दरिद्र अशोकचन्द्र की बातों का उल्लेख किया गया है। अंत में परमात्मा के पदकमल में भ्रमर की तरह रहकर अमृत से भी ज्यादा मीठे ऐसे प्रभु के प्रेमरस का पान रचनाकार कर रहे हैं ऐसा वर्णन यहाँ किया गया है।

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः

: दुहो :

गोमेध यक्ष मा अंबिका, विघ्न निवारणहार;
अहोनिश भक्ति भावथी, तीर्थ तणी करे सार ।

:: ढाल ::

(राग : बापलडां रे पातिकडां...)

तारो तारो नेमिनाथ मने तारो, भवना दुःखडां वारो रे;
माहरे मन गिरनार गिरिवर, जाणो अेक सहारो रे... ॥१॥

जैनधर्मी अंबिका परणी, ब्राह्मण कुळे जावे रे;
साधुने पडिलाभी हरखे, पुन्य पोटलियां पावे रे.. ॥२॥

कटु वचन सासुना सूणीने, सुत दोय लेइ घर छोडी रे;
गिरनार-नेमिनाथ रटतां-रटतां, पडे कूवे करजोडी रे... ॥३॥

अेम शुभध्यानथी उपनी भवने, गिरिअे नेम जूहारे रे;
थाये शक्र प्रभु परभाविका, शासन विघ्न निवारे रे... ॥४॥

ब्राह्मण अतिहिंसक मिथ्यात्वी, अतिव्याधिअे व्यापतो रे;
गिरनारगिरिनुं शरणुं पामी, यक्ष गोमेध अे थातो रे... ॥५॥

अशोकचंद्र दुःखी दारिद्री, गिरनारे तप तपतो रे;
आपे अंबिका पारसमणि, राजरिद्धिमां अे रमतो रे... ॥६॥

संघसहित रैवतगिरि आवे, लेई दीक्षा प्रभु ध्यावे रे;
घातीअघाती कर्मो खपावे, शिवसुंदरीने पावे रे... ॥७॥

'उज्ज्वल' 'आनंद' 'तीर्थोत्तमगिरि', 'महेश्वर' 'रम्य' जाणो रे;
'बोधिदाय' 'महोद्योत' 'अनुत्तर', 'प्रशमगिरि' ने वखाणो रे... ॥८॥

अमृतथी अतिमीठो प्रभुनो, प्रेमनो प्यालो पीधो रे;
हेमवल्लभ प्रभु पादपद्मे, भ्रमर परे रस लीधो रे... ॥९॥

(काव्यम्-अनुष्टुप)

अनंत महिमावन्तं, दीक्षा केवल सिद्धिदं;
सदा कल्याणकैः पूतं, वन्दे तं रैवताचलं.

(अथमंत्र)

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु निवारणाय,
श्रीमते जिनेन्द्राय, जलादिकं यजामहे स्वाहा

॥ इति अष्टम पूजाभिषेके उत्तरपूजा ७२ संपूर्ण ॥

नवम पूजा

भूमिका

इस पूजा में बालब्रह्मचारी श्री नेमिनाथ प्रभु के साथ स्व के अति स्नेहभाव का वर्णन करते हुए गिरनार गिरिवर के उपर हुए प्रभुजी के दीक्षाकल्याणक, साधनाकाल, केवलज्ञान कल्याणक और मोक्षकल्याणक की बातें सादी सरल और रसप्रद भाषा में प्रस्तुत करके गानेवाले के हृदयकमल तक पहुँचने का एक सफल प्रयोग करने में आया है । साथ-साथ हर एक कल्याणक अवसरों को दृश्यमय आकृति देने का प्रयत्न किया गया है ।

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः

: दुहो :

दीक्षा केवल सहसावने, पंचमे गढ निर्वाण;
पावनभूमिने फरसता, जनम सफळ थयो जाण.

:: ढाल ::

(राग : निरख्यो नेमि जिणंदने...)

तुम सरीखो दीठो नहीं मन मोहन मेरे,
जगमां देव दयाळ रे सुण शामळ प्यारे,
पशु तणो पोकार सुणी मन मोहन मेरे,
छोड चले राजुलनार रे सुण शामळ प्यारे ॥१॥

दीन दुखिया सुखिया कीधा मन मोहन मेरे,
धन दोलत वरसीदान रे सुण शामळ प्यारे,
रैवतगिरि सहसावने मन मोहन मेरे,
सहस पुरुष संगाथ रे सुण शामळ प्यारे ॥२॥

अजुआली श्रावण छट्ठे मन मोहन मेरे,
सजे संजम शणगार रे सुण शामळ प्यारे,
दिन चोपन करी साधना मन मोहन मेरे,
करे पावनगढगिरनार रे सुण शामळ प्यारे ॥३॥

भाद्रवदी अमासना मन मोहन मेरे,
बाळे धाती तमाम रे सुण शामळ प्यारे,
समवसरण सुरवर रचे मन मोहन मेरे,
चोत्रीस अतिशय ताम रे सुण शामळ प्यारे ॥४॥

त्रिभुवन तारक पद लही मन मोहन मेरे,
करे जगत उपकार रे सुण शामळ प्यारे,
मधुरगीरा जिनवर सुणी मन मोहन मेरे,
भवतरिया नरनार रे सुण शामळ प्यारे ॥५॥

पंचमशिखर गिरनारे मन मोहन मेरे,
पांचसो छत्रीस साथ रे सुण शामळ प्यारे,
अषाढ सुद आठम दिने मन मोहन मेरे,
सोहे शिववधू संगाथ रे सुण शामळ प्यारे ॥६॥

'मोहभंजक' 'परमार्थगिरि' मन मोहन मेरे,
'शिव स्वरुप' वखाण रे सुण शामळ प्यारे,
'ललितगिरि' 'अमृतगिरि' मन मोहन मेरे,
'दुर्गतिवारण' जाण रे सुण शामळ प्यारे ॥७॥

'कर्मक्षायक' 'अजेयगिरि' मन मोहन मेरे,
'सत्त्वदायक गिरि' जोय रे सुण शामळ प्यारे,
गुण अनंत अे गिरितणा मन मोहन मेरे,
पार न पामे कोई रे सुण शामळ प्यारे ॥८॥

नेमिनिरंजन साहिबो मन मोहन मेरे,
बीजो न आवे दाय रे सुण शामळ प्यारे,
कृपा नजर प्रभु ताहरी मन मोहन मेरे,
हेमने शिवसुख थाय रे सुण शामळ प्यारे ॥९॥

(काव्यम्-अनुष्टुप)

अनंत महिमावन्तं, दीक्षा केवल सिद्धिदं;
सदा कल्याणकैः पूतं, वन्दे तं रैवताचलं.

(अथमंत्र)

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु निवारणाय,
श्रीमते जिनेन्द्राय, जलादिकं यजामहे स्वाहा

॥ इति नवम पूजाभिषेके उत्तरपूजा ८१ संपूर्ण ॥

दशम पूजा

भूमिका

इस पूजा में जग प्रसिद्ध ऐसे गढ़ गिरनार के आलंबन से और उसके परम सांनिध्य में रहकर कितनी ही आत्माएँ सामान्य केवली बनकर अथवा तीर्थंकर पद को प्राप्त करके इस भव सागर के दुसरे पार परमपद को प्राप्त हुए है, उसका प्ररुपण किया हुआ है। जैसे-जैसे इस गिरि का सेवन करने में आता है वैसे कर्मक्षय होते जाते हैं । इस गिरिवर में बसने मात्र से अनंत त्रस-स्थावर तिर्यंच आत्माएँ भी मुक्तिपुरी की ओर प्रयाण कर चूकी है, ऐसा कहने में आता है ।

वर्तमान चौविशी में नेमिप्रभु के दीक्षा केवल और मोक्षकल्याणक, गत चौविशी में आठ भगवान के दीक्षा - केवल और मोक्षकल्याणक और दो भगवान के सिर्फ मोक्ष कल्याणक हुए

है, आगामी चौविशी में चौवीस प्रभु के मोक्षकल्याणक और दो प्रभुजी के दीक्षा-केवल कल्याणक होंगे। अभी तक अनंत तीर्थंकर परमात्माओं के दीक्षा-केवल और मोक्षकल्याणक इस पावन भूमि पर हो चूके है।

अरे! नेमिप्रभु के शासन में (१) देवकी (आनेवाली चौविसी में ग्यारवें श्री मुनिसुव्रत स्वामी भगवान), २. कृष्ण (आनेवाली चौविसी में बारवे श्री अमम्स्वामी भगवान), ३. रोहिणी - बलभद्र की माता (आनेवाली चौविसी में सोलमे श्री चित्रगुप्त परमात्मा), ४. शताली श्रावक (आनेवाली चौविसी में अठारवे श्री संवर परमात्मा), ५. द्वैपायन ऋषि (आनेवाली चौविसी में उन्नीसवें श्री यशोधर परमात्मा), ६. कर्ण (आनेवाली चौविसी में बीसवें श्री विजय परमात्मा)

इसके अलावा ४ परमात्मा के नामों में मतांतर का उल्लेख अनेक आगम ग्रंथों में आ रहा है, ऐसा स्पष्ट मार्गदर्शन ''श्री दीपालिका कल्प ग्रंथ'' द्वारा मिल रहा है।

इन सभी पुण्यात्माओं ने गिरनार और नेमिप्रभुजी की भक्ति से जिननामकर्म निकाचित किया है और अगली चौविसी में इसी भरत क्षेत्र की भूमि पर तीर्थंकर पद को प्राप्त करके यही गिरनार से ही मोक्ष पधारेंगे।

सहसावन में राजीमतीजी, रहनेमि आदि अनेकों ने दीक्षा-केवल और मोक्ष गति प्राप्त की है। गिरनार गिरिवर दीक्षा का दातार होने से गजसुकुमाल मुनि, सुमुखादि पंदर कुमार, निषध

सारणादि कुमार, समुद्रविजय - शिवामाता, कृष्ण के सात भाई, कृष्ण की रुक्मणी आदि राणीयों आदि अनेक आत्माओं को उदार दिल से संयम दान किया है। अनंत आत्मा भव पार उतारे हैं। इसलिये हे भव्यजनो ! इस गौरवशाली गढ़ गिरनार का नित्य ध्यान करो। ऐसा संदेश देने में आ रहा है।

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः

: दुहो :

व्रत नाण निर्वाणपद, पाम्या जिन अनंत;
अन्य अनंतजिन शिववर्या, गिरनार कल्प वदंत।

:: ढाल ::

(राग : धन धन श्री अरिहंतने रे...)

धन धन श्री गिरनारने रे, तार्या अरिहा अनंत सलूणा;
अे गिरिवरने फरसता रे, आतम निर्मल थाय सलूणा ॥१॥

जिम जिम अे गिरि सेवीअे रे, तिम तिम कर्म खपाय सलूणा;
त्रस थावर तस वासथी रे, पामे शिवपद पंथ सलूणा ॥२॥

त्रिकल्याणक भूतकाळमां रे, अनंता जिन गिरनार सलूणा;
वळी अनंता प्रभु पामिया रे, निर्वाणपद गिरनार सलूणा ॥३॥

गत चोविसीमां त्रण थया रे, नेमीश्वर आदि अडना सलूणा;
अन्य बे जिनवर लहे रे, मोक्षगमन गिरनार सलूणा ॥४॥

अनंतवीर्य भद्रकृत्ना रे, दीक्षा-नाण-निर्वाण सलूणा;
शेष बाविस जिन पामशे रे, मुक्तिपद बहुमान सलूणा ॥५॥

सहसावनमां राजीमती रे, रथनेमि वरे ज्ञान सलूणा;
कृष्णकेरा सप्त बांधवा रे, रुकमणी सह अणगार सलूणा ॥६॥

गजसुकुमाल मुणिंदनुं रे, व्रत-नाण ने निर्वाण सलूणा;
सुमुखादि पंदर ग्रहे रे, संसार छेदक व्रत सलूणा ॥७॥

समुद्रविजय शिवामातने रे, विरति केरुं वरदान सलूणा;
निषध सारणादि कुमारने रे, चारित्र मळे गिरनार सलूणा ॥८॥

दीक्षा ज्ञान शिवदानथी रे, तार्या अनंत भवपार सलूणा;
'विरति' 'व्रत' 'संयम' गिरि रे, 'सर्वज्ञ' 'केवल' 'ज्ञान' सलूणा ॥९॥

'निर्वाण' 'तारक' 'शिव' गिरि रे, सेवतां हेम होवे पार सलूणा;
ईण कारण भविप्राणिया रे, नित्य ध्यावो गिरनार सलूणा ॥१०॥

(काव्यम्-अनुष्टुप)

अनंत महिमावन्तं, दीक्षा केवल सिद्धिदं;
सदा कल्याणकैः पूतं, वन्दे तं रैवताचलं.

(अथमंत्र)

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु निवारणाय,
श्रीमते जिनेन्द्राय, जलादिकं यजामहे स्वाहा

॥ इति दशम पूजाभिषेके उत्तरपूजा ९० संपूर्ण ॥

एकादश पूजा

भूमिका

इस पूजा में गौरवशाली गढ - गिरनार की महिमा की अनेक बातों का संक्षिप्त में वर्णन किया गया है।

वस्तुपाल चरित्र ग्रंथ में जगप्रसिद्ध ऐसे दो महातीर्थ शत्रुंजय और गिरनार की यात्राओं का एक सरीखा फल बताया गया है। शत्रुंजय महातीर्थ के १०८ शिखर में से यह 'रैवतगिरि' ही यानी की गिरनार महातीर्थ पांचवा शिखर है जो पंचम ज्ञान यानी की केवलज्ञान का प्रदाता है।

इस गिरिवर के स्पर्श मात्र से ही घोर पापीओं के पाप और कुष्ठादि जैसे अनेक रोगों का नाश होता है। ऐसी अचिन्त्य महिमा को जानकर, लेश मात्र भी बुद्धि का उपयोग किये बिना सिर्फ और सिर्फ शुद्धभावपूर्वक इस गिरि को नमन करते हुए रचनाकार लिखते हैं कि यह अचिन्त्य महिमावंत गिरनार के संपूर्ण गुणों को जानने में असमर्थ होते हुए भी मेरे पूर्वभवों के कोई प्रचंड पुण्य के उदय से इस गिरि का परम सांनिध्य मिल पाया है। इसी वजह से देवाधिदेव नेमिनाथ परमात्मा और गिरनार गिरिवर की अनहद लागणी के प्रभाव से मेरा आत्माराम भक्ति के रंग में रंग गया है। बस ! अनिमेष नयन से नेम नगिने को देखते नैन कभी तृप्त नहीं हो रहे है।

ऐसे इस महिमावंत गिरि की भक्ति के लिये तन-मन-जीवन कुरबान करके शहीद होने की भी तैयारी के भावों को प्रगट

करते हुए पूजा की पूर्णाहुति करने में आ रही है।

विशेष जानकारी के लिये इस पूजा के रचनाकार द्वारा लिखित **''चलो गिरनार चले''** एवं **''गिरनार संवेदना''** पुस्तक अवश्य पढे।

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः

: दुहो :

गिरिना ध्यान थकी सौ, पामशुं भवनो अंत;
अेह हरख उरमां धरी, रैवतगिरिने भजंत.

:: ढाल ::

(राग : जिणंदा प्यारा मुणिंदा प्यारा...)

रैवत प्यारो, उज्जयंत प्यारो, देखो रे गढ गिरनार;
देखो रे नेमिनाथ प्यारो;

शत्रुंजय समो रैवत महिमा, शास्त्र वयण प्रमाण... ॥१॥

अे गिरि पंचम नाणनो दाता, पंचम शिखर वखाण... ॥२॥

घोर पाप कुष्ठादिक रोगो, रैवत फरशे पलाय... ॥३॥

ईण तीरथ आराधन करतां, क्रोडगणुं फल थाय... ॥४॥

महिमा मोटो अे गिरिवरनो, पार कदी न पमाय... ॥५॥

बुद्धिनो लवलेश न मुजमां, भावथी नमुं गिरिराय... ॥६॥

आज लगी शाश्वतगिरिवरना, जाण्या न गुण अपार... ॥७॥

पूरव पुण्य पसाये पाम्यो, हाथ न छोडुं लगार... ॥८॥

नेमि निरंजन गिरि प्रीते, आतमराम रंगाय... ॥९॥

निरखी निरखी नेम नगीनो, नयणा कदी न धराय... ॥१०॥

'हंसगिरि' 'विवेकगिरिवर', सुणतां चित्त हराय... ॥११॥

'मुक्तिराज' 'मणिकान्त' 'महायश', 'अव्याबाध' सुहाय...॥१२॥

'जगतारण' 'विलास' 'अगम्य', नामथी परम निधान... ॥१३॥

हेमवदे गिरिभक्ति काजे, तन मन मुज कुरबान... ॥१४॥

(काव्यम्-अनुष्टुप)

अनंत महिमावन्तं, दीक्षा केवल सिद्धिदं;
सदा कल्याणकैः पूतं, वन्दे तं रैवताचलं.

(अथमंत्र)

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु निवारणाय,
श्रीमते जिनेन्द्राय, जलादिकं यजामहे स्वाहा

॥ इति अेकादश पूजाभिषेके उत्तरपूजा ९९ संपूर्ण ॥

कलश

(राग : धनाश्री...)

गायो गायो रे गिरनार नेमिनाथ गायो,
गिरिगुण के दरिसणथी मेरो, मोह भरम मीटायो;
श्रुतसागर अवगाहन करतां, गिरिगुण रतन निपायो रे...

गिरिमहिमा गिरिभक्ति-विधिथी, गिरि उद्धार गुण गायो;
क्षेत्र तणो अे महिमा मोटो, शब्दे कदि न समायो रे...

पूजा रची गिरिभावे गातां, नयणे नीर झरायो;
गोमेध सिद्ध अंबिका प्रभावे, कार्य सवि निपजायो रे...

तपासूरि दान-प्रेम साम्राज्ये, हिमांशु भानु सुपसायो;
गच्छपति जयघोषसूरिको, दीपे तेज सवायो रे...

प्रेमसूरि शिष्य चन्द्रशेखर के चरणे शीश झुकायो;
धर्मकृपासे गिरिगुण गातां, वल्लभ पदमें पायो रे...

दोय सहस दर्शनगुण साले, धूलेटी दिन सुहायो,
हेम बन्यो प्रभु चरण पसाये, आत्म अनुभव रसीयो रे...

गिरनार - नेमि भक्ति गीत

जोगी बनीने चाल्या

वादळथी वातो करे ऊंचो गढ गिरनार,
पावन थई डोली रह्यो ज्यारे आव्या नेमकुमार,
राजुल आवी साथमां, छोडी सकल संसार,
अमर कहाणी प्रेमनी गाई रह्यो गिरनार...

जोगी बनीने चाल्या नेमकुमार,
धन्य बन्यो रे पेलो गढ़ गिरनार,
विचरे ज्यां विश्वना तारणहार,
धन्य बन्यो रे पेलो गढ़ गिरनार...

जेने जग कल्याणनी लागी लगन,
जीवननी साधनामां मनडुं मगन,
अंतरमां प्रगटे छे प्रीतनी अगन,
आतम उडे छे अेनो ऊंचे गगन-२
वायरामां वहेती बसंती बहार-२,
धन्य बन्यो रे पेलो गढ गिरनार...

अेना प्राणमांथी प्रगटे छे अेवो प्रकाश,
उजाळी दीधा छे धरती आकाश,
भवोभवनी प्रीतडीनो बांध्यो छे पाश,
पूरी छे राजुलना अंतरनी आश-२,
मोक्षे सिधाव्या राजुल नेमकुमार-२,
धन्य बन्यो रे पेलो गढ गिरनार...

मारा शमणांमां नेम प्रभु

मारा शमणांमां नेम प्रभु आवता रे लोल,
मारी आंखोमां अमृत वरसावता रे लोल...
अे तो आवीने मुजने जगाडता रे लोल...
मारा शमणां मां...

मारी घेरी नींदर ने उडाडता रे लोल,
अे तो उरना आसनीये बिराजता रे लोल,
हुं तो अंतरथी आरती उतारतो रे लोल,
हुं तो भाव भर्या फूलडे वधावतो रे लोल...
मारा शमणां मां...

हुं तो स्नेहनी सितार आज छेडतो रे लोल,
मारा स्वामीने दिलथी रीझवतो रे लोल,
प्रभु हसी हसी मुजने बोलावता रे लोल,
मने मुक्तिनो मारग बतावता रे लोल...
मारा शमणां मां...

अेना शिखरे धजाओ मोंघी फरफरे रे लोल,
अेना सोनेरी कळश जन मन हरे रे लोल,
अेनी जाळीनी कोतरणी जीणवी रे लोल,
मने जोवी गमे बहु अे अनेरी रे लोल...
मारा शमणां मां...

नेमजी श्याम गमे

नेमजी श्याम गमे, गिरनार धाम गमे (२),
के जोग साधवाने नीकळ्यां हो (२)

सोहागी शोडला हुं राजुल के विचरुं,
अवगणी हुं काम बधां श्याम संग नीसरुं,
मनथी रहेवायना तनथी सहेवाय ना (२),
त्यारे मांगु हुं मारा मितने, त्यारे पामुं हुं मारा मितने...
नेमजी...

वनमां जो फूल खीले वहेणुंना नाद थी,
उपवन मां फूल खील्या नेमजीना सादथी,
राजुलना नाथ तमे गिरनारी श्याम तमे (२),
अेक व्हालुं लागे तारुं नाम रे,
अेक प्यारुं लागे तारुं नाम रे... नेमजी

नेमि प्रीतम प्यारा

नेमि प्रीतम प्यारा, व्हाला मारा नेमिनाथ - २,
तुज संग प्रीतडी अेवी लागी मने, नवभव केरी प्रीतलडी,
प्रभु हाथ झाली भवपार उतार, भवपार उतारो मने,
मारा नेमिनाथ प्यारा नेमिनाथ भवपार उतारो मने... २

संयम लेवाने काज, प्रभु जई वस्यां गढ गिरनार,
सहसावने करी निवास, प्रभु केवल वर्या गिरनार,
रैवतगिरि मंडन दुःखडा दूर निवारो,
स्वर्णगिरि मंडन भवना फेरा टाळो... प्रभु हाथ झाली

दीक्षा केवलने निर्वाण त्रण रत्न पाम्या गिरनार,
शाश्वतगिरि शणगार, तमे छो जीवन आधार,
शिवादेवी नंदन चरण शरण आपो,
मुज भक्तनी विनंती स्वीकारो... प्रभु हाथ झाली

जय हो गिरनार

गिरनार गिरि तरणतारण जहाज,
नेमनाथ दादो मारो गिरि शिरताज,
तारा गुण गातां गिरि थाये बेडो पार,
हाथ मारो झाली हवे भवपार उतार,
तुं ज मारो श्वास गिरि तुं ज विश्वास,
तुं ज अेक गिरि मारी आश...
जय हो गिरनार गिरनार गिरनार...
गरवो गिरनार गिरनार गिरनार...
जय हो गिरनार... गरवो गिरनार

तार गिरि तार मने भवसागर तराव तुं,
तुं ज भक्ति तुं ज शक्ति तुं शरणआधार,
तार गिरि तार मने भवनिस्तार कराव तुं,
तुं ज गति तुं ज मति तुं परमआधार,

हो... गिरनार तारो छे संगाथ, माथे हाथ तारो नेमनाथ,
भवोभव मळजो तारो साथ, स्वीकारो अरज ओ नाथ,
तुं ज मारुं गीत गिरि, तुं ज मारी प्रीत छे,
तुं ज मारुं स्मित गिरि, तुं ज मारी रीत छे,
तुं ज मारो श्वास गिरि तुं ज विश्वास,
तुं ज अेक गिरि मारी आश...
जय हो गिरनार गिरनार गिरनार...

गरवो गिरनार गिरनार गिरनार...
जय हो गिरनार... गरवो गिरनार
तार गिरि तार मने भवसागर तराव तुं,
तुं ज भक्ति तुं ज शक्ति तुं शरणआधार,
तार गिरि तार मने भवनिस्तार कराव तुं,
तुं ज गति तुं ज मति तुं परमआधार,

हो तारुं शरणुं जेणे स्वीकार्युं, गिरि कर्या अनंता उद्धार,
सिद्धपदगिरि गिरिराय मने तारी करो उपकार,
तुं ज हित गिरि, तुं ज मारी जीत छे,
तुं ज मारुं लक्ष्य गिरि तुं ज थकी मोक्ष छे,
तुं ज मारो श्वास गिरि तुं ज विश्वास,
तुं ज अेक गिरि मारी आश...
जय हो गिरनार गिरनार गिरनार...
गरवो गिरनार गिरनार गिरनार...
जय हो गिरनार... गरवो गिरनार
जय जय जय श्री नेमिनाथ, जय जय जय श्री नेमिनाथ,
व्हाला दादा नेमिनाथ, मारा प्यारा नेमिनाथ...
जय जय जय श्री गढ गिरनार, जय जय जय श्री गढ गिरनार,
जय जय पावन गढ गिरनार, जय जय गरवो गिरनार...

ओ नेम... ओ नेम...

गिरनारवासी मुक्तिविलासी - २,
हुं चाहुं तारो प्रेम... ओ नेम... ओ नेम...

हुं तो संभारुं तुं जो विसारे - २,
नभशे आ प्रीति केम... ओ नेम... ओ नेम...

पशुना पोकारो हृदयमां धारो - २,
मुज वेला आवुं केम... ओ नेम... ओ नेम...

राजुल नारी करुणाथी तारी - २,
मुज पर करशो ने रहेम... ओ नेम... ओ नेम...

टाळो ने विभावो आपो नीज भावो - २,
बने आतम साचो हेम... ओ नेम... ओ नेम...

ओ रखवैया प्यारी मुज मैया - २,
करजो मुज योगक्षेम... ओ नेम... ओ नेम...

पवननी पांखोमां

पवननी पांखो मां, गगननी आंखोमां, प्रभु नेमिनाथ तारुं नाम-२
रोमे रोमे चाले अविरत संकीर्तन तारुं, प्रभु नेमिनाथ तारुं नाम-२

गुफामां छे गुंजन तारुं खीणोमां छे खेलन तारुं,
शिखर शृंगार धरे तारो पगथीये छे कंपन तारुं-२,
नेमनाथ तारा शरणमां छे आजीवन मारुं...
प्रभु नेमिनाथ तारुं नाम - २

धजामां छे नर्तन तारुं, दीवामां छे स्पंदन तारुं,
फूलोमां मोहरी तारी प्रीत, गीतमां संवेदन तारुं - २,
सहसावनमां चार मुखे मनहर दर्शन तारुं...
प्रभु नेमिनाथ तारुं नाम - २

अमारुं तन मन धन तारुं, अमारुं जीवन पण तारुं,
स्वरोनुं संचालन तारुं, कूवारे संमोहन तारुं - २,
आतमना आंगणीये अनहद आव्हेलन तारुं...
प्रभु नेमिनाथ तारुं नाम - २

नेमजीनी जान

नाचे अंग अंग बाजे चंग मृदंग ने रंग उमंग छवायो,
झाझ पखवाज वळी शरणाईना साद थकी गीत मधुरा गवायो,
साजन माजन कई कई राजन आज न हरख समायो,
सजी शणगार कई नाचे नरनार, अेमां नेमजी अे जान जुडायो रे... ३

दूर शरणाईना सूर वागे... कई जानैया डोलवा लागे,
थई गानतानमां गुलतान रे... आवी आवी रे नेमजीनी जान रे...२
आवी रे... आवी रे... आवी रे... आवी
जुओ जादवकुळनी जान रे... वळी गाजे छे डंका निशान रे
आवी आवी रे नेमजीनी जान रे... २

म्हाणी रह्यां छे कृष्ण महाराजा, वरणागी दीसे छे नेम वरराजा-२
कंई भूल्यां छे तन मन भान रे... २ आवी आवी रे नेमजीनी जान रे... २

द्वारिकानी नार रुप रुपना अंबार, सजी सोळे शणगार उर आनंद अपार,
मुखमां छे जेनां पान रे... अेनां गातां मधुरां गान रे...
आवी आवी रे नेमजीनी जान रे... २

जय जय गरवो गिरनार

जय जय गरवो गिरनार... जय जय गरवो गिरनार...
नेमनाथ गिरि शणगार... जय जय गरवो गिरनार...
वंदन वंदन वंदन वंदन गिरनार तने वंदन...

पंचम शिखर शत्रुंजय तणुंअे, सिद्धगिरि छे धाम,
कैलास उज्जयंत रैवत नंदभद्र, स्वर्ण गिरि गिरनार,
नमो कर्णविहार प्रासाद... जय जय गरवो गिरनार...

ज्यां शोभे अंबिका मात, शासनने सदा सुखकार,
भावे प्रणमुं श्री नेमिजिनेश्वर गिरि भूषण शणगार,
पृथ्वीना तिलक समान... जय जय गरवो गिरनार...

छे अनंत आत्माओ तणी, दीक्षा भूमि गिरनार,
छे अनंता तीर्थंकरो तणी, कैवल्य भूमि गिरनार,
ने आवती चोवीसी तणी, निर्वाण भूमि गिरनार,
अध्यात्म नगरी गिरनार... जय जय गरवो गिरनार...

चौद हजार नदीना ज्यां जळ समाया, शीतळ गजपद कुंड,
ज्यां द्रष्टि अनुभवे धन्यता जोई राजुल रहनेमि टूंक,
दीक्षा केवळ सहसावने नमो समवसरण जिनबिंब,
दीपे शिखरोनी माळ... जय जय गरवो गिरनार...

ज्यांना कणेकणमां वसे, महापुरुषोना बलिदान,
धार पेथड सज्जन झांजणशा, नामे वही आ रक्तधार,
वंदु हिमांशु सूरि धर्मरक्षित, हेमवल्लभ सूरिराय,
सौ चालो जईये गिरनार.. जय जय गरवो गिरनार...

चरणो में तेरे रहकर

चरणों में तेरे रहकर भगवन प्यार ही प्यार मिला,
श्रद्धा से जब पूजा मैंने ब्रह्म का ज्ञान मिला...

तुम संग कैसी प्रीत लगी की छुटा जग मुजसे,
जादु ये तुने ऐसा किया की छुटा जग मुजसे,
बंधन सारे तूट गये जब तुने बांध लीया... चरणों में तेरे

गुजर गया हर पल दुःख का जब तेरा ध्यान किया,
हर मुश्किल आसान हुई जब, तुने साथ दिया,
मोह माया में फंसा हुआ मैं, अब आझाद हुआ... चरणों में तेरे

जीना मरना सीखा भगवन जग में जी करके,
जीतेजी मर जाना कैसे सीखा अब तुजसे,
तुं ही है अब माजी मेरा नैया पार लगा... चरणों में तेरे

झहर भी पीना कहे दे अगर तुं, वो भी पी लेंगे,
राजी जिसमें तुं है भगवन, वैसे जी लेंगे,
बिन पिये मदहोश हुआ ये, कैसा जाम पिया... चरणों में तेरे

शमणांनी राते में जोया श्रीनेमजी

शमणांनी राते शमणांनी राते, शमणांनी राते शमणांनी राते,
शमणांनी राते में जोया श्रीनेमजी...
जोया श्रीनेमजी... जोया श्रीनेमजी... शमणांनी राते में जोया श्रीनेमजी...

रथ पर आरुढ़ माथे लहेराय छोगुं, दिलडानी डोरे बांध्युं मन मारुं मोंघुं,
जोया श्रीनेमजी... जोया श्रीनेमजी... शमणांनी राते में जोया श्रीनेमजी...

बांध्यो में चंदरवो, ने गूंथी फूल माळा, राजुल कहे छे हैयुं लेतुं रे उछाळा,
जोया श्रीनेमजी... जोया श्रीनेमजी... शमणांनी राते में जोया श्रीनेमजी...

मनडुं मारुं जोने

मनडुं मारुं जोने डोल डोल थाय, सद्भाग्ये व्हालाजीनो संग मळी जाय,
मायाना वळगणथी केम रे छूटाय, सद्भाग्ये व्हालाजीनो संग मळी जाय... मनडुं

आतमनो संग मने आपजो भगवंतजी,
भक्तिना पुष्पो खीलावजो भगवंतजी,
सेवा सत्संगमां मनडुं बंधाय... मनडुं मारुं

अंतरथी नेमनाथनुं नाम ज्यां लेवाय छे,
थईने बहु राजी अम हैया हरखाय छे,
अेमनी कृपाथी भवसागर तरी जाय... मनडुं मारुं

धन्य श्री गिरनारनो नाथ अलगारी,
दुःख दूर करशे श्री नेमि सुखकारी,
रत्नत्रयी तणां मारग समजाय... मनडुं मारुं

आपत्तिओ आवे भले

आपत्तिओ आवे भले विघ्नो हजार सतावे भले,
अेक ज छे झंखना, अनहद आराधना, साधु हुं साधना...

जय जय श्री नेमिनाथ, जय जय श्री नेमिनाथ,

सुख सफळता जे जे मळे, अेनो यश हुं तमने दउं,
दुःख मळे तेने मारा करम, मानीने हैये लगावी दउं,
चाहुं जनमोजनम, भक्ति तारी परम, साचो तारो धरम...
आपत्तिओ

मृत्यु क्षणे तुं संगे रहे, तारी कृपाथी समाधि मळे,
अंतिम श्वासे तारा थकी तन मन केरी अज्ञानता टळे,
मांगु आनंदघन, पामुं साधु जीवन, साचुं तारुं शरण...आपत्तिओ

मारा चित्तमां, मारा वित्तमां, नेमिनाथ तुं

मारा चित्तमां, मारा वित्तमां, नेमिनाथ तुं, नेमिनाथ तुं....
मारी भक्तिमां, अभिव्यक्तिमां, नेमिनाथ तुं, नेमिनाथ तुं...

मारुं स्वप्न तुं, मारी आंख तुं, मारुं आभ तुं, मारी पांख तुं,
मारी मांगणी, बस अेक छे, तारा संगमां, मने राख तुं,
तन मन तणी, मुज शक्तिमां, नेमिनाथ तुं, नेमिनाथ तुं...

मम सत्य तुं, सौन्दर्य तुं, जीवन तणुं, तात्पर्य तुं,
मम देव तुं, मम धर्म तुं, उपदेश तुं, गुरुवर्य तुं,
श्रद्धाभरी, अनुरक्तिमां, नेमिनाथ तुं, नेमिनाथ तुं...

साची समज, मने आपजे, काची समज, प्रभु कापजे,
जीवन तणी, केडी उपर, कुमकुमना पगलां थापजे,
मुज आतमा तणी तक्तिमां, नेमिनाथ तुं, नेमिनाथ तुं...

मारा दिलमां धडके गिरनार

गिरनार ओ गिरनार वंदन तने हो कोटी कोटी वार,
रैवत मने प्यारुं छे नेमनाथ छे शोभा तारी,
धन्य हुं थई गयो गिरिनो स्पर्श मने थयो... २
जय जय जय जय गरवो गिरनार मारा दिलमां धडके गिरनार...
मारा दिलमां

कल्याणकोनुं स्थान छे, मोक्ष तणुं द्वार छे,
जय जय जय जय गरवो गिरनार मारा दिलमां धडके गिरनार...
मारा दिलमां

मारा तन मनमां प्रभु नेमनो जयजयकार ''गिरनारी हुं छुं''
मने प्राण थकी पण प्यारो गढ गिरनार ''गिरनारी हुं छुं''
मारी रग रगमां थाये शुद्धिनो संचार ''गिरनारी हुं छुं''
अहीं आवी थतां सौ संकल्पो साकार ''गिरनारी हुं छुं''
जय जय जय जय गरवो गिरनार मारा दिलमां धडके गिरनार...२

अहीं संयम लेवां आव्या नेमकुमार ''गिरनारी तुं छे''
अहीं सिद्धिवर्या प्रभु नेम थयां भवपार ''गिरनारी तुं छे''
अहीं सिद्धिवर्या प्रभु नेमना त्रण गणधार ''गिरनारी तुं छे''
हर साधक माटे उभो बनी उपकार ''गिरनारी तुं छे''

कल्याणक भूमि स्पर्शी हुं करुं सहसावननी वंदना,
चौद चौद जिनमंदिरो शोभी रह्यां छे तुज गोदमां,
वादळोनी साथे वातो करतुं कर्णविहार प्रासाद छे,
सृष्टिनुं सौंदर्य तुं तारो महिमा अपरंपार छे,
जय जय जय जय गरवो गिरनार मारा दिलमां धडके गिरनार...२

गिरनार तीर्थनी भक्ति काजे मुज जीवन आ कुरबान छे,
सौ चालो जईये गिरनार हर धडकनमां अे अरमान छे,
अंजलिमां संकल्प छे मने तरवानो विश्वास छे,
द्यो निर्मळ समकित प्रभु बस अेज ''हेम''नी आश छे,
जय जय जय जय गरवो गिरनार मारा दिलमां धडके गिरनार...२

तारजे डुबाडजे

तारजे डुबाडजे जीवाडजे के उगारजे,
सघळुं तने सोंपी दीधुं नेमिनाथ भगवान रे (२)
उगारजे के पाडजे, तरछोडजे स्वीकारजे... सघळुं तने सोंपी...

सेवा तारी आपजे के दूर तुज थी राखजे (२)
स्मरण तारुँ आपजे के मायामां लपटावजे... (२)
सघळुं तने सोंपी...

सत्संग कोई नो आपजे के कुसंगमां तुं राखजे (२)
दर्शन तारा आपजे के रखडतो तुं राखजे... (२)
सघळुं तने सोंपी...

सघळुं तारु राखजे, पण वात मारी मानजे (२)
जिनवरना श्री चरणोमां आ बाल ने स्थान आपजे (२)
सघणुं तने सोंपी...

सुनो प्यारे नेमजी

(राग : छुप गया कोई रे...)

सुनो प्यारे नेमजी, म्हारी पुकार रे,
थारी आ राजुल थाने, केवे बार-बार रे

मिलने की आशा में हूँ, बैठी भवन में,
नेम पिया नाम थारो, जप रही मन में,
नव भव की प्रीत स्वामी, किया दूर विसार रे ॥१॥

धूम धाम सूं तोरण पे आये,
तोरण पर आकर स्वामी रथ क्यूं फिराये,
लगती किनारे नैया पड़ी मझदार रे ॥२॥

पशुओं पे करुणा करके, लिया जोग धार रे,
राजुलने साथे ले लो, चलो गिरनार रे,
भक्तजन गुण गाये, प्रभु थारे द्वार रे,
सुनो प्यारे नेमजी, म्हारी पुकार रे....

सोहे उंचो

(राग : एक प्यार का नगमा है....)

सोहे उंचो गढ गिरनार, सोरठनो शणगार,
चालो जइये, यात्रा करवा, ज्यां सिध्या नेमकुमार...

अेतो यादव कुलराया... माता शिवादेवी जाया...
पिता समुद्र विजयराया... सोहे श्यामवर्ण काया...
सुणी पशुओनो पोकार... जेणे त्यागी राजुलनार...

गिरनारमां सहसावन स्वीकार्यु साधु जीवन,
आतमनी लागी लगन, साधनामां मनडुं मगन,
पाम्या ज्यां केवळज्ञान बन्या वितरागी भगवान...

ओ मुक्तिना स्वामी विनवुं अंतरयामी,
मारा जीवनमां खामी दूर करो ओ जग स्वामी,
सुणजो जयनो पोकार दर्शन आपो अेक वार...

मन मोही लीधू गिरनारे...

यादों मा ने स्वप्नों मा बस, तु छे दिन-रात,
ज्यार थी भेट्यो तुझने बस, एक तारी वात।
तु दोष संताप टाले, तु भवसागर थी उगारे,
तु कर्म क्रोडोना बाले, तु पापी ने पण तारे।
मन मोही लीधू गिरनारे, चित्त चोरी लीधू नेम कुमारे... ॥

सहु चालो-गिरनारे, सहु चालो नेमजी ना द्वारे,
१) ज्याँ साधना नी बहार छे, सिद्धिना जे दातार छे।
सौंदर्य एवुं अपार छे, देवलोक ने पण तार छे,
सहसावने संयम अंगीकार... कैवल्य ने वर्या... नेमकुमार,
समवसरण जिन बिंब जुहार, रहनेमि ने तर्या राजुलनार।
मन मोही लीधू गिरनारे, चित्त चोरी लीधू नेम कुमारे... ॥

२) अरिष्ट ने अंजन समा, गिरनार ना शणगार छे,
जेना प्रभावे कईकनो, टूट्यो अनंत संसार छे।
बिराजे प्यारा नेमकुमार, छे धन्य धन्य ते कर्णविहार,
वरसावता ते ब्रह्मजलधार, सविजीव ना ते तारणहार।
मन मोही लीधू गिरनारे, चित्त चोरी लीधू नेम कुमारे... ॥

आप क्या जाने...

आप क्या जाने नेमि जिनेश्वर, यहाँ हम कैसे जीए जा रहे हैं,
तुज को मिलने की उम्मीद रखकर, गम के आंसु पीए जा रहे है... आप १

तुं सागर है मे ओस बिंदु, मैं एक सूर ओर तुं सूर सिंधु,
सप्तसूरो की सरगम बनाकर, तेरे गीतो को हम गा रहे हैं. आप २

मुखडे पे तेरे ममता जो मलके, नैनो से तेरे प्यार जो छलके,
करुणा और समता की बहती, धारा में हम न्हा रहे हैं... आप ३

तुं समुद्र विजय शिवादेवी नंदा, तेरे चरणों में चोसठ इंदा,
मीटा दे मेरे भवोभव का फंदा, यही अरज हम सुना जा रहे हैं... आप ४

झलक दिखा...

(**राग :** आ लौट के आजा मेरे मीत...)

झलक दिखा... झलक दिखा... झलक दिखा...
अेक झलक दिखा तुं नेमिनाथ (२) तुझे तेरे बाल बुलाते है,
तेरे दर्शन को तरसे ये नैन (२) तुझे तेरे बाल बुलाते है,
अेक झलक दिखा तुं नेमिनाथ... ॥१॥

भक्तों का प्यारा, देवों का दुलारा कितने की आंखों का तारा (२),
दुनिया में चमका नेमिनाथ तुं, जैसे शासन का सितारा,
तेरी आंखे अविकारी नेमिनाथ (२) तुझे तेरे लाल बुलाते है,
अेक झलक दिखा तुं नेमिनाथ... ॥२॥

बीच भवर में नैया फंसी है, आकर तुं पार लगा दे (२)
तेरे सिवा मेरा कोई नहीं है, आकर गले से लगा दे (२)
अब देर ना लगा तुं नेमिनाथ (२) तुझे तेरे लाल बुलाते है,
तेरे दर्शन को तरसे ये नयन (२) तुझे तेरे बाल बुलाते है,
अेक झलक दिखा तुं नेमिनाथ... ॥३॥

वैसे तो तुम हो दिल में हमारे पर आंखे नहीं मानती (२)
अेक पल तेरे से इस भव में बिछड़कर रहना नहीं चाहती (२)
घड़ी घड़ी तरसाओ ना मित (२) तुझे तेरे लाल बुलाते है,
तेरे दर्शन को तरसे ये नयन (२) तुझे तेरे बाल बुलाते है,
अेक झलक दिखा तुं नेमिनाथ... ॥४॥

डूब रहा है सुख का ये सूरज, गमकी बदरिया है छायी (२)
उजड़ गई है बगिया जीवन की, मन की कली है मुरझाई (२)
करे विनंती तुझे तेरे भक्त (२) तुझे तेरे लाल बुलाते है,
तेरे दर्शन को तरसे ये नयन (२) तुझे तेरे बाल बुलाते है,
अेक झलक दिखा तुं नेमिनाथ... ॥५॥

नेमि नाम

नेमजी ना नाम नि तू लूट लूटिले (२),
नेमि ना चरणे जई बेड़ो पार करीले (२)

शरणे जाये अेने प्रभु राह बतावे, जपे नेम अेने मोह केम सतावे(२),
राजुलना नाथ नु तू नाम रटीले (२), नेमि ना चरणे...
नेमजी ना... ॥१॥

ध्यान धरे अेने प्रभु ज्ञान अपावे, जाप जपे अेना प्रभु पाप खपावे(२)
हितकारी नेमिने प्रणाम करीले(२), नेमिना चरणे...
नेमजी ना नाम... ॥२॥

कृपा थाये प्रभुनी तो दोष दूर थाय, बंधनो जे राग ना अे चूर चूर थाय(२)
नेमि भजी संसार तमाम तजी ले(२), नेमि ना चरणे...
नेमजी ना नाम... ॥३॥

नेमि नाम नेमि नाम (२)
दिन रात सुबह शाम - नेमि नाम नेमि नाम,
पहुंचाता सिद्धि धाम - नेमि नाम नेमि नाम,
तू जपले रे अविराम - नेमि नाम नेमि नाम,

नेमि नाम, नेमि नाम, नेमि नाम... (३६ बार)

दिन रात एक ही बात... नेमिनाथ नेमिनाथ

नमामी नेमि

परम पवित्र पावन प्रीतम पुरुषोत्तम रे प्यारा,
निष्काम निरागस नाथ निरंजन निर्विकारी न्यारा,
बाविस माँ सितारा, ने द्वारिका दुलारा,
गिरनार ना गभारा माँ शोभनारा जे ॥

ब्रह्मचरनारा, सत्त्व धरनारा,
जीवदया प्रेमी, नमामि नेमी ।

रंभा जेवू रुप जेनू, रम्य राजुल राणी,
पण पोकारे पंथ माँ पशुओ ने प्राणी,
प्रभुना पांपणो थी पडे पाणी, मुख माँ थी झरे वैराग्यनी वाणी,
हैये दया उभराणी, कलरव थया कल्याणी,
अन्ते थया निर्वाणी, माणी मुक्ति राणीने ॥ ब्रह्मचरनारा...

मन महलमां मोह महाराजनी मस्ती छे,
मोह ने मारीने मारे माणवी मुक्ति छे,
करवा हवे मोहघाति घोष पडघम ना,
साधी ने साते सुरो संयम सरगम ना,
संबंधो लागे खारा, बनजो एवा सहारा,
चढवी छे ध्यान धारा, तमारा जेवी रे... ब्रह्मचरनारा...

हालो रे हालो रे जईए

हालो रे हालो रे जईए गिरनार शिखरीया... (२)
उपर वेग रे बेली नेमजी सावरीया
हालो छ'री रे पालंता, गुण गावंता नाचंता
तुमे रंग रसीया, उमंग रसीया... हालो रे हालो...

सिद्धाचल से सिद्धशीला की सफर सुहानी करनी अगर,
गिरनारजी महातीर्थ होकर एक मनोहर जाती डगर,
अनहदनाद की नोबत बाजे (२) कौन चूकेगा ये अवसर...
भक्ति के भावों की गुंज उठी है शहेनाईयां,
छ'री रे पालंता, गुण गावंता नाचंता... (१)

आवो पधारो हो राज आमंत्रण, लिक्खा केसर कुमकुम से,
प्रीत के पुष्प बिछाये बैठे, स्वागत करते रुम झुम के,
आनंद रंग के तोरण बांधे (२) नाचे आंगन झुम झुमके,
पावन मिट्टी की चिट्ठी आई है साजनीया...
छ'री रे पालंता, गुण गावंता नाचंता... (२)

वंदन हो हीमांशुसूरी को महिमा बताई गिरनार की,
वंदन धर्मरक्षित हेमवल्लभ महिमा बढ़ाई गिरनार की,
निश्रा मिली जो गुरुवर की तो (२), पाई खुशीयां जीवनभर की,
नेमजी चरणो में बैठु सारी रे उमरीया...
छ'री रे पालंता, गुण गावंता नाचंता... (३)

नेमिनाथ दादा मारा हैये वसोने

(राग : ताकते रहते तुजको शाम सवेरे...)

नेमिनाथ दादा मारे हैये वसोने,
हैये वसोने मारा दिलमां वसोने (२)...
गिरनारना नेमिनाथ, मारे हैये वसोने नाथ,
गिरनारना नेमिनाथ, मारा हैये वसोने नाथ...

तारी कृपा जो मुजने मळशे,
भवोभव ना मारा फेरा टळशे,
जिनवाणी नुं श्रवण करीने,
सम्यक् दर्शन मुजने मळशे,
तारा जेवा प्रभु मारे थावुं,
दुर्गतिमां क्यारे मारे नहि जावुं (२)... गिरनारना...१

मारा जीवनमां मारा नयनमां,
मारा हृदयमां वसजो तमे,
स्मरण तमारुं रटण तमारुं,
शरण तमारुं मळजो मने,
आ भव मळीया ने परभव मळजो,
सेवा तमारी दादा भवोभव मळजो (२)... गिरनारना...२

श्याम ! कहोने

श्याम ! कहोने क्यारे मळशुं !
डुंगरनी टोचेथी देखो, अमे प्रभु ! टळवळशुं...
श्याम ! कहोने क्यारे मळशुं !

नथी भूल्या अमे तमने व्हाला, भूल्या अमारी जातने व्हाला,
तमथी छेटा रहीने अमथा अग्निमां परजळशुं !
श्याम ! कहोने क्यारे मळशुं !.... १

आम तेम अमे भटक्या करीअे, धीमे पगले वळग्या करीअे,
बोलोने स्वामी, अेक बीजामां, कदी हवे ओगळशुं !
श्याम ! कहोने क्यारे मळशुं !.... २

थाय अमोने गिरनारे, तुज टेरवा पकडी चडीअे,
थाय कदी तमने अेवुं के, चाल 'आंगळी' दईअे !
तमे अमे संगाथे क्यारे राजुल जेम विहरशुं !
श्याम ! कहोने क्यारे मळशुं !.... ३

साचुं कहेजो, व्हालम तमने, मळवानुं मन थाय छे अमने !
अमे वियोगी आजे छइअे, तमे मळशो तो रणझणशुं !
तमारा मननी वातो अमे, ने अमारा दिलनी वातो तमे,
उदय कहे अेकबीजाने, कदी हवे सांभळशुं !
श्याम ! कहोने क्यारे मळशुं !.... ४

आनंद रंग, भगवंत संग

आनंद रंग... भगवंत संग... अनहद उमंग उपजायो,
अम अंग अंग... सागर तरंग... उछरंग सुमंगल पायो,
गुणगान प्रभुना... सूरतालमां... अद्‌भूत अनुपम छायो,
नेमिनाथ मंदिरे... मनोहर... नेमिनाथ मंदिरे !!... १

आंगी केवी जाजरमान... शोभे जाणे देवविमान,
दीवे दीवे सोनेरी... ज्योति करती नर्तन गान,
आ पुण्य अमारा जाग्यां के... भाग्य फळ्यां छे केवा !,
जे शक्ति मळी छे तेना योगे... करीए उत्तम सेवा...
नेमिनाथ मंदिरे... मनोहर... नेमिनाथ मंदिरे !!... २

सुखकारण दुःखवारण छे... जिनराया भवतारण छे,
भयहारण मदमारण छे... नेमिनाथ गुणधारण छे,
जे भक्ति करी ते ओछी लागे... जागे नित नित प्रीति,
अम अंतर आ हंमेशां गातुं... परम प्रभुनी गीति...
नेमिनाथ मंदिरे... मनोहर... नेमिनाथ मंदिरे !!... ३

आज आनंद अंग अंग जाग्ये

आज आनंद अंग अंग जाग्यो जाग्यो,
आज आंगण गुलाल रंग लाग्यो लाग्यो.....

धजा ऊंचे खेले हैयां, चढे हेले (२),
मारा महावीरथी मोक्ष में तो मांग्यो मांग्यो,
... आज आनंद अंग अंग... १

जिनशासन सोहे वीर मन मोहे (२),
थाक भव भवनी यात्रानो भाग्यो भाग्यो,
... आज आनंद अंग अंग... २

प्रभु बोध आपे प्रभु कर्म कापे (२),
भ्रम भोगनी भूख नो भाग्यो भाग्यो,
... आज आनंद अंग अंग... ३

गिरनार सुंदर नेम अति सुंदर,
कर्णविहार सुंदर नेम अति सुंदर,
नेमनाथना दरबारे शंख वाग्यो वाग्यो,
... आज आनंद अंग अंग... ४

तारा विना नेम मने

(**राग :** तारा विना श्याम मने)

तारा विना नेम मने अेकलडुं लागे,
जान जोडीने वहेलो आवजे...

रोज रोज तारी याद आवे,
तारा विरहनी वेदना सतावे (२),
आव्यो हुं तारे द्वार, मांगु छुं तारी पास (२),
दरशन देवाने वहेलो आव आव आव नेम... तारा... १

चोरी बांधी छे चोकमां,
दीवडा मुक्या छे गोखमां (२),
तुं ना आवो तो नेम, परणुं हुं बीजे केम ? (२),
जान जोडीने वहेलो आव आव आव नेम... तारा... २

नव नव भवनी आ प्रितडी,
राजुलनी साथे छे नेमनी (२),
सतावे तुं मने केम ? तरछोडे तुं शाने नेम ? (२)
नव भवनो राख नेह नेह नेह नेम... तारा... ३

जिहां अनंताजिनना

जिहां अनंताजिनना त्रण त्रण कल्याण छे,
नेमिजिनना तिंहा दीक्खा नाण निर्वाण छे,
भाविमां अनंताजिन (२) थाशे निज स्वभावलीन,
ग्रन्थोना पाने पानमां (२) महीमा अपार छे,
गिरनारगुण गाओ सौ, गिरनार गुण गाओ, गिरनार... (२) गुण गाओ सौ
गिरनारगिरि चालो सौ, रैवतगिरि चालो, गिरनार... (२) गिरि चालो सौ १

जिहां ज्वलंत जिनालयोनी झाकझमाळ छे,
चौद चौद चैत्योना शृंगोनी हारमाळ छे,
भावथी दर्शन करो (२) स्तवनाने पूजन करो,
अवसर अनेरो आवीयो, भविना मनने भावियो,
आ तीर्थनी तारकतानो (२) पुण्यप्रभाव छे...
गिरनारगुण गाओ सौ, गिरनार गुण गाओ, गिरनार... (२) गुण गाओ सौ
गिरनारगिरि चालो सौ, रैवतगिरि चालो, गिरनार... (२) गिरि चालो सौ २

आ पृथ्वीनी पवित्रतानो, स्वाद सौ माणीलो,
आ भूमिनी भव्यताने, दिलमां सौ धारीलो,
सहसावनने माणीलो (२) हैयाना भावथी,
पल पल भासती जिहां, वाणी वैराग्यनी,
कैवल्यनो छे प्रकाश त्यां (२) अेवी आशथी,
गिरनारगुण गाओ सौ, गिरनार गुण गाओ, गिरनार... (२) गुण गाओ सौ
गिरनारगिरि चालो सौ, रैवतगिरि चालो, गिरनार... (२) गिरि चालो सौ ३

आवो आवो ने नेमकुमार...

तुं ज मार्ग देखाड मुजने राह भटक्यो छुं
साचा सुखने शोधवानी राह गोतुं छुं
संसारना संबंधोनो भार लागे छे
मनतणी आ मुंजवणथी थाक लागे छे
नेम आवी जा आवी नेम तुं लई जा
मन मांही हुं अेज मांगु रे...
नेम आवो ने आवो ने मने तारवाने नेम आवो ने...
बांधवी मननी सगाई...
हो नेम आवो ने आवो ने नेम तमे आवो ने आवो ने नेम आवो...

तारा पंथे चालवानुं सत्व मांगु छुं,
मार्गमां भटकी पडु ना बळ हुं मांगु छुं,
भावना शासनरसीनी प्रभु हुं मांगु छुं,
सिद्धपदने पामवा तारो साथ मांगु छुं,
नेम आवी जा आवी नेम तुं लई जा,
मन मांही हुं अेज मांगु रे...
नेम आवो ने आवो ने मने तारवाने नेम आवो ने...
बांधवी मननी सगाई...
हो नेम आवो ने आवो ने नेम तमे आवो ने आवो ने नेम आवो...

चालो रे... सौ चालो...

(राग : बेना रे...)

चालो रे... सौ चालो
चालो रे... गिरनारे जईअे आतम निर्मल थाय,
भवोभवना पापो दूरे पलाय (२)
जे कोई जाय फेरा टळी जाय, भवोभवना पापो दूर पलाय

चौद चौद चैत्यो चमकी रह्या छे, गिरनार गिरि शिखरे (२)
नेमिवरनी मूरत जोतां, हैयुं पल पल हरखे (२) चालो रे...
दर्शन करतां करतां अंतर भीनुं थाय... भवोभवना... १

चालो रे... सौ चालो...
दीक्षा-केवल सहसावने रे, पंचमे गढ निर्वाण (२)
अनंत जिनना त्रिकल्याणक, शास्त्र वचन प्रमाण (२) चालो रे...
घेर बेठां तस ध्यान धरतां, भवचोथे शिवसुख थाय...
भवोभव... २

चालो रे... सौ चालो...
पापी - अधम अहीं जे कोई आवे, दुर्गति दूर हटावे (२)
त्रस - थावर जे गिरिने फरशे, दुष्कर्मोने खपावे (२) चालो रे...
अे गिरिवरनो महिमा मोटो कहेता नावे पार...
भवोभव... ३

चालो आपणे साथे मळी...

(राग : आओ बच्चों तुम्हें दिखाये...)

चालो आपणे साथे मळी सौ, गिरनार गिरिअे जईअे
अे तीरथनी यात्रा करतां, कर्ममल सवि दहिअे
जय जय गिरनार जय जय नेमिनाथ
जय जय गिरनार जय जय नेमिनाथ... १

अे गिरिवरे तार्या अनंता, अनंता जिन तिंहा तरसे,
पापोनुं प्रक्षालन करीने (२), पुण्यकर्म तिंहा भरशे,
जय जय गिरनार जय जय नेमिनाथ
जय जय गिरनार जय जय नेमिनाथ... २

दीक्षा नाण प्रभु नेमना थाये, शिवसुखने ते तो फरशे,
जे अन्नाणी वेगळा वसशे (२), ते तो भवमां भमशे,
जय जय गिरनार जय जय नेमिनाथ
जय जय गिरनार जय जय नेमिनाथ... ३

त्रस-थावर जे अे गिरि फरसे, शिवरमणीने वरशे,
घेर बेठां तस ध्यान धरे जे (२), भवचोथे सिद्धपद धरशे.
जय जय गिरनार जय जय नेमिनाथ
जय जय गिरनार जय जय नेमिनाथ... ४

जिनशासनना इतिहास

(राग : जिनधर्मना जैनबंधु गाई रह्या...)

जिनशासनना इतिहासना, बोली रह्या सुवर्ण पाना,
शाश्वतगिरि शत्रुंज्य अने गिरनार गिरि लेखाणा.

जय गिरनार जय नेमिनाथ जय बोलो अनंताजिननी,
गिरिवरना गुण गाता गाता वरसे सुखनी हेली,
जय जय बोलो गिरनारनी... जय जय बोलो गिरनारजी... १

वस्तुपाळने तेजपाळना भव्य जिनालय गिरनारे,
कुमारपाळने संप्रति केरा दिव्य देवालय गिरनारे,
जय सिद्धराज जय साजनजी जय बोलो गिरिवर भक्तनी.
गिरिवरना गुण गाता गाता... २

पेथड झांझण धारे रेडी, रक्तधारा आ गिरनारे,
शासन केरी शान वधारी, भेखधरी आ गिरनारे,
जय आमराज जय रत्नाशा जय बोलो भरतचक्रीनी.
गिरिवरना गुण गाता गाता... ३

आचारज बप्पभट्टजी आवे, युद्धवारे श्री गिरनारे,
हेमचंद्र मानदेव सूरिजी, कलेश निवारे श्री गिरनारे,
जय आनंदसूरि जय भद्रेश्वरसूरि जय बोलो 'श्री वरदत्तनी'.
गिरिवरना गुण गाता गाता... ४

मळे तारुं शरणुं...

(राग : बहुत प्यार करते...)

मळे तारुं शरणुं, जनमो जनम...
करुं तारी सेवा, करुं हुं नमन...
अंजनवरणी मूरति निहाळी,
दोष अंतरना देजे पखाळी,
धन धन थाये (२) मारुं जीवन... १

शांति मळे ना, मारा हृदयमां,
भवोमां भटक्यो, तारा विरहमां,
स्वीकारो तमे जो (२) शमे सौ भ्रमण... २

तारी भक्ति तारी, सेवाना शमणां,
तारा दरशने, तलशे छे नयणां,
करुं तारी पूजा (२) करुं हुं भजन... ३

तारी सेवानो, महिमा छे भारे,
कामी - अधमने, पण तुं छे तारे,
तारोतारो मुजने (२) नेमिनाथ स्वामि... ४

गिरनार गिरि तो, जगमां छे मोटो,
चौद राजमांतो, मळे नहि जोटो,
भजो भजो सौ प्राणी (२) अवसर ना चूको... ५

गिरनारजी का नाथ है...

(राग : जनम जनम का साथ...)

गिरनारजीका नाथ है, हमारा तुम्हारा... हमारा तुम्हारा
कान में कुंडल डोले, मस्तके मुकुट सोहे,
अंजन वरणी काया, भक्तो के मन मोहे,
भव की यात्रा पूरण होवे, आये द्वार तीहारा... गिरनार...१

आप भये ब्रह्मचारी, निर्मळ निर्विकारी,
विषयवासना भारी, दूर करे गिरनारी,
मोह की निद्रा दूर करे ये, शरण की बलिहारी... गिरनार...२

कल्याणक है जिनके, दीक्षा-नाण-निर्वाणी,
हर चोवीसी में तीनतीन, कहे आगम वाणी,
अनंतजिन शिवगामी हुअे, अैसा ये दातारी... गिरनार...३

अेक राजकुमारी रे...

(राग : पींजरे के पंछी रे... - नागमणि)

अेक राजकुमारी रे, अेनो प्रितम पाछो जाय,
आशाभरी अेनी आंखडीमांथी, आसु चाल्यां जाय रे,
अेनो प्रीतम पाछो जाय...

रोवे राजुल नारी रे, अेनो प्रितम पाछो जाय,
अेक राजकुमारी रे... १

मनने मांडवे तोरण बांध्या, महेलो झरुखा शुं शणगार्यां रे,
सूना छे शणगारो सघळा, मंडप खावा धाय, अेनो प्रीतम ... २

नेम सुणे पशुओनी वाणी, अेने करुणा दिल उभराणी रे,
मारे काजे कैंक जीवोना, जीवन सळगी जाय, अेनो प्रीतम... ३

दुःखियारी कहे राजुल नारी, जनमोजनमनी प्रीत विसारी रे,
कोडभरीना कोड अधूरा, हैयुं बळी बळी जाय, अेनो प्रीतम... ४

मारुं जीवन मुजने प्यारुं, अेवुं सहुने जीवन प्यारुं रे,
राजुल चालो संयम पंथे, जन्म सफळ बनी जाय, अेनो प्रीतम... ५

दुःखदायी सहु पातक छूट्या, संसारना ज्यां बंधन तूट्या रे,
केवल पामी मुक्तिनगरना मंगल पंथे जाय, अेनो प्रीतम...
अेक राजकुमारी रे...६

आ नेम प्रभु के चरणों में...

(राग : जहाँ डाल - डाल पर सोने की...)

यदुवंश समुदेन्दु कर्मकक्ष हुताशन;
अरिष्टनेमि र्भगवान्, भूयाद् वो रिष्टनाशन.
आ नेम प्रभु के चरणों में तुं, झुकले ओ अभिमानी,
तेरी दो दिन की जिन्दगानी (२)
क्यों माया की दुनिया में फंसकर, जीवन खो रहा प्राणी,
तेरी दो दिन की जिन्दगानी (२) ...१

कौडी कौडी माया जोडी, दान दिया ना कोई (२)
दुःखियो का खून चूसके तूने, करली अपनी कमानी (२)
सब धरा रहेंगा माल खजाना, जाये हाथ खाली,
तेरी दो दिन की जिन्दगानी (२) ...२

मात-पिता बहन बंधु नारी, ये मतलब के साथी (२)
अंत में तुजको जाना अकेला, संग चले ना कोई (२)
अब चेत चेत तुं तो अे बंदे, जीवन बहता पानी,
तेरी दो दिन की जिन्दगानी (२) ...३

आज नेम के चरणों में तुं आके, अपना शीश झुकाले (२)
भक्तजन जिसको भावे, तुं उसको अपनाले (२)
वो है मालिक कोई उनके दरसे, गया कभी ना खाली,
तेरी दो दिन की जिन्दगानी (२) ...४

वो काला सहसावन

वो काला सहसावनवाला (२), सुध बिसरा गया मोरी रे (२)
शिवादेवी नंदकिशोर जो (२), कर गयो रे, कर गयो रे, कर गयो
मन की चोरी रे..... सुध

कालो काजल अखियन सोहे, काले बादल में ज्युं जल होवे (२)
सुरभि सुहागन सुंदर सोहे (२), काली भयी कस्तुरी रे... सुध

काली कीकी काला तिल है, कालोदधि का काला जल है (२)
वैसी ही काली सुरत तोरी (२), मैं तो गया बलिहारी रे... सुध

कनक कसौटी पत्थर कालो, कालो कनैयो जशोदा को लालो (२)
जो काले ने राजुल तारी (२), जय जय जय गिरनारी रे... सुध

ओ मारा नेमजी तोरणथी

ओ मारा नेमजी तोरणथी रथ क्युं मोडो,
ओ मारा नेमजी हथलेवो अब जोडो... मारा नेमजी...

ओ मारा नेमजी महेन्दी लगाई मारा हाथो में,
ओ मारा नेमजी महेन्दी रो रंग रातो... मारा नेमजी...

ओ मारा नेमजी आठ भवों री प्रीतलडी,
ओ मारा नेमजी नवमें भव क्युं तोडो... मारा नेमजी...

ओ मारा नेमजी सोलह शृंगार में कीना,
ओ मारा नेमजी मनडा री वातो जाणो... मारा नेमजी

ओ मारा नेमजी बेनड जूठी काया ने माया,
ओ मारी बेनड जूठो है झंझाल मोरी बेनण... तोरणथी...

ओ मारी बेनड पशुओं रोवे इण वाडा में,
ओ मारी बेनड पाप से वाडो छेडो मारी बेनड... तोरणथी...

ओ मारी बेनड पशुओं री पुकार सुनी,
ओ मारी बेनड नेनो नेनो कालजो कपीजे... मारी बेनड तोरण...

ओ मारी बेनड कर्म कपावा में जावु,
ओ मारी बेनड गढ गिरनार जावुं मारी बेनड तोरणथी...

ओ मारा नेमजी थोरे साथे में चालुं,
ओ मारा नेमजी संयम लईने चालो नेमजी... तोरण

ओ मारा नेमजी भक्तो तोरा गावे हैं,
ओ मारा नेमजी भव भव पार उतारो मारा नेमजी... तोरण

थाळ भरी चोखाने...

थाळ भरी चोखाने... घीनो छे दीवडो,
श्रीफळनी जोड लईने,
हालो... हालो गिरनार जईअे रे,

गिरनार तीर्थमां नेमिनाथ शोभता,
मुखडुं पूनम केरो चंद रे... हालो हालोने,

गिरनार तीर्थना ऊंचा रे शिखरो,
जोईने मन हरखाय रे... हालो हालोने,

दादाना चोकमां नाचे पारेवडा,
मोरला करे टहुकार रे... हालो हालोने,

दादानी यात्रा करी हैयुं हरखाय छे,
सेवकनो करो उद्धार रे... हालो हालोने,

हेलो मारो सांभळो...

(दुहो)

सोरठ देशमां संचर्यो, न चढ्यो गढ गिरनार;
सहसावन फरश्यो नहिं, अेनो अेळे गयो अवतार...

हेलो मारो सांभळो गिरनारना राजा,
समुद्र विजयना बेटडा ने शिवादेवीना नंद, मारो हेलो सांभळो... हो

हुकम करो तो दादा जात्राअे आवुं,
भवोभवना कर्म खपावी मोक्षे चाल्या जावुं, ...मारो हेलो

ऊंचा ऊंचा डुंगराने वसमी छे वाट,
केम करीने आवुं दादा पकडो मारो हाथ, ...मारो हेलो

नर अने नारी तारी जात्राए आवे,
चरणकमळ तारा सेवीने,भवसागर तरी जावे... मारो.

नेमिनाथ दादानी अद्‌भुत लीला न्यारी,
आ सेवकनो हाथ पकडी, लई ल्योने उगारी... मारो

हे श्रावको मळी सौ यात्राअे आवे,
धनवैभव लूंटावी तेतो पुण्यकर्म पावे... मारो

गिरनार महिमा

(राग : है प्रीत जहाँ की रीत यहाँ...)

गिरनार तीर्थ की गरिमा के, हम गीत सदा ही गाते हैं,
उस पावनकारी भूमि की दुनिया को बात सुनाते हैं,
गिरनार... गिरनार... गिरनार... गिरनार... जय गिरनार...

दुनिया में प्रतिमा प्राचीनतम, जहाँ **नेमिनाथ** की प्यारी है,
उपशम रस के पीयूष भरे, **नयना** जिनके अविकारी हैं,
जिस श्याम सलोनी **मूरत** पे, दिल सबके फिदा हो जाते हैं,
उस पावनकारी भूमि की.... बात

सहसावन में महासाहस और **संयम** के पावन स्पन्दन हैं,
नेमिनाथ प्रभु की परम पुनित, उस दीक्षा भूमि को **वंदन** हैं,
मनःपर्यवज्ञान **जहाँ पाया**, उस स्थल को शीश **झुकाते** हैं,
उस पावनकारी भूमि की.... बात

जहाँ शुक्लध्यान की ज्वाला में, घनघाती कर्म विनाश किया,
अज्ञान अंधेरा दूर हटा वहाँ, **केवलज्ञान प्रकाश किया**,
आतम ज्योतिर्मय भूमि पर, एहसास अनोखा पाते हैं,
उस पावनकारी भूमि की.... बात

जहाँ पंचम टुंक पे नेमिनाथ को शाश्वत परमानंद मिला,
आगे ही करम **चकचूर** हुए, आत्मिक गुण का **अरविंद** खिला,
निर्वाणभूमि की निर्मलता, दिल में लेकर हम जाते हैं,
उस पावनकारी भूमि की.... बात

जहाँ अनंत **जिनेश्वर** कल्याणक से **पावनता** है **कण-कण** में,
शुभ भाव से आराधन कर लो, कट जायें पाप सभी कण में,
कल्याणक भूमि का आलंबन, हम अपने कर्म खपाते हैं,
उस पावनकारी भूमि की.... बात

अब सोंप दीया

अब सोंप दीया इस जीवन को, नेमिनाथ तुम्हारे चरणों में,
में हुं शरणागत प्रभु तेरा, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में,
अब सोंप दीया इस जीवन को, भगवान तुम्हारे चरणों में.

मेरा निश्चय प्रभु बस अेक वही, मे तुम चरणों का पुजारी बनु,
अर्पण कर दु दुनिया भरका (२), सब प्यार तुम्हारे चरणों में, अब...

जहा तक संसार में भ्रमण करुं, तुज चरणों में जीवन को धरुं,
तुम स्वामि मे सेवक तेरा (२), धरु ध्यान तुम्हारे चरणों में, अब...

मेरी इच्छा प्रभु बस अेक वही, अेक बार तुम्हें मे मिल जावु,
इस सेवक की हर रगरग का (२), हो तार तुम्हारे हाथों में, अब...

ऊंचा ऊंचा रे गढ़ गिरनार...

(तर्ज : माई तेरी चुनरिया लहराई...)

नेमि रे नेमि रे... गढ़ गिरनार सोहाया... (२)

ऊंचा ऊंचा रे, गढ़ गिरनार, नेमनी पताकाओ लेहराई,
कण कण शोभे, गढ़ गिरनार, नेमनी पताकाओ लेहराई,

रंग तारा रीत नो, रंग तारा प्रीत नो, रंग तारा भक्ति नो छे लावी लावी लावी
रंग तारा रीत नो, रंग तारा प्रीत नो, नेमनी पताकाओ लेहराई

शिवा माता ना दुलारा, समुद्र विजय ना नंद,
राजीमती ना कंत प्यारा, आपे परमानंद,
नेमि रे नेमि रे... गढ़ गिरनार सोहाया
नेमि रे नेमि रे... नेमनी पताकाओ लेहराई
सुने सुने रे पशु पोकार, नेमनी पताकाओ लेहराई,
चलो जईये रे गढ गिरनार, नेमनी पताकाओ लेहराई.

दीक्षा केवल ने मुक्ति रे, प्रभु थया शिव कंत,
भावी ना तमाम जीनो थासे शिव संत,
नेमि रे नेमि रे... गढ़ गिरनार सोहाया,
नेमि रे नेमि रे... नेमनी पताकाओ लेहराई
रोमे रोमे रे गढ़ गिरनार, नेमनी पताकाओ लेहराई
श्वासे श्वासे रे गढ़ गिरनार, नेमनी पताकाओ लेहराई

सिद्धाचल नु पंचम शिखर, शाश्वतो गिरनार,
आवे भविक नर-नार, तारे भव संसार,
नेमि रे नेमि रे... गढ़ गिरनार सोहाया
नेमि रे नेमि रे... नेमनी पताकाओ लेहराई
जपो जपो जय गिरनार, नेमनी पताकाओ लेहराई
जय जय बोलो रे गढ़ गिरनार, नेमनी पताकाओ लेहराई

के आज संयमनुं पानेतर

के आज संयमनुं पानेतर, पहेरी तुं जो (२)
राजुलने नेम मळी जाशे, तुं जो (२)
प्रीतने नवी रीत मळी जाशे, तुं जो (२)
राजुलने नेम मळी जाशे, तुं जो (२)
संसार त्यजी नेमजी चाल्या, धरी पावन केडी (२)
राजुल राणी पाछळ चाल्या, नेम राहे दोडी (२)

नेम तारी प्रीतमां शानभान भुली जावुं, लाग्यु रे अमने तारुं घेलु,
नेम तारा मारगडे हुं पण दोडी आवुं, नथी रे तुज विण रहेवुं,
के आज संयम नो साज नेम देशे तुं जो,
मने सिद्धशिलाओ लई जाशे तुं जो,
राजुलने नेम मळी जशे तुं जो... (२)
संसार त्यजी नेमजी चाल्या, धरी पावन केडी,
राजुल राणी वाछळ चाल्या, नेम राहे दोडी (२)

गिरनारे शुभ घडी आवी उभी द्वारे आज, गिरीनुं अंग थाये घेलुं,
मळशे रजोहरण नेमजीने हाथे आज, मनडुं नाचे आज मारुं,
के आज नव भवनी प्रित पुरी थाशे तुं जो,
के साची प्रीत करी जाणी मारा नेमे तुं जो,
राजुलने नेम मळी जाशे तुं जो... (२)

के प्रीतने नवी रीत मळी जाशे तुं जो,
के आज नवभवनी प्रीत पुरी थाशे तुं जो
राजुलने नेम मळी जाशे तुं जो

गिरनार के निवासी नमुं बार बार हुं

आयो शरण तिहार प्रभु तार तार तुं,
गिरनार के निवासी, नमुं बार बार हुं...

करुण का है समंदर तेरी निगाह में
आते ही शांति पाते तेरी पनाह में,
ब्रह्मधार सदाचार निर्विकार तुं, आयो शरण...

पशुओं की पोकार सुनी सिर्फ एक बार,
छुड़ा के बंध उनके तुने छोड़ दिया संसार,
एक बार नेमकुमार सुन पुकारतुं, आयो शरण...

बेठे थे जैसे राजुल के आत्म कमल में,
वैसे ही बैठ जाना हमारे जीवन में,
सेवक की अरज सुणी तुं उगारातुं, आयो शरण...

राजुल किया तुमसे नव नव भवो से प्यार,
अखंड सौभाग्य का तुने दे दीया उपहार,
देना साथ नेमिनाथ पकड़ हाथ तुं, आयो शरण...

नेम रस

संसारथी विरती रथनो, गिरनारथी मुक्ति पथनो,
सथवार छे अेक मारो, आधार छे अेक बस,
नेम नेम नेम नेमरस, नेम नेम नेम नेमरस (२)

नेम तुं मारो प्रेम छे, सोप्युं तने आ जीवन,
जोई तने पहेली ज क्षणे, मोहायु छे मारुं मन (२)
गिरनारी ब्रह्मचारी, जावु तुज पर हुं ओवारि,
मुक्तिनो वेशधारी, राजिमती बनुं हुं तारि,
भरथार तुं रहेजे मारो, भवोभवनी छे तरस,
सथवार छे अेक मारो आधार छे अेक बस... नेम नेम नेम (२)

गिरनार तो अे भूमि छे, ज्यां शिववर्या जीव अनंत,
अरिहंत सिद्ध मुनि तर्या, धन्य बन्या साधु संत (२),
नेमिनो हाथ झालि, बनु हुं प्रशमव्रतधारी,
रैवतनो साथ पामी, हवे बनुं हुं मुक्तिगामि,
प्रभु नेमनो गिरि हेमनो, मारे बनवुं छे वारस,
सथवार छे अेक मारो, आधार छे अेक बस,
नेम नेम नेम नेमरस, नेम नेम नेम नेमरस

संसारथी विरती रथनो, गिरनारथी मुक्ति पथनो,
सथवार छे अेक मारो, आधार छे अेक बस,
नेम नेम नेम नेमरस, नेम नेम नेम नेमरस (२)

सहसावन

राजुलनी राह ने छोडी, मुक्तिना मांडवे दोडी,
नव-भव तणी प्रीति त्यजी, गिरनारे आव्या श्रीनेमि,
उचरे सुव्रत संयमना, विचरे ते विरती उपवनमां,
करी साधना केवळ वर्या जे भूमिमां...
सहसावन... ''नेम संयम उपवन''
सहसावन... ''नेम नुं ज्यां साधना जीवन''
सहसावन... ''नेम नुं समवसरण''

सहसावन...

आ भूमि पर नेमजी विचर्या, संयमना महाव्रत ज्यां उचर्या,
मनःपर्यव, केवळने वरिया, राजीमती रहनेमी ज्यां तरीया,
पोकार सुणी पशुओना, संसार त्यजी क्षणभरमां,

सहसावन...

सृष्टी तणुं सौंदर्यनुं दर्शन, सत्व ने शौर्यनुं छे ज्यां सर्जन,
व्रतने ज्ञाननुं छे ज्यां संगम, नेमि नामनुं छे ज्यां गुंजन,
पगलां पड्यां ज्यां नेमिना, भाग्य खुल्या जे धरतीना,
धबकी रह्या तुज स्पंदनो जे भूमिमां...

सहसावन

दोषथी हर्यो भर्यो छुं छतां

(राग : आंख है भरी भरी...)

दोषथी हर्यो भर्यो छुं छतां, तुजने मळवानी घणी आश छे,
हुं भले निरखी शकुं ना तने, दादा ! तुं परंतु मारी आसपास छे !

भले तुं कोयलना गाने, भले कोई ग्रंथना पाने,
मने तुं आवीने मळजे, हो दादा ! कोई पण बहाने,
जल बधां में पी लीधां, आ विश्वना, हो दादा !

तुजने पीवानी हजी प्यास छे, हुं भले... दोषथी... १

वस्यो तुं धरती गगनमां, वस्यो तुं सुंदर मधुवनमां,
वस्यो तुं माँ ने संतमां, छतां शांति नथी मनमां,
दृष्टि गोचर था हवे, आ विश्वमां, हो दादा !,

तुज विना अहीं सहु निराश छे, हुं भले... दोषथी... २

हुं ने मारुं ने मारामां, ए ज वातो मने गमे,
बीजाना गुण तणी सरगम, हृदयमां खूब रे दमे,
हुं तणा समुद्रमां डूबी गयो, हो दादा !,
तारी पासे आवी एक लास छे, हुं भले... दोषथी... ३

आ मारा महाराजजी

आ मारा महाराजजी (२) आ मारा महाराज जी (२);
सजी धजीने बनी ठनीने, खूब-खूब मलकाय जी...

बाजुबंध मुगटने कलगी, सोनलवर्णी आंगी जी,
झगमग एना रुपने जोई, आ दुनिया शरमाती जी,
लाड लडावे भक्तो एने (२), करीए खूब वहाल जी... १

कदीक फूलोना हार पहेरे, रहे फूलोना ढगले जी,
अबुध अमारो जीव भोळीयो, दोडे तमारे पगले जी,
मलकंता सामे शुं बेठा (२), बोलो तो संभळाय जी... २

व्हाला व्हाला नाथने मळवा, भीतर तालावेली जी,
उदयरतननी जेम अमारे, काज खोलने डेली जी,
तमे अमोने बहु गमो छो (२), वधु नहीं कहेवाय जी... ३

एवुं लागे छे आजे मने प्रभु

(राग : जिंदगी प्यार का गीत है - सौतन)

एवुं लागे छे आजे मने, प्रभु ! आव्या छे मारा हृदयमां;
मित्र मानुं बधा जीवने, भाव जाग्या छे मारा हृदयमां... १

वैरवृत्तिनी ज्वाला उपर, धारा वरसी रहो मेघनी;
कुणा कुणा क्षमा भावना, फूट्या अंकुर मारा हृदयमां... २

ठंडो सूरमो अंजाई गयो, राता धगधगतां लोचन महीं;
क्रोध आव्यो तो जेना उपर, प्रेम प्रगट्यो छे मारा हृदयमां... ३

जेनी जागी ती ईर्ष्या मने, एनी इच्छुं छुं प्रगति हवे;
सुख एनुं ए माणे भले, बळूं शाने हुं मारा हृदयमां... ४

करे नुकसान जेओ मने, ए तो केवल निमित्तो बधा;
भाग भजवे छे मारा करम, साचुं समजायुं मारा हृदयमां... ५

खूल्ला मूक्या छे में तो

(राग : जमाने के देखे है....)

खूल्या मूक्या छे में तो दिलडाना द्वार, प्रभुजी आवोने एकवार;
मारा जीवननी सूनी पगथार, पगला पाडोने एकवार...

वर्षोथी मींट मांडी वाटडी निहाळुं,
शमणानी सोडमां हुं तुजने पुकारुं,
तुजने विसरी न शकुं पलवार... प्रभुजी आवोने... १

तारा विना उरना आसनिया खाली,
छलकावी द्यो ने प्रभु करुणानी प्याली,
तुजने स्मर्या करुं वारंवार... प्रभुजी आवोने... २

अंतरनी आरसीमां रहेजो छबीला,
मारा रे अंतरमां तारा ज पगला,
तारो महिमा छे अपरंपार... प्रभुजी आवोने... ३

भक्तो तमारा केवा छे भोळा,
शाने लीधा छे नाथ ! अम थी अबोला,
अमने उतारो ने भवपार... प्रभुजी आवोने... ४

जिनवर ! तारुं शासन आ जगमां

(राग : चाहा है तुझको, चाहूँगा हरदम)

जिनवर ! तारुं शासन, आ जगमां छे महान,
एना आधारे, मारे तरवो आ संसार...

मने एज तारशे भवपार उतारशे, मझधारमां नैया कांठे पहोंचाडशे,
एवी मुजने श्रद्धा छे, साचे साची श्रद्धा छे,
दृढ मुजने श्रद्धा छे, पाके पाये श्रद्धा छे... जिनवर... १

नश्वर संबंधो ज्यारे साथ छोडशे, त्यारे निश्चय मारो हाथ पकडशे,
समजण देशे, सांत्वना देशे, शक्ति पण देशे,
भूलो जो पडीश मुजने, मार्ग ए देखाडशे,
ढीला जो पडीश मारुं, सत्त्व ए वधारशे... जिनवर... २

मुंझवण थशे तो मार्गदर्शन आपशे, अवढवमां साची मने समजण आपशे,
मोक्षमार्गनुं, एंकांते, आकर्षण आपशे, पुरुषार्थ करशे एने, आधार आपशे,
समर्पित थयेलानुं, ध्यान सदा राखशे... जिनवर... ३

अज्ञान अंधकारने ए दूर करशे, ज्ञानना अजवाला ए जरुर करशे,
सत्त्व देशे, तत्त्व देशे, मिथ्यात्व हरशे, अशुद्ध एवा आतमाने, शुद्ध ए बनावशे,
साधना करावी अंते, सिद्ध पण बनावशे... जिनवर... ४

शासन एकांते सहुने सुखदायी छे, शासनथी विपरीत बधुं दुःखदायी छे,
जिनशासननी, प्रत्येक आज्ञा, शिरदायी छे, आज्ञा जे पालशे ते, शिवसुख पामशे,
शरण जशे जे एना, भवदुःख भांगशे... जिनवर... ५

तारी प्रीतिनी केवी असर

(राग : तेरा मेरा प्यार अमर...)

तारी प्रीतिनी केवी असर,मळती मुजने साची डगर;
करुणासागर करुणा तुं कर, थाक्यो करीने भवनी सफर...

कहो प्रभुजी ! हुं शुं करुं ?
सहेवाती ना आ वेदना,
कृपा नजर जो तारी मळे,
तो दूर थाये आ यातना,
मुज पर कर तुं अमी नजर,
भूली शकुं ना जीवनभर... १

प्रभु ! तारी छबी, तारुं स्मरण,
चित्तमां सदा रमतुं रहे,
तारी यादने तारुं ज नाम,
सघळुं सदा गमतुं रहे,
भव अटवीना विघ्नो तुं हर,
थावुं छे तुम सम अजर अमर... २

तुं मने भगवान एक

(राग : बस ! यहीं अपराध...)

तुं मने भगवान ! एक वरदान आपी दे,
ज्यां वसे छे तुं मने, त्यां स्थान आपी दे...

हुं जीवुं छुं ए जगतमां, ज्यां नथी जीवन,
जिंदगीनुं नाम छे बस ! बोजने बंधन,
आखरी अवतारनुं, मंडाण बांधी दे... ज्यां वसे छे...१

आ भूमिमां खूब गाजे, पापना पडघम,
बेसूरी थई जाय मारी, पुण्यनी सरगम,
दिलरुबाना तारनुं, भंगाण सांधी दे... ज्यां वसे छे... २

जोम तनमां ज्यां लगी छे, सौ करे शोषण,
जोम जातां कोई अहींया, ना करे पोषण,
मतलब संसारनुं, जोडाण कापी दे... ज्यां वसे छे... ३

तारा होठ फडफडे

तुजने जोया करुं, तारी सन्मुख रहुं,
तारा होठ फडफडे, अेनी राह जोऊं छुं...

तने मनथी हुं अहर्निश समरतो रहुं,
तारी आशामां जुगजुगथी वाट जोउं छुं,
तारी अमिदृष्टि माटे हुं तरस्या करुं... १

ज्यारे भाव भरीने तारी भक्ति करुं,
त्यारे उन्मादे हैयुं न साचवी शकुं,
तारी आंखो पटपटे अेनी राह जोउं छुं... २

कोई परभवनी प्रीत मारी जागी गई,
तारी भक्तिथी भीती बधी भांगी गई,
अेवी दिव्यदृष्टि दे के मोक्षमार्ग शोधी लउं... ३

मारा आतमने मार्ग चींध, अे ज मांगु छुं,
तारुं हैयुं मने ओळखी ले, अेज ज मांगु छुं,
तुं बांहो पसारे तो हुं समाइ जाउं... ४

तारा विरह अश्रु मारा नयणे वहे,
क्यारे दादा आवीने मारा आंसु लूछे,
तुं केम ना सुणे हुं तने रोज विनवुं... ५

तुजने जोया करुं

(राग : आंख है भरी भरी...)

तुजने जोया करुं, तुजने स्मर्या करुं,
तारी यादोमां बस हुं रोया करुं,
हवे शरणुं तुं आप, मने संयम तुं आप,
भवसागर नैयाने पार कराव,
नेम रे... नेम रे... (२)

दोष थी हर्यो भर्यो छुं छतां तुजने मळवानी घणी आश छे,
हाथ झालो मुजने उगारजो, तारा संगाथनी तलाश छे,
दोष थी हर्यो... १

स्मरणमां तारुं नाम हो, नेत्रोमां तारुं ध्यान हो,
मुज श्वासोनी सरगममां नेमनाथ ज गान हो,
निर्मळतानो स्पर्श मुजने थाय जो... दादा,
मानुं के तुं मुजने फळ्यो आज रे... दोष थी... २

वस्यो मीरानी भक्तिमां, वस्यो साधकनी शक्तिमां,
लाज राखो हवे मारी, वहीने हरपळ स्मृतिमां,
तारो बनी बाळने संभाळजो दादा,
यादो मां वितावुं दिवसने रात रे... दोष थी... ३

तारा गुणोनी पाट मने

(राग : तारा गुणोनी पाट मने...)

तारा गुणोनी पाट मने आप मारा स्वामी !
मने तारा मारग तणां ओरता,
तारा उजळा ते वेष मने आप मारा स्वामी !
मने संयमनां रंग तणा ओरता....

वीजनो झबकार थाय एटली ज वारमां, छोड्या ते मान अभिमान,
तुज गुण मेळववा हुं राजपंथ छोडीने, कांटाळी केडी चहुं आज,
आ मृगजलना भाग्यथी छोड़ाव मारा स्वामी !... मने...

फूल फूल भमती आ आंखोने एकवार, ओळखाव तारुं पारिजात,
ठेर ठेर घूमतां आ चरणोने क्यांक जई, पहोंचाड आज तारी वाट,
आ भवनां जाळाने हवे तोड मारा स्वामी !... मने...

तारुं सान्निध्य मळे, तारो साथ मने मळे, तारा आशिष मुजने गमतां,
तारी आज्ञा मळे, मारी साधना फळे, एवा अरमान हृदये रमतां,
आ संसार सागर तराव मारा स्वामी !... मने...

प्रभु ! तमारा पगले पगले

प्रभु ! तमारा पगले पगले, पा पा पगली मांडी छे;
हवे तो अक्षर पाडो हरिवर ! मारी कोरी पाटी छे...

बालक छुं हुं, मने खबर क्यां, शुं छे साचुं जीवन,
पडी जाउं ना क्यांये प्रभु ! करुं रोम रोम संजीवन,
सिंचन करजो मारा कण कणमां, मारी सुक्की माटी छे...१

बालक पकडे माँनी आंगली, एम हुं झालुं छुं तमने,
वर्षा राणी भरे सरोवर, एम भरी दो अमने,
अमे अमारी हथेलीओमां, मिलननी रेखा आंकी छे... २

मने ज्यां जवानुं मन

(राग : ईक प्यार का नगमा है...)

मने ज्यां जवानुं मन, त्यां मुजने जवा दे नहि,
मारा कर्मो कठण केवा ! मारी मुक्ति थवा दे नहि...

मने थाय घणुं मनमां, के आ मोको संभाळी लउं,
मंझिल छे नजर सामे, एने दोडीने झाली लउं,
पण काया बने दुश्मन, एक पहलुं उपाडे नहिं, ...मारा कर्मो... १

आ कुमळा हृदय माथे, बहु बोझा लीधा छे में,
कडवा घूंटडा जगमां, ना छूटके पीधा छे में,
हवे लागी तरस जेनी, ते अमृत पीवा दे नहिं, ...मारा कर्मो... २

हुं आगळ जवा मागुं, मने पाछळ हठावे छे,
हुं पावन थवा मागुं, मने पापी बनावे छे,
शुं करवुं हवे मारे ! कोई मारग सुझाडे नहिं, ...मारा कर्मो... ३

मारा व्हाला प्रभु

मारा व्हाला प्रभु ! क्यारे मळशो मने !
मारी आश पूरी, क्यारे करशो तमे !...

करुणासागर छे बिरुद, तमारुं प्रभु !,
करुणा करशो ए आशा, धरुं हुं प्रभु !,
रात दिवस हुं समरुं छुं... प्रभु ! तुजने, ...मारी आशा पुरी... १

मारी कबूलात छे के, पतित हतो हुं,
पण पतितोने तारनारो, एक ज छे तुं,
पतितपावन बनी, क्यारे आवशो तमे ! ...मारी आशा पुरी... २

तुजने निरखी शकुं, एवी दृष्टि तुं दे,
तुजने ओळखी शकुं, एवी शक्ति तुं दे,
तारी छायानी मायामां रहेवुं गमे, ...मारी आशा पुरी... ३

मुश्किल डगर छे

मुश्किल डगर छे लांबी सफर छे, चाहु छुं तारो साथ,
झाल्यो छे तारो हाथ में प्रभुजी हवे ना छोडुं साथ,
तारी मारी जे प्रीति छे, मुजने लागे मीठी छे,
आवी प्रीतनी गांठो, जगमां क्यांय ना बीजी रे...

चकोर चांदो जोइने राचे, मेघ ने जोइ मोरलो नाचे,
तेमज ज्यारे तुजने नीरखुं, मारुं मनडुं थै थै नाचे,
मारा राजदुल्हारा, मारी प्रीत ना क्यारा,
मारा तारणहारा, मुजने प्राणथी प्यारा,
हुं तारो थई जाउं, तुं मारो थई जा,
बस अेटलुं करी आप... झाल्यो छे तारो... १

सती सीता ने लंका मांथी, युद्ध करी श्री राम बचावे,
गोकुळ ज्यारे पूर मां डूबे, गिरी उपाडी श्याम बचावे,
मारो राम तुं छे, मारो श्याम तुं छे,
दुनियाना आ दुःखो मां मारो आराम तुं छे,
अनाथ बनीने रखड्यो घणुं हुं,
हवे तुं मळ्यो मने नाथ... झाल्या छे तारो... २

रोमे रोमे हुं तारो थतो जाउं छुं

रोमे रोमे, हुं तारो, थतो जाउं छुं,
तारा प्रेममां, प्रभुजी ! हुं भींजाउं छुं... रोमे रोमे...

हवे परवडे नहीं, रहेवानुं ताराथी दूर,
तारे रहेवानुं हैयामां, हाजरा हजूर,
तारा स्मरणमां, खोवातो जाउं छुं... तारा प्रेममां...१

हवे जोडुं ना जगमां, हुं नातो कोईथी,
मने व्हालो तुं व्हालो तुं, व्हालो सौथी,
तारी नजरोमां, नजरातो जाउं छुं... तारा प्रेममां...२

हवे शरणुं लीधुं छे तो, सत राखजे,
तारी भक्ति करवानी एक, तक आपजे,
वीतरागी तारा, थकी हुं सोहाउं छुं... तारा प्रेममां...३

श्वासोनी माळामां समरुं हुं तारुं नाम

श्वासोनी माळामां समरुं हुं तारुं नाम,
बनी जाउं तारो प्रभुजी ! करुणानिधान...

शासननी सेवा करतो रहुं हुं,
चरणोमां मस्तक धरतो रहुं हुं,
भरी दे तुं झोली... प्रभुजी ! ओ प्रभुजी !... श्वासोनी...१

ईच्छा छे मारी तारा जेवो थावुं,
संयम स्वीकारी मोक्षे हुं जाउं,
तन-मन मारुं प्रभुजी !... तुज पर कुरबान... श्वासोनी...२

कृपा करो एवी खीले सत्त्व मारुं,
छोडीने जंजाल बनी जाउं तारो,
जे दिन हुं विसरुं तुजने... छूटे मारा प्राण... श्वासोनी...३

झालो मारो हाथ हुं भटकी न जाउं,
सुखोमां रही तुजने वीसरी न जाउं,
तारो समजी मुजने आपी दे... चरणोमां स्थान... श्वासोनी... ४

हे उपकारी कृपा वरसावो

(राग : राम करे ऐसा हो जाये...)

हे उपकारी कृपा वरसावो, सिद्धशिला अे मने तेडावो,
राह जोउं हुं राह जोउं, प्रभु आवशे ने लई जाशे...

जन्मोनी प्रीति मारी आंखो बोले, आंसुओना सागर छलके,
युगयुग ना स्वामी तमे हैयुं बोले, प्रितम मारुं मनडुं डोले,
हैयुं मारुं हवे नहीं वश मां (२), ओ भगवंत मने पासे बोलावो,
सिद्धशिला अे मने तेडावो... १

तारा विनानुं जीवतर लागे, सुनुं सुनुं, हैये मारुं रुदन भीनुं,
प्रभु नथी तो कोई नथी रे, जीवनमां तारी साथे तार जोडाणुं,
तारी प्रीति अेकज साची, ओ भगवंत मारा भाव प्रगटावो,
सिद्धशिला अे मने तेडावो... २

तारो मारग लागे मने प्यारो प्यारो, आपो मने वेश तमारो,
पाप नथी रे करवा मारे आ जीवनमां संयम केरा भाव प्रगटावो,
साचो मारग छे आ जगमां, मळजो मने आ भवमां,
ओ वितरागी राग तोडावो, ''वैरागी'' ना भाव प्रगटावो,
सिद्धशिला अे मने तेडावो... ३

रजा आपो हवे दादा

रजा आपो हवे दादा ! अमारी वात थई पूरी,
अधूरी वात छे तोये, आ मुलाकात थई पूरी...

कर्या कामण तमे एवा, अमे तारा बनी बेठा,
तमारी प्रीतमां घायल, अमे घेला बनी बेठा,
तमे आधार थई बेठा, अमे लाचार थई बेठा... अमारी वात...१

तमे सरिता तणी लहेरो, तमे सागर घणो गहेरो,
तमारा स्मितना पुष्पो, अने झाकळ भीनो चहेरो,
तमारा मुखने जोयुं, हवे फरियाद थई पूरी... अमारी वात...२

स्मरण तारुं हमेशां दे, मरण टाणे समाधि दे,
रहे निर्लेपता सुखमां, अने दुःखमां दिलासो दे,
फक्त जो आटलुं आपो, अमारी मांगणी पूरी... अमारी वात...३

उदय विनवे छे कर जोडी, फरी आवीश हुं दोडी,
झूकावी आंखने अमथी, रजा आपो हवे थोडी,
जवानुं मन नथी थातुं, अमारी आज मजबूरी...अमारी वात...४

दिवाओ साव बूझ्या, तेल खूट्युं, रात थई पूरी,
अमारो कंठ थाक्यो, गान थंभ्यु, वात थई पूरी,
तमे मोक्षे जई बेठा, अमे संसार लई बेठा,
अधुरी वात थई पूरी, आ मुलाकात थई पूरी...अमारी वात...५

सामे जुओ ने

सामु जुओ ने मारी सामु जुओ ने, अेक वार नेम मारी सामु जुओ ने,
करुणा दृष्टिथी मारे सामु जुओ ने, अमिदृष्टिथी मारी सामु जुओ ने,
सामु जुओ...

निगोदना दिवसों मने याद ज आवता, हुं अने तू रह्या अेक ज धाम मा,
अनादिकाळथी दुःखो ने खमता, आ चौरासी लाख योनिमां भमता,
भवो भव सुधी साथे रह्या, आजे मने केम छोडी गया,
तारा विना दादा मने कौन पूछे ना, मारी आंखीयोना आंसू कोण लूछे ना,
सामु जुओ...

संसार असार छे मोक्ष ज सार छे, तारी वातो में तो सुनी नलवार छे,
मोह माया ना झूले हु झुलियो, राची माची ने कर्मो में बांध्या,
हस्ता हस्ता कर्मो में बांध्या, आत्मामां कर्मो ना ढगला भर्या,
रोता रोता आज-मारा कर्मो छुटे ना, दुःखोना डूंगर-मारा आज टूटे ना,
सामु जुओ...

छेल्ली विनंती मारी दादा तू सुणजे, अंत समये मुजने तुं मलजे,
पीडा ज्यारे रग-रगमांथी व्यापे, तारा दर्शननी ठंडक तुं आपजे,
झंजाल जगनी छोडी गई, मने तारा ध्यानमां स्थिर करी,
समाधि मरण - मले अेवुं हु मांगु, भव भवना फेरा टले अेवुं हुं मांगु,
सामु जुओ...

तारो महिमा अपरंपार

तारा नामे सूरज लावे, रोज नवी सवार,
तारी पूजा तारी स्तवना, पल पल तुज उच्चार करुं,
तारो महिमा अपरंपार...

तारी भक्ति करता करता, हु थावु भव पार,
तारो जाप करु छु दादा, तु जगनो आधार छे,
तारु किर्तन करता करताा, सफल करु अवतार,
तारो महिमा अपरंपार...

तु जो पकड़े हाथ तो मारो, थयी जाशे उद्धार,
तु सोनेरी कमळे चाले, धर्मचक्र सहचार,
हवे नाश करी दे मारा, मन ना विषय विकार,
तारो महिमा अपरंपार...

तु छे मुज शणगार प्रभुजी, तु छे मुज सुविचार,
तु छे करुणा सागर स्वामी, कृपावंत समुदार,
तु छे मारो भाग्य विधाता, तु छे सुख दातार
तारो महिमा अपरंपार...

मने याद आवशे तारो सथवारो....

(तर्ज : ए समय कदी ना, मम्मी भुलातो)

तारो ने मारो संबंध न्यारो,
मने याद आवशे तारो सथवारो...

तारा रुप उपर हु, ओ वारी जाऊ, तारा गुणो थी, अंजाई जाऊ,
बस टगर मगर थई, हु जोवु तुझने, जाणे आखी दुनिया, मळी गयी मुझने
डुबतो हतो ने, मल्यो किनारो, मने याद आवशे, तारो सथवारो...

तारा मिलननी, जे क्षणों हती आ, मुझ जन्मारानी, शुभ पळो हती आ,
ए क्षणो हृदयमा, कंडारी लीधी मैं, आतमनी शेरी, शणगारी लीधी मैं,
वसमो घणो छे, आ वियोग तारो, मने याद आवशे, तारो सथवारो...

अनंत तीर्थंकर परमात्मा के कल्याणकों से पावन बने श्री गिरनार महातीर्थ के महाकल्याणकारी १०८ नाम सहित के १०८ खमासमण के दोहे

१. कैलासगिरि :

कैलासगिरिवरे शिववर्या, तीर्थंकरो अनंत;
आगे अनंता पामशे, तीरथकल्प वदंत.

२. उज्ज्यंतगिरि :

उज्ज्यंतगिरिवर मंडणो, शिवादेवीनो नंद;
यदुकुलवंश उजालियो, नमो नमो नेमिजिणंद.

३. रैवतगिरि :

रैवतगिरि समरुं सदा, सोरठ देश मोझार;
मानवभव पामी करी, ध्यावुं वारंवार.

४. स्वर्णगिरि :

एकेकुं पगलुं चढे, स्वर्णगिरिनुं जेह;
हेम वदे भवोभवतणा, पातिक थाये छेह.

५. गिरनारगिरि :

सोरठदेशमां संचर्यो, न चढ्यो गढ गिरनार;
सहसावन फरश्यो नही, एनो एले गयो अवतार.

६. नंदभद्रगिरि :

आधि व्याधि उपाधि सौ, जाये तत्काल दूर;
भावथी नंदभद्र वंदता, पामे शिवसुख नूर.

७. पारसगिरि :

लोह जिम कंचन बने, पारसमणिने योग;
गिरि स्पर्शे चिन्मय बने, अशोक चंद सुयोग.

८. योगेन्द्रगिरि :

मन वच काया योगने, जीत्या जे गिरि मांहि;
तिण कारण योगी तणो, इन्द्र कहायो ज्यांही.

९. सनातनगिरि :

गिरि तणा गुणने कहे, तीर्थंकर भगवंत;
सनातनगिरि मानथी, शिव लहे जीव अनंत.

१०. सुरभिगिरि :

दुर्गंधानारी इणगिरि, गजपद कुंडे स्नान;
बनी सुगंधी देहडी, सुरभिगिरिने प्रणाम.

११. उदयगिरि :

उदय लहे शुभकर्मनो, अशुभनो थाये तिहां छेद;
एह गिरिना ध्यानथी, अंते लहे अवेद.

१२. तापसगिरि :

तापस पण शिवसुख लहे, एहवो जेहनो प्रभाव;
अष्टकर्मनो क्षय करी, पामे आत्म स्वभाव.

१३. आलंबनगिरि :

आलंबन आपी रह्यो, सिद्धिसदन सोपान;
जे जे जिवडा तेह भजे, झट पामे शिवस्थान.

१४. परमगिरि :

गिरिवरोमां परमता, पामी जेह सौभाग्य;
आनंद आपे सहु जीवने, दूर करी दुर्भाग्य.

१५. श्रीगिरि :

श्री गिरि छे एक एहवो, प्रिय वस्तुमां अजोड;
भविक जीव झंखे घणुं, वरवा शिववधू कोड.

१६. सप्तशिखरगिरि :

सातराज पहोंचाडवा, जे धरे सप्त शिखर;
स्वगुण महेल प्रवेशवा, जे करे मोटु विवर.

१७. चैतन्यगिरि :

चैतन्यशक्ति प्रगटतां, आत्मानंद जिहां थाय;
तेह गिरिना स्मरणथी, चैतन्यपूंज समराय.

१८. अव्ययगिरि :

व्यय होवे कर्मो तणो, वली अशुभ परिणाम;
अव्ययगिरिने वंदता, शुद्ध स्वरुपने पाम.

१९. ध्रुवगिरि :

एह गिरि छे अनादिथी, काल अनंत रहे जेह;
भूमितले ध्रुवपणे रही, शाश्वतता लहे तेह.

२०. परमोदयगिरि :

ध्यान धरता गिरितणुं, भवचोथे लहे शिव;
परमोदय आतमतणो, प्रगटावे भवि जीव.

२१. निस्तारगिरि :

सहसावने संयमग्रही, गजसुकुमाल मुणिंद;
रैवत मसाणे शिव लही, निस्तारण गिरिंद.

२२. पापहरगिरि :

मातपितानो घातकी, गिरनारे आवंत;
भीमसेन मुगते गयो, पापहर गिरि सेवंत.

२३. कल्याणकगिरि :

अनंतकल्याणक जिन तणा, गिरि शृंगे सोहाय;
व्रत-केवल-मुक्ति लहे, कल्याणक गिरि जोवाय.

२४. वैराग्यगिरि :

मेघ परे वरसे सदा, गिरि वैराग्य झरण;
सिंचे आतम गुणने, परमानंद रमण.

२५. पुण्यदायकगिरि :

सुरतरु सम आराधतां, पुण्यदायक गिरिराज;
ऋद्धि समृद्धि तत्क्षण मिले, वली मले सिद्धिराज.

२६. सिद्धपदगिरि :

सिद्धपद अर्पण करे, जेह गिरिनी सेव;
तिणे कारण वंदिए सदा, अभेद थइ तत्खेव.

२७. द्रष्टिदायकगिरि :

मिथ्याद्रष्टि भमता भवे, पामे गिरि शरण;
सुद्रष्टि लहे पंथे रही, द्रष्टिदायक चरण.

२८. इन्द्रगिरि :

पडिमा भरावी सुरवरे, पूजा करे त्रिकाल;
चैत्यद्वारे रक्षा करे, इन्द्र थइ रखेवाल.

२९. निरंजनगिरि :

स्फटिक जिम छे उजलो, निरंजन निराकार;
शुद्धातम इण गिरि करे, दीसे अंजन आकार.

३०. विश्रामगिरि :

इण क्षेत्रे दान तप करे, क्रोडगणुं फल पाम;
अनंत ऋद्धि निर्मलपणुं, लहेशो गिरि विश्राम.

३१. पंचमगिरि :

स्पर्शो पंचम शिखरे, शिवगामी नेमि चरण;
वरदत्त गणधर पूजो, पामो चरण शरण.

३२. भवच्छेदकगिरि :

भवनिर्वेद करी मुनिवरो, अनशन तपे तपंत;
भवच्छेदकगिरि वंदता, अजरामर पद लहंत.

३३. आश्रयगिरि :

द्रव्यभाव शत्रु हणे, आपे मन वांछित;
गिरिवरनो आश्रय लहे, विश्व बने आश्रित.

३४. स्वर्गगिरि :

देवो वास करे जिहां, करवा जनम पवित्र;
जाणे स्वर्ग वस्यु तिंहा, तिणे स्वर्गगिरि सिद्ध.

३५. समत्वगिरि :

समत्व गुण विलसी रह्यो, महागिरि कणे कण;
स्मरण दर्शन स्पर्शने, दीप अनुभव मण.

३६. अमलगिरि :

विशाल गिरि परशालमां, वास करे भविलोक;
पाप टले भवतणा, अमल गिरि आलोक.

३७. ज्ञानोद्योतगिरि :

भव्यरुपी कमल खिले, ज्ञानोद्योतगिरि तेज;
गुणश्रेणि प्रकाशमां, पामी सिद्धनी सेज.

३८. गुणनिधि :

गुणनिधि ए गिरि थयो, अनंत जिननो ज्यां;
प्रगट्यो निज स्वरुपनो, अकल अमल गुण त्यां.

३९. स्वयंप्रभगिरि :

स्वयंप्रभा खिली रही, जेनी अनादि अनंत;
तेह गिरिने वंदता, दोष टले अनंत.

४०. अपूर्वगिरि :

ए गिरनारने भेटतां, अपूरव उल्लसे देह;
करमदल चूरण करी, पामे भवि सुख तेह.

४१. पूर्णानंदगिरि :

आनंद पूरण जेहना, फरसे ध्याने जेह;
पूर्णानंदगिरि तेहनुं, नाम थयु जग तेह.

४२. अनुपमगिरि :

वानरीमुख नृपअंगजा, इणगिरि झरण पसाय;
अनुपम मुखकमल लही, पामे शिवसुखसदाय.

४३. प्रभंजनगिरि :

प्रभंजनगिरि एहथी, पाप प्रणाशन थाय;
पुण्यपूंज करी एकठो, सुखपामे वरदाय.

४४. प्रभवगिरि :

प्रभवगिरिना प्रभावथी, तिणे शिव पाम्या अनंत;
पामे छे ने पामशे, लब्धि लही अनंत.

४५. अक्षयगिरि :

हिम सम शीतलता हुवे, करे जीव समतापान;
आतम सत्ता प्रगट करी, अक्षयपद विसराम.

४६. रत्नगिरि :

रत्नबलाह गुफामंही, रत्नपडिमा शोभंत;
देव सहाये दरिसण, निकट भवि लहंत.

४७. प्रमोदगिरि :

प्रमोद लहे गिरि दर्शने, पूर्णता स्पर्शे पमाय;
गढ गिरनारनी सहजता, जेह सदा सुखदाय.

४८. प्रशांतगिरि :

प्रकर्षथी करे शांत जेह, कर्म वंटोल अतीव;
प्रशांत गिरिवर तेह छे, वंदु तेहने सदैव.

४९. पद्मगिरि :

पद्मतणी परे जिहां सदा, प्रसरे गुण सुवास;
तेह आपे भवि जीवने, मुक्ति सुख आवास.

५०. सिद्धशेखरगिरि :

सिद्धो थकी शेखर थयो, अन्य गिरिमां तेह;
अनंत जिन निवासथी, पाम्यो मुक्तिरुप जेह.

५१. चंद्रगिरि :

चंद्रसम शीतलपणु, आपे जीवने जेह;
पाप संताप टले इहां, सुख पामे ससनेह.

५२. सुरजगिरि :

सुरज सम प्रतपे बहु, सर्व गिरिमां तेह;
तेहथी सुरज गिरि कह्यु, नाम अनुपम जेह.

५३. इन्द्रपर्वतगिरि :

देवोतणा परिवारमां, शोभे इन्द्र महाराय;
तिम गिरिमाल मांहे, शोभे तीरथराय.

५४. आत्मानंदगिरि :

आतम आनंद जिहां लहे, अनुभवे निरमल सुख;
काल अनादिना टले, मिथ्या मतिना दुःख.

५५. आनंदधरगिरि :

आत्मानंदने पामवा, मुनिवर कोडा कोड;
आनंदधर ए गिरिवरे, करता दोडा दोड.

५६. सुखदायीगिरि :

सुखदायी ए गिरि थयो, आपी अनंत सुखशात;
तेहने पामी भवितणा, टली गया दुःख व्रात.

५७. भव्यानंदगिरि :

अनंतसिद्ध जिहां थया, करी अनशन शुभ भाव;
भव्यानंद पामी करी, विलसे निज स्वभाव.

५८. परमानंदगिरि :

परमानंदने पामतो, दरिसण लहे भवि तेह;
तेह परम पदवी भणी, गति लहे ससनेह.

५९. इष्टसिद्धगिरि :

सर्व शाश्वती औषधि, सुवर्ण सिद्धि रसकूप;
पुण्यशालीने गिरि दिए, इष्टसिद्धि अनुप.

६०. रामानंदगिरि :

आतमराम आनंदमां, झीले जेहनो संग;
रामानंदगिरि वंदता, पामो सुख असंग.

६१. भव्याकर्षणगिरि :

भव्याकर्षणगिरि प्रति, प्रीत भविने अतीव;
जिन अनंतनी प्रगति, आकर्षे ते भविजीव.

६२. दुःखहरगिरि :

गोमेधे घणु दुःख लह्यु, रोगे पीडियो भमंत;
थयो अधिष्ठायक गिरि, दुःखहर गिरि भजंत.

६३. शिवानंदगिरि :

शिवनो आनंद जे गिरि, चढता अनुभवे जीव;
एहवा ते शिवगिरि प्रति, प्रगट्यो नेह अतीव.

६४. उज्वलगिरि :

इण गिरिनी उज्वलप्रभा, प्रसरे चिहुं दिशे ज्यांय;
तिहां थकी तिमिर सहु, झटपट नासे ज्यांय.

६५. आनंदगिरि :

आनंदनां जिहां समुह छे, अनंत जिननां जेह;
तेह फरसी भवि लहे, रहे ना क्लेशनी रेह.

६६. तीर्थोत्तमगिरि :

ए तीरथने भेटतां, सर्व तीरथ फललाध;
ते तीर्थोत्तम प्रणमतां, सुख मले अव्याबाध.

६७. महेश्वरगिरि :

आणा महेश्वरगिरि तणी, त्रण लोके वर्ताय;
अनंत कल्याणकनी जिहां, आर्हन्त्य शक्ति समाय.

६८. रम्यगिरि :

रम्यता ए गिरि तणी, देखी मोह्यु मन;
देवो अने विद्याधरो आवे दोडी प्रसन्न.

६९. बोधिदायगिरि :

सदा कालजे वरसतो, गिरि प्रभाव अमंद;
बोधि बीज वपन करे, बोधिदाय निर्मद.

७०. महोद्योतगिरि :

नेमीश्वरने गिरि श्यामलो, मन मोहे दिन रात;
महोद्योत भीतर करे, गुण पेखी सुख शात.

७१. अनुत्तरगिरि :

अरिहंत ध्यान परमाणुने, ग्रहे अर्हम् पद योग;
साधे जे भवि ते लहे, अनुत्तर सुखनो योग.

७२. प्रशमगिरि :

प्रशमगुण जिहां उपजे, फरसता जीवने ज्यां;
तिणे कारण गिरि स्पर्शथी, सुख पामो भवि त्यां.

७३. मोहभंजकगिरि :

मोहे पीडित जीवडा, आवे गिरि सानिध;
सम्यक्त्व पामी शिव लहे, मोहभंजक गिरि किध.

७४. परमार्थगिरि :

अनंतकालथी प्राणीया, सेवे स्वार्थीय भाव;
गिरि चरण शरण ग्रही, प्रगटे परमार्थ भाव.

७५. शिवस्वरुपगिरि :

मन-वचन-काया वशकरी, योगी सेवे गिरि आज;
शिव स्वरुप रस लिए, बनी सदा भृंगराज.

७६. ललितगिरि :

गिरि हारमालाओ महीं, मनोहर रुप लहंत;
तेह गिरि निरखी भवि, ललितगिरि वदंत.

७७. अमृतगिरि :

अमृतसम दरिसण लही, पामे भव्यत्व छाप;
अमृतगिरितणी सेवा करे, तेना टाले सवि ताप.

७८. दुर्गतिवारणगिरि :

आ भवे परभव भावथी, रैवत भक्ति करंत;
दुःख दरिद्र दुर्गति टले, दुर्गतिवारण नमंत.

७९. कर्मक्षायकगिरि :

कर्मविडंबना जीवने, वलगी काल अनंत;
कर्मक्षायक गिरि सेवतां, आतम मुक्ति लहंत.

८०. अजेयगिरि :

अजेय जे सवि शत्रुने, चिंता सवि दूर जाय;
राग-द्वेष जीती करी, अरिहंत पदने पमाय.

८१. सत्त्वदायकगिरि :

रजस् तमो गुणी आवी, गिरिवर पाद चढंत;
सत्त्वदायक गिरि बले, क्षपक श्रेणी धरंत.

८२. विरतिगिरि :

परमाणु जे सहसावने, दिए विरति परिणाम;
अंतराय सवि दूरे करी, सप्त गुणठाणु पाम.

८३. व्रतगिरि :

हरि पटराणीने यादवो, प्रद्युम्न शांब कुमार;
व्रतगिरिए व्रत ग्रही, पाम्या भवनो पार.

८४. संयमगिरि :

जिन अनंता सहसावने, नेमिप्रभु ठवे पाय;
संयम ग्रही मनःपर्यवी, ध्यान धरी मुगते जाय.

८५. सर्वज्ञगिरि :

रवि लोक प्रकाशतो, सर्वज्ञ लोकालोक;
मोहतिमिर दूरे टले, चेतनशक्ति आलोक.

८६. केवलगिरि :

एक एक प्रदेशमां, गुण अनंतनो वास;
इण गिरि केवल लइ, भोगवे लील विलास.

८७. ज्ञानगिरि :

सहजानंद सुख पामीयो, ज्ञानरस भरपूर;
तेहना बलथी में हण्यो, मोह सुभट महा क्रूर.

८८. निर्वाणगिरि :

जे गिरिए अनंता, निर्वाण पाम्या जिन;
ते निर्वाणगिरि पर, कोइ नहीं दीन हीन.

८९. तारकगिरि :

आंगणुं ए गिरि तणुं, पामे जल थल जेह;
भव सातमे मुक्ति लहे, तारकपणु गुणगेह.

९०. शिवगिरि :

राजिमतीने रहनेमि, सहसावने दीक्षा लीध;
वली शिवपद पामीया, इणगिरि अनशन कीध.

९१. हंसगिरि :

हंस परे निर्मल करे, परिणति शुद्ध सहाय;
जेह गिरि सांनिध्यथी, अनुपम गुण पमाय.

९२. विवेकागिरि :

विवेकगिरि आतमतणो, देह थकी जे भिन्न;
ध्यान धारा मांही लहे, परम सुख अभिन्न.

९३. मुक्तिराजगिरि :

मुगतिना मुगट समो, शोभे ए गिरिराज;
मुक्तिराज ए गिरि थयो, आपे सिद्धनुं राज.

९४. मणिकान्तगिरि :

मणिसम कान्ति जेहनी, दीपे सदा दिनरात;
भविक लोकनी दृष्टिमां, दीसे ते भलीभात.

९५. महायशगिरि :

महान यशने पामीयो, अनंतजिन जिहां सिद्ध;
तेहनी तुलनामां नहीं, अनंत कोई प्रसिद्ध.

९६. अव्याबाधगिरि :

त्रण लोकमां सुरनरो, गिरि आकार पूजंत;
संसार बधा छोडीने, अव्याबाध भजंत.

९७. जगतारणगिरि :

जगतना जीवो सहु, पामी तरे संसार;
एह गुण छे गिरितणो, न लहे फरी अवतार.

९८. विलासगिरि :

ए गिरिनो विलास जे, प्रसरे त्रिहुं जगमांय;
आतमशक्ति प्रगटाववा, भविजन आवे त्यांय.

९९. अगम्यगिरि :

अगम्य गुण छे जेहना, पार न पामे कोइ;
केवली एह जाणी शके, कही न शके ते जोइ.

१००. सुगतिगिरि :

प्राचीन पडिमा विश्वमां, दरिसणे दुर्गति जाय;
पूजो प्रणमो भावथी, सुगति गिरिना पाय.

१०१. वीतरागगिरि :

कर्मरेणु दूरे करे, रैवतभक्ति समीर;
वीतरागगिरि बले, मुक्त बनी रहे स्थिर.

१०२. चिंतामणीगिरि :

भाव चिंतामणी गिरि दिए, गुणरत्नो क्रोडो क्रोड;
इच्छित सर्व शीघ्र फले, भेटवा मन धरे दोड.

१०३. अतुलगिरि :

अनंत कल्याणको थकी, मेरु सम गिरि अतुल;
अन्य गिरि तुलना नही, भाखे ऋषभ अमूल.

१०४. महावैद्यगिरि :

भव रोग पीडतो मने, जन्मजरा मृत्यु दुःख;
गुण योगे रोग वारजो, महावैद्यगिरि दिए सुख.

१०५. पावनगिरि :

त्रस स्थावर गिरि खोळे, कर्म मलथी अपवित्र;
''माँ'' बालने पुनित करे, तिम पावनगिरि धरे हित.

१०६. अचलगिरि :

त्रिकल्याणक परमाणुओ, काल असंख्य अविचल;
रत्नत्रयी अविचल दिए, अचलगिरि परिबल.

१०७. लब्धिगिरि :

अनंतलब्धि इहां उपनी, गणधर मुनि महंत;
आत्मलब्धिगिरि नमो, भावे भजो भगवंत.

१०८. सौभाग्यगिरि :

एकसो आठ शिखर महीं, सौभाग्यशाली गिरि शृंग;
त्रिकल्याणक इण गिरि, रहे प्रतिकाल उत्तंग.
गुण केटला गिरि तणा, गाइ शकुं मति मंद;
बृहस्पति न गणी शके, गुणवंतगिरि अमंद.

श्री गिरनार महातीर्थ के शास्त्रानुसार ६ आरे में ६ नाम सुनने में आये हैं, वह है (१) कैलासगिरि (२) उज्जयंतगिरि (३) रैवतगिरि (४) स्वर्णगिरि (५) गिरनारगिरि (६) नंदभद्रगिरि, परंतु तीर्थप्रीति से इस तीर्थ की भक्ति के लिए इस गिरनार तीर्थ के विविध गुणानुसार यह १०८ नाम और दोहे कि रचना की गई है।

श्री गिरनार महातीर्थ की ९९ यात्रा की विधि

पूर्व में अनंता तीर्थंकरो के कल्याणक, वर्तमान चोवीशी के बावीसवें बालब्रह्मचारी नेमनाथ परमात्मा के दीक्षा-केवलज्ञान तथा मोक्षकल्याणक द्वारा श्री गिरनार महातीर्थ की यह पुनित भूमि पावनकारी बनी है। आनेवाली चोवीशी के २४ तीर्थंकर इस महातीर्थ पर मोक्ष में जानेवाले हैं। इस महातीर्थ की ९९ यात्रा की विधि के लिए शास्त्रों में विशेष कोई उल्लेख नहीं है, लेकिन पश्चिम भारत में इस चौबीशी के सिर्फ एक तीर्थंकर नेमिनाथ भगवान के मात्र तीन कल्याणक ही होने की वजह से महाकल्याणकारी भूमि के दर्शन-पूजन तथा स्पर्श द्वारा अनेक भव्यजन आत्मकल्याण की आराधना में विशेष भाव ला सके उसके लिए पुष्ट आलंबन स्वरुप से गिरनार गिरिवर की ९९ यात्रा का आयोजन किया जाता है।

- वर्तमान परिस्थिति को लक्ष्य में रखकर नीचे मुजब यात्रा कर सकते हैं।

• गिरनार के पांच चैत्यवंदन तथा ९९ यात्रा की समझ •

१. तलेटी में आदिनाथ मंदिर में

२. जय तलेटी में नेमिनाथ परमात्मा आदि पांच तीर्थंकर की चरणपादुका के सन्मुख
(पाँचवें पगथिये में श्री नेमिनाथ के चरण पादुका के दर्शन)

३. यात्रा करके दादा की प्रथम टूंक मूलनायक

४. मूल मंदिर के पीछे आदिनाथ मंदिर में

५. अमिझरा पार्श्वनाथ का चैत्यवंदन करना अथवा नेमिनाथ परमात्मा के पगला का चैत्यवंदन करना। वहाँ से सहसावन (दीक्षा-केवलज्ञान कल्याणक) अथवा जयतलेटी की तरफ जाने से प्रथम यात्रा पूर्ण हुई ऐसा कहा जाता है।

बाद में फिर से जयतलेटी से अथवा सहसावन से पूर्व मुजब दो चैत्यवंदन करके उपर चढ़ते दादा की टूंक दर्शन तथा तीन चैत्यवंदन करके पिछे सहसावन या जयतलेटी से नीचे उतरते ही दुसरी यात्रा हुई ऐसा गीना जाता है। क्रमशः इस तरह १०८ बार दादा की टुंक की स्पर्शना करनी आवश्यक है।

• बालब्रह्मचारी श्री नेमिप्रभु के कल्याणक दिन •

च्यवनकल्याणक - आसो वद १२ शौरीपुरी

जन्मकल्याणक - श्रावण सुद ५ शौरीपुरी

दीक्षाकल्याणक - श्रावण सुद ६ सहसावन (गिरनार)

केवलज्ञानकल्याणक - भादरवा वद अमास सहसावन (गिरनार)

मोक्षकल्याणक - अषाढ सुद ८ पांचमी टूंक (गिरनार)

हर महिने की अमावस के दिन गिरनारजी महातीर्थ की यात्रा करने अवश्य पधारिये...

कल्याणकभूमि सहसावन तीर्थ (गिरनार) की ९९ यात्रा कैसे करेंगे ?

पांच चैत्यवंदन :

१. तलेटी में आदिनाथ मंदिर में
२. जय तलेटी में नेमिनाथ आदि पांच प्रभुजी की चरण पादुका के सन्मुख
३. सहसावन में दीक्षा कल्याणक भूमि की देरी के सन्मुख
४. सहसावन में केवलज्ञान कल्याणकभूमि की देरी के सन्मुख
५. सहसावन में समवसरण मंदिर के मूलनायक के सन्मुख अथवा हिमांशूसूरि दादा की देरी के वहाँ से दर्शन होते पाँचवी टुंक के सामने

कल्याणकभूमि सहसावन की ९९ यात्रा की समझ :

१. तलेटी से 3250 सीढ़ी चढ़ने पर सहसावन आता है।
२. सहसावन तक के पांच चैत्यवंदन पूर्ण करके पहली टूंक अथवा वापस तलेटी पहोंचते है तो पहली यात्रा पूर्ण होती है।
३. अगर आप पहली टूंक गये हो तो वहाँ मूलनायक नेमिनाथ दादा का चैत्यवंदन एवं मुख्य मंदिर के पीछे आदिनाथ भगवान का चैत्यवंदन यह दो चैत्यवंदन करके वापस सहसावन में तीन चैत्यवंदन करके पहली टूंक अथवा जय तलेटी पहुंचते हो तो

दूसरी यात्रा पूर्ण होती है।

४. अगर आप दुसरी यात्रा करके पहले टूंक गये हो, तो वहाँ मूलनायक एवं आदिनाथ भगवान का चैत्यवंदन करके वापस सहसावन के तीन चैत्यवंदन करके पहली टूंक अथवा जयतलेटी पहोंचते हो तो तीसरी यात्रा पूर्ण होती है।

क्रमशः इस तरह 108 बार कल्याणकभूमि सहसावन तीर्थ की स्पर्शना करने से कल्याणकभूमि की 99 यात्रा गिनी जाती है।

- **नित्य आराधना :**

१. सुबह, शाम दोनों टाईम प्रतिक्रमण।
२. जिनपूजा तथा कम से कम एक बार दादा का देववंदन।
३. कम से कम एकासणा का पच्चक्खाण।
४. भूमि संथारा।
५. हर एक यात्रा में मूलनायक की 3 प्रदक्षिणा।
६. ''उज्जिंत सेलसिहरे दीक्खा नाणं निस्सिहीआ जस्स, तम् धम्म चक्कवट्टीं अरिट्ठनेमिं नमंसामि'' अथवा ''ॐ ह्रीँ अर्हं श्री नेमिनाथाय नमः'' की 20 नवकारवाली।
७. गिरनार महातीर्थ के 9 खमासमणां।
८. ''श्री रैवतगिरि महातीर्थ आराधनार्थं...'' 9 लोगस्स का काउस्सग्ग करना।

- 99 यात्रा दरम्यान 1 बार मूलनायक दादा की 108 प्रदक्षिणा / 108 खमासमणां / 108 लोगस्स का काउस्सग्ग / पूरे गिरनार

गिरिवर की प्रदक्षिणा (लगभग 28 कि.मी.)

- 9 बार पहली टूंक के चौदह मंदिर का दर्शन / पूजा तथा एक बार देववंदन करना।
- दीक्षा कल्याणक तथा केवलज्ञान कल्याणक की देरी की 108 प्रदक्षिणा / 108 खमासमणा / 108 लोगस्स का काउस्सग्ग करना।
- 1 बार चौविहार छट्ठ करके सात यात्रा। जय तलेटी से कम से कम 2 यात्रा करना।
- यात्रा दरम्यान एक बार गजपदकुंड के जल से स्नान करके परमात्मा की पूजा करना।
- एक बार दादा का स्नात्र पढ़ना।
- एक बार गिरिपूजन करना।

श्री नेमिनाथ टूंक की मंदिर की जानकारी

१. मूलनायक श्री नेमिनाथ का मंदिर - श्री नेमिनाथ भगवान
जगमाल गोरधन का मंदिर - श्री आदिनाथ भगवान
अमिझरा पार्श्वनाथ का भोयरा - अमिझरा पार्श्वनाथ भगवान

२. मेरकवशी का मंदिर - श्री पार्श्वनाथ भगवान
अदबदजी मंदिर - श्री ऋषभदेव भगवान
पंचमेरु का मंदिर -
अष्टापदजी का मंदिर - सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ

३. सगराम सोनी का मंदिर - सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ भगवान
४. कुमारपाल का मंदिर - श्री अभिनंदन स्वामी
५. मानसंग भोजराज का मंदिर - श्री संभवनाथ भगवान
६. वस्तुपाल-तेजपाल का मंदिर - श्री शामळा पार्श्वनाथ भगवान
७. गुमास्ता का मंदिर - श्री संभवनाथ भगवान
८. संप्रतिराजा का मंदिर - श्री नेमिनाथ भगवान
९. ज्ञानवाव का मंदिर - श्री संभवनाथ भगवान
१०. चंद्रप्रभ स्वामि का मंदिर - श्री चंद्रप्रभ स्वामी, गजपद कुंड -
११. मलवाला का मंदिर - शांतिनाथ भगवान
१२. धरमचंद हेमचंद का मंदिर - श्री शांतिनाथ भगवान
१३. चौमुखजी का मंदिर - श्री नेमिनाथ भगवान
१४. रहनेमि का मंदिर - श्री रहनेमि सिद्ध भगवान

- गौमुखीगंगामां चोवीस भगवान का पगला
- अंबाजी टूंक में श्री नेमिनाथ का पगला
- गोरखनाथ टूंक में प्रद्युम्न का पगला
- ओघड टूंक में श्री नेमिनाथ का पगला तथा प्रतिमा
- पांचमी टूंक में श्री नेमिनाथ का मोक्षकल्याणक का पगला तथा प्रतिमा
- सहसावन कल्याणकभूमि :
  (१) समवसरण मंदिर
  (२) प.पू.आ. हिमांशुसूरिजी म. की अंतिमसंस्कार भूमि
  (३) केवलज्ञान कल्याणक की प्राचीन देरी
  (४) दीक्षाकल्याणक की प्राचीन देरी

हे नेमिप्रभु ! आज आपके दर्शन-वंदन-पूजन से हम पावन बनें !

प्रभु ! आपके अनंत गुणों के अनंतवें भाग के गुणों का सद्भाग्य हमें प्राप्त हो !

हे समुद्रविजय कुलचंद ! हे माता शिवादेवी नंद !

ओ निष्कारणबंधु ! ओ निष्कारण वत्सल प्रभु !

ओ त्रिभुवनवल्लभ ! ओ सविजीव पालनहार प्रभु!

आपके अमूल्य आलंबन से हमारा कल्याण हो !

- जरासंघ की जराविद्या के शिकार बने सैन्य को जरा से मुक्त करने के लिए आप स्वयं समर्थ होने के बावजूद भी पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा के प्रक्षालन जल के छंटकाव से सैन्य को जागृत करने की सूचना कृष्ण को देनेवाले हे नेमिप्रभु! धन्य है आपकी निरासंशा को! धन्य है आपकी निःस्पृहता को ! प्रभु ! हममें भी इस निःस्पृहता गुण का अवतरण हो!
- जरासंघ के साथ युद्ध में तीन दिनों में खून की एक बूँद भी गिराए बिना शत्रु के सैन्य का शमन करनेवाले

हे नेमिप्रभु ! धन्य है आपकी अहिंसा को ! प्रभु ! हमें भी आपके इस अहिंसा पालन गुण की प्राप्ति हो !

- यदुकुलवंश सहित अनेक आत्माओं को तारनेवाले हे नेमिप्रभु ! हममें भी सभी को तारने की तमन्नावाले तारकता गुण का प्रगटीकरण हो !

प्रभु आपकी अमिदृष्टि से हमारी विभावदशा अंतर्धान हो ! स्वभावदशा का प्रादुर्भाव हो !

भवसमुद्र से उगारनेवाले ! तारनेवाले ! हे नेमिप्रभु ! आपके प्रभाव से अनादिकाल के भवभ्रमण की यह अंतिमयात्रा बनो !

आ भव मळीयाने परभव मळजो,
सेवा तमारी भवोभव मळजो;
शरणु आपनुं भवोभव मळजो,
दर्शन आपना अहनिश मळजो.

सहसावन जिनालय

दीक्षा कल्याणक देरी

केवलज्ञान कल्याणक देरी

गिरनार की महिमा न्यारी...

दीक्षाकेवलं निवृति कल्याणत्रिकमनंततीर्थकृतां।
युगपदथैकमभवन्, स जयति गिरनारगिरिराजः ॥ (श्री गिरनार महातीर्थकल्प-श्लोक-४)

जहाँ अनंते तीर्थंकर भगवंतों की दीक्षा, केवलज्ञान एवं मोक्ष इस प्रकार तीन कल्याणक एक साथ हुए है और अनंते तीर्थंकर का मोक्षकल्याणक हुआ है उस गिरनार गिरिराज की जय हो।

स्वर्भूभूवस्थ चैत्ये वस्याकारं सुरासुरनरेशाः।
सं पूजयन्ति सततं, स जयति गिरनार गिरिराजः ॥ (श्री गिरनार महातीर्थकल्प-श्लोक-५)

स्वर्गलोक, पाताललोक और मृत्युलोक के चैत्यों में सुर, असुर और राजाओं जिसके आकार को हंमेशा पूजते हैं उस गिरनार गिरिराज की जय हो।

अन्यस्था अपि भविनो, यद्ध्यानाद् घातिकर्ममलमुक्तः।
सेत्स्यंति भवचतुष्के, स जयति गिरनार गिरिराजः ॥ (श्री गिरनार महातीर्थकल्प-श्लोक-१९)

दूसरे स्थानों में स्थित (अर्थात् गिरनार से दूर घर-दुकान-देश-विदेश कोई भी स्थान में बसे हुए) जो भव्यजीव गिरनार का ध्यान धरते हैं वे जीव घातीकर्म का मल दूर करके चार भव में मोक्ष प्राप्त करते हैं, उस गिरनार गिरिराज की जय हो।

अन्यत्रापि स्थितः प्राणी, ध्यायन्नेनं गिरीश्वरम्।
आगामिनि भवे भावी, चतुर्थे किल केवली ॥ (वस्तुपाळचरित्र-प्रस्ताव-५, श्लोक-८५)

अन्य स्थान में (गिरनार के अलावा) रहे हुए जीव इस गिरनार गिरीश्वर का ध्यान धरे तो वह आगामी चार भव में केवलज्ञान पाकर मोक्षपद को प्राप्त करते हैं।

महातीर्थमिदं तेन, सर्वपापहरंस्मृतम्। शत्रुंजयगिरेरस्य, वन्दने सदृश फलम् ॥
विधिनास्य सुतीर्थस्य, सिद्धान्तोक्तेन भावतः। एकशोऽपिकृता यात्रा, दत्ते मुक्तिं भवान्तरात् ॥
(वस्तुपाळचरित्र-प्रस्ताव-५, श्लोक-८०/८१)

गिरनार की महिमा अनेरी होने से इस गिरिवर को सर्व पाप को हरण करनेवाला कहा गया है और शत्रुंजय एवं गिरनार को वंदन करने में दोनों का समान फल कहा गया है।

इस गिरनार महातीर्थ की शास्त्रानुसार भावपूर्वक एक भी यात्रा की जाए तो वह भवांतर में मुक्तिपद को देनेवाली बनती है।

गिरनार तीर्थ की साल में कम से कम एक यात्रा करने का संकल्प अवश्य करें।

Created by : Kirit B. Vadecha © 22737600 / 98200 73336